षष्ठ अध्याय

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष

षष्ठ अध्याय

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष

6.1 धार्मिक मूल्य

6.1.1 धार्मिक आस्था

6.1.2 सेवा भाव को धर्म समझना

6.1.3 धर्म में अंधविश्वास

6.2 सांस्कृतिक मूल्य

6.2.1 लोक परंपरा

6.2.2 परंपरागत सांस्कृतिक मूल्य

षष्ठ अध्याय

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष

धर्म जगत का सार है। जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति भिन्न-भिन्न पड़ावों में धार्मिक मान्यताओं को मानता है। धर्म वह मूल्य है जिससे प्रेरित होकर मनुष्य यह विचार करता है कि वह दूसरों के अधिकारों का अतिक्रमण न करें। "मानव जीवन के समस्त भौतिक मूल्यों को 'अर्थ' और 'काम' पुरुषार्थ के अंतर्गत तथा भौतिकेतर मूल्यों को 'मोक्ष' पुरुषार्थ के अंतर्गत स्थान दिया गया है। धर्म वह पुरुषार्थ है जो इलौकिक और पारलौकिक मूल्यों का संयोजक है।"[1] धर्म मनुष्य का मार्गदर्शन करता है। भारतीय संस्कृति में धर्म का विशेष महत्व है। यह संस्कृति के स्वरूप को निर्धारित करता है। विचारकों का मानना है कि ईश्वर ही परम निर्णायक है। वह मानव के प्रत्येक कृत्य के लिए उसे दंडित और पुरस्कृत भी करता है। इसीलिए मानवीय जीवन में ईश्वरीय अवधारणा का विशिष्ट महत्व है और इससे जुड़े अनेक रीति-रिवाज़ भी प्रचलित है। यही रीति-रिवाज़ मूल्यों के रूप में मान्य हो गए हैं। धार्मिक मूल्य धर्म रक्षा के लिए बनाए गए आचरण के मानदंड हैं। इसके अंतर्गत ईश्वरीय सत्ता में आस्था, विशिष्ट धर्मानुसार विधि अनुष्ठानों की व्यवस्था अपने धर्मानुसार व्रत आदि के मानदंड और मूल्य आते हैं। भारत का समाज अनेक वर्गों एवं वर्णों में बटा हुआ है। जिसमें रहकर व्यक्ति अपना विकास करता है। समाज में अनेक धर्म एवं संप्रदायों का अस्तित्व है जो विभिन्न संबंधों का निर्वाह करते हैं। भारत के समाज की अवधारणा धर्म के अनुसार ही चली आ रही है। जगदेव के अनुसार "भारतीय समाज वर्णों, वर्गों के आधार पर भी विभक्त है। समाज में रहने वाले सभी व्यक्तियों का अलग-अलग उल्लेख है। धर्म हमारे आचार-व्यवहार को नियंत्रित रखता है। धर्म यही कहता है कि किसी को सताना नहीं चाहिए। अगर कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो वह नरक में जाने के लिए मार्ग बना रहा है।”[2] भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है जिसके अनुसार भारत का कोई भी व्यक्ति किसी भी धर्म को अपना सकता है तथा उसे त्याग सकता है। इसके लिए भारत की सरकार भी आपको बाध्य नहीं कर सकती। आज के समाज में देखा जा रहा है कि धर्म के जो पुजारी, पादरी और मौलवी हैं, वही धर्म के माध्यम से एक-दूसरे

को भड़का रहे हैं। अपने धर्म को उच्च बताकर दूसरों के धर्म को नीच कहकर आदमी-आदमी के बीच भेद पैदा कर रहे हैं। सभी लोग अल्लाह, ईश्वर के नाम पर एक-दूसरे के शत्रु बनते जा रहे हैं। जिसके कारण धर्म का रूप मलिन और विकृत हो गया है। इसके साथ ही धर्म, अंधविश्वास, बाहरी आडंबर और ढोंग बन गया है। इस तरह मनुष्य ने जब जीवन के विषय में सोचना आरंभ किया तभी से पृथ्वी पर धर्म का बीज अंकुरित होने लगा है। मनुष्य ने सुखी जीवन व्यतीत करने के लिए असत्य, हिंसा आदि कामों का त्याग करना आवश्यक समझा है। इसी कारण अच्छा आचरण ही धर्म का आधार बना। अच्छे व्यवहार द्वारा ही हम अपने समाज को व्यवस्थित कर सकते हैं। इसीलिए प्रत्येक समाज में धर्म का होना ज़रूरी है। जहां पर व्यक्ति है वहां पर धर्म का कोई न कोई रूप अवश्य देखने को मिलता है।

6.1 धार्मिक मूल्य

धर्म का समाज में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है। धर्म ने समाज के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। इसी प्रकार व्यक्ति के जीवन की प्रत्येक क्रियाकलापों पर धर्म का नियंत्रण होता है। मनुष्य के जन्म, शिक्षा, व्यवहार, आपसी संपर्क आदि विभिन्न क्षेत्रों पर धर्म का प्रभाव रहता है। इसीलिए धार्मिक चिंतकों ने धर्म का संबंध आध्यात्मिकता के साथ जोड़ा है। धीरे-धीरे धर्म की भावना को पाखंडियों ने कर्मकांडों में बदल दिया। इसका उद्देश्य मानव कल्याण न होकर एक वर्ग विशेष के द्वारा आम लोगों का शोषण करने वाला धर्म बन गया। धर्म के कारण हो रहे शोषण और अत्याचारों से दुखी होकर महिपाल ने कहा "धर्म अच्छा है या नहीं, समाज में उसकी उपयोगिता है या नहीं, धर्म विहीन समाज या राजनीति अत्याचार को जन्म देगी या नहीं, मुख्य प्रश्न इस बात का है कि धर्म के नाम पर जिस प्रकार की शासन व्यवस्था अब तक चलाई गई है, आम आदमी को उससे कोई लाभ नहीं हुआ। इसके विपरीत हानि ही हुई।"[3] इस प्रकार कहने का भाव है कि धर्म के नाम पर लोग एक-दूसरे को ठगने लगे। धर्म के नाम पर राजनीति होने लगी। विश्व में किसी भी धर्म की स्थिति और सत्ता हमेशा एक-जैसी नहीं रही है। बदलती हुई धार्मिक परिस्थितियों के कारण धर्म का स्वरूप भी बदलता चला गया है। धर्म के साथ अंधविश्वास, खोखले रीति-रिवाज़

जोड़कर धर्म को शोषित करने वाला बना दिया है। इसी कारण संसार के विविध क्षेत्रों में धर्म के नाम पर अनेक अमानवीय अत्याचार किए गए। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास साहित्य में धार्मिक मूल्य के विकास तथा विघटन दोनों पक्षों की चर्चा की है। लेखिका ने अपने उपन्यास साहित्य में पात्रों द्वारा धर्म का जीवन में विशेष महत्व दिखाया है। उनके उपन्यासों में तंत्र-मंत्र आदि का वर्णन प्रस्तुत किया है। पात्र अपने कार्य सिद्धि के लिए व्रत तथा तंत्र-मंत्र का भी सहारा लेते हुए दिखाए गए हैं। इस तरह इनके उपन्यास साहित्य में धर्म की अभिव्यक्ति प्रत्येक स्थान पर पाई गई है चाहे वह नकारात्मक रूप में हो या सकारात्मक रूप में। उपन्यास के पात्रों का प्रत्येक विचार और रीति धर्म पर आधारित है। दुर्खीम ने लिखा है "धर्म पवित्र वस्तु से संबंधित विश्वास या कर्मकांड की एक संगठित व्यवस्था है जो उन व्यक्तियों को एकल नैतिक समुदाय में बांधता है जो इसका अनुसरण करते हैं।"[4] भारत एक धर्म प्रधान देश है जिसके कारण यहां पर प्रत्येक रिश्तो की अपनी मर्यादाएं हैं, जिनका पालन करना प्रत्येक व्यक्ति अपना कर्तव्य समझता है। यही कर्तव्य हमारे धर्म के साथ जुड़ जाता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने धर्म के अनुसार ही कार्य करने को बढ़ावा देता देखा जा सकता है। इस तरह अपने धर्म के विरुद्ध कार्य करना धार्मिक मूल्य बोध के अंतर्गत विघटन को दर्शाता है। मूल्य बोध की यही दशाएं विवेच्य उपन्यास साहित्य में देखने के लिए इसका विस्तारपूर्वक अध्ययन करना जरूरी है जिसका वर्णन किया गया है।

6.1.1 धार्मिक आस्था

'बेतवा बहती रही' उपन्यास में ईश्वर पर परम आस्था का दृश्य देखने को मिलता है। उपन्यास की नायिका उर्वशी का विवाह होता है, जिसमें गांव की सभी स्त्रियां शामिल होती हैं। इन गांव की स्त्रियों का विश्वास है कि शादी से पहले अर्थात विदाई होने के समय लड़की अपनी सभी गलतियों के लिए एक बार बेतवा मैया से क्षमा मांग ले। "अरपन कर दो बिन्नू, बेतवा को और विनती कर लो कि ओ बेतवा मइया, मेरी दोस- गलती छिमा करियो।"[5] उपन्यास में उर्वशी की विदाई के समय सभी स्त्रियां इकट्ठे होकर गंगा मां की पूजा उर्वशी से करवाती हैं। उर्वशी के घर के पास बेतवा नाम की नदी है, जिसे उर्वशी द्वारा

पूजा जाता है तथा अपने द्वारा किए गए दोषों को क्षमा करने को बोला जाता है। इस तरह उपन्यास में धर्म की महत्ता को दर्शाया है। उर्वशी शादी में विदाई से पहले अपने बेतवा मां को प्रणाम करती है तथा अपने द्वारा हुई भूल-चूक के लिए क्षमा मांगती है। भारतीय इतिहास में प्राचीन समय से ही नदी को तीर्थ स्थल के रूप में माना जाता है। उर्वशी द्वारा गंगा मां की पूजा धर्म में विश्वास आस्था को व्यक्त करती है। उर्वशी के इसी विश्वास को धार्मिक मूल्य के अंतर्गत रखा जा सकता है। इस तरह उर्वशी विदाई होने से पहले अपने मायके के देवी-देवता को मनाती है ताकि उसे ससुराल में जाकर किसी भी देवी-देवता के प्रकोप को सहन न करना पड़े। उर्वशी के द्वारा यह ईश्वरीय प्रार्थना उसके मायके में भाई-भतीजे की रक्षा के लिए भी करवाई जाती है। उर्वशी बेतवा मैया से इसी गांव में फिर से जन्म लेने की प्रार्थना करती है। इसी गांव की बेटी बनकर यहीं आने को मैया से कहती है। इस तरह लेखिका ने उपन्यास के पात्रों के माध्यम से भारतीय लोगों की धार्मिक आस्था को व्यक्त किया है। इसी तरह की आस्था कहानीकार शैलेंद्र सागर की मुख्य कहानी 'ब्रंच' में देखने को मिलती है। बाबा ईश्वर में परम आस्था रखते हैं। भोजन करने से पहले ईश्वर का स्मरण अवश्य करते हैं। "उन्होंने भगवान को भोग लगाया है, जल की कुछ बूंदें थाली के चारों ओर डाली हैं और हाथ जोड़कर 'हरिओम' बुद्बुदातें हुए पहला कोर तोड़ा है।"[6] वे अपने बेटे-बहू और पोते से भी ईश्वर की पूजा अर्चना करने को कहते हैं। बाबा का यही ईश्वर में विश्वास भक्ति और आस्था धार्मिक मूल्य कहे गए हैं। कहानी में लेखक ने भारतीय संस्कृति में धार्मिक मूल्यों के अंतर्गत ईश्वरीय आस्था को व्यक्त किया है। मानव संस्कृति में धर्म का विशेष महत्व है। धर्म ही मनुष्य को आदर्श बनाता है। इसी तरह हिंदू धर्म में गंगा के धार्मिक महत्व को उजागर किया है। वर्तमान समय में भी विवाह के समय लड़के अथवा लड़की द्वारा इसी तरह अपने देवी-देवताओं की पूजा की जाती है ताकि वैवाहिक जीवन में कोई भी व्यवधान पैदा न हो। कहने का अभिप्राय है कि आज के समय में भी व्यक्ति के जीवन में धर्म पर इतना ही विश्वास है, जितना कि उपन्यास में लेखिका ने स्पष्ट किया है। कोई भी कार्य धर्म को मध्य रखकर ही किया जाता रहा है तथा धार्मिक मूल्यों के विकास पर भी बल दिया गया है। उर्वशी विदाई के बाद ससुराल चली जाती है,

वहां पर गांव तथा परिवार की सभी औरतें फिर से इकट्ठी होती हैं। उर्वशी तथा सर्वदमन के मिलने से पहले उन दोनों से अनेक देवी-देवताओं की पूजा करवाई जाती है। बिना देवी-देवताओं की पूजा किए बिना ये दोनों साथ में नहीं रह सकते। "पहले इतर-पितर, दई- देवता खुस करो तबही तो...।"[7] उर्वशी ससुराल में अपने पितरों की पूजा करती है। उर्वशी तथा सर्वदमन को लेकर माता के मंदिर ले जाया जाता है। इसके बाद दोनों को शंकर भगवान की पूजा के लिए कहा जाता है। उपन्यास में विभिन्न देवी-देवताओं की पूजा करते हुए दिखाया गया है। उपन्यास में ईश्वर के बिना किसी भी काम को संपन्न नहीं माना जाता है। प्रत्येक काम में ईश्वर स्तुति को महत्वपूर्ण माना गया है। विवाह के बाद तथा पहले धर्म का एक विशेष रूप दिखाया गया है। धर्म के अनुसार सभी कार्य संपन्न किए जाते हैं। देवी-देवताओं की पूजा करने का एक ही उद्देश्य रहता है कि मंगलकामना करना। प्राचीन समय से भारतीय संस्कारों में धर्म का विशेष स्थान है। विशेषतः हिंदू समाज में उर्वशी एक हिंदू समाज से संबंध रखती है, तभी तो वह विविध देवी-देवताओं की पूजा करती दिखाई गई है। उर्वशी का ईश्वर में अटूट विश्वास है। इस प्रकार धार्मिक विश्वास का आधार का अज्ञान नहीं, ज्ञान होना चाहिए। उपन्यास में गांव की औरतें एक-दूसरे को कहकर सभी देवताओं की पूजा करवा देती हैं तथा अपने-अपने घर लौट जाती हैं। यहां ज्ञान के आधार पर ही औरतें अपने धर्म का पालन करती हैं। यहां पर धर्म के प्रति भावना, विश्वास, आस्था से भरे परिवेश का वर्णन मिलता है। मनुष्य चाहे दुख में हो चाहे सुख में हर हालत में ईश्वर को याद करता है। इन्होंने ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया है। धर्म को सामाजिक संबंधों से जोड़ दिया गया है। लेखिका ने विवाह के संस्कार का वर्णन करते हुए धर्म के महत्व को बताया है। धर्म व्यक्ति को समाज से अलग नहीं होने देगा। धर्म तो हिंदू समाज में व्यक्ति को किसी न किसी रूप में अवश्य प्रभावित करता है। वर्तमान समय में भी विवाह के दौरान लड़की के ससुराल आने पर अनेकों देवताओं की पूजा की जाती है। भारतीय हिंदू समाज में जैसे वर-वधू दोनों पीपल की पूजा के लिए जाते हैं, जिसमें परिवार के सदस्य तथा गांव के लोग भी शामिल होते हैं। यह धर्म के अनुसार ही किया जाता है। जिससे स्पष्ट होता है कि लोग आज भी अपने जीवन में धर्म को प्रमुखता देते हैं। इस प्रकार लेखिका के उपन्यास तथा

वर्तमान युग में काफी साम्यता देखने को मिलती है। जिसे देखकर हम यह नहीं कह सकते कि वर्तमान समय अपने परंपरा को नहीं भूला है। व्यक्ति चाहे शहर में रहता हो या गांव में अपने धर्म को महत्व देता आज भी देखा जा सकता है। इस प्रकार लेखिका के उपन्यास में धार्मिक मूल्य विकास की स्थिति देखने को मिलती है। अभी तक ऐसा कोई भी तथ्य सामने नहीं आया जोकि धार्मिक मूल्य विघटन का उदाहरण प्रस्तुत करे। उपन्यास में योगेंद्र का इम्तिहान होता है, वह रात-रात तक पढ़ाई करता है। योगेंद्र, उर्वशी का सौतेला बेटा है लेकिन फिर भी उर्वशी योगेंद्र का बहुत ख्याल रखती है। पूरी रात योगेंद्र को चाय बना-बना कर पिलाती है ताकि उसे नींद न आ जाए तथा वह अच्छे से पढ़ाई कर सकें। "जै मेरी तुलसी मइया, योगेंद्र को खूब अच्छे नंबर से पास करिओ।"[8] उर्वशी सुबह-सुबह उठ कर नहा धोकर तुलसी मां को पानी चढ़ाते समय प्रार्थना करती है कि योगेंद्र को अच्छे नंबरों से पास करवा देना। यहां पर भारतीय संस्कृति का परिचय मिलता है। यह गुण भारतीय लोगों में आज भी विद्यमान है। किसी भी काम की शुरुआत करने से पहले भगवान से प्रार्थना करते हैं तथा बाद में भगवान को धन्यवाद ज्ञापित करते हैं। इस तरह उपन्यास में उर्वशी ने भी योगेंद्र के अच्छे इम्तिहान होने के लिए तथा अच्छे नंबर आने के लिए भी माता से प्रार्थना की। यहां पर उर्वशी के धार्मिक विश्वास या आस्था का चित्रण मिलता है। उसे भगवान पर विश्वास है कि वे प्रार्थना को अवश्य स्वीकार करेंगे। भारतीय लोग इसी धार्मिक आस्था के अनुसार जीवन व्यतीत करते हैं। वह ईश्वरीय भक्ति के बिना किसी भी कार्य को सफल नहीं मानते हैं। उनका मानना है कि ईश्वरीय आशीर्वाद के बिना हम किसी भी कार्य को उन्नति के पथ पर नहीं पहुंचा सकते हैं। इस उपन्यास के पात्र भी धार्मिक आस्था के हैं। वर्तमान समय में भी भारतीय लोग ईश्वर की भक्ति में लीन रहना ही सर्वसुख समझते हैं। आज भी कोई भी व्यक्ति किसी भी कार्य करने को घर से बाहर जाता है, तो मां-बाप या अन्य परिवार के सदस्य उसके लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वह जिस भी कार्य के लिए गया है, उसके इस कार्य को पूर्ण करना तथा कोई भी विघ्न मत डालना। यह एक परंपरागत धार्मिक मूल्य के अंतर्गत भी आता है। भारतीय लोग अपने धार्मिक मान्यता को नहीं भूलना चाहते हैं। इस तरह उपन्यास में उर्वशी एक

सौतेली मां है फिर भी वह योगेंद्र के अच्छे भविष्य की कामना करती है। इस तरह उर्वशी की यही आस्था, विश्वास धार्मिक मूल्यों के विकास का तथ्य है। लेखिका के उपन्यास में धार्मिक मूल्य विघटन का चित्रण नहीं मिला है। पात्रों के द्वारा भगवान की पूजा का ही विवरण है। प्रत्येक कार्य के आरंभ तथा अंत में पात्र भगवान का नाम लेते देखे जा सकते हैं। लेखिका ने स्पष्ट किया है कि अगर ऐसी ही ईश्वरीय श्रद्धा व्यक्ति में होगी तो धार्मिक मूल्य विघटन नहीं हो सकता है। उपन्यास में ऐसा कोई भी पात्र सामने नहीं आया है कि वह धर्म विकृति उत्पन्न करें। प्रत्येक पात्र अपने-अपने ढंग से इश्वरीय भक्ति में लीन है। भारतीय हिंदू समाज में आज भी ऐसी ही धार्मिक आस्था देखी जा सकती है, जहां पर मंदिरों का निर्माण हुआ है। यहां तक किसी भी धर्म की बात करें, सबमें अपने-अपने धर्म को विकसित करने की लालसा रहती है। विशेषत: एक ही धर्म की मान्यताओं का वर्णन किया गया है। हिंदू देवी-देवताओं की पूजा पद्धति देखने को मिली है, चाहे वह विवाह संस्कार के पहले या बाद की हो या भविष्य की मंगल कामना हो सभी दृष्टि से धार्मिक मूल्य विकसित होते ही नज़र आए हैं।

'इदन्नमम' शीर्षक उपन्यास में बऊ तथा मंदा अपने गांव को छोड़कर किसी दूसरे गांव में आई हैं। गांव शयामली में रहना बऊ की एक मज़बूरी होती है क्योंकि बऊ अपनी तथा अपनी पोती मंदा की सुरक्षा के लिए किसी पराए गांव में आकर रहती है। बऊ का ईश्वर पर अटूट विश्वास है। "भगवान कटवाएगा अब। सब उसी परमेसूर के ऊपर छोड़ा है।"[9] बऊ श्यामली आ जाती है। वहां के लोगों के सामने अपने धैर्य को बनाए रखती है। वह हिम्मत नहीं हारती है। बऊ को भगवान पर पूर्ण भरोसा है कि भगवान एक दिन सब अच्छा करेगा तथा वह अपने घर वापस लौट जाएगी। बऊ तथा मंदा अपने घर तथा खेतों को छोड़कर आई होती हैं, जिसके कारण मंदा बहुत से ऐसे प्रश्न पूछती है कि हमारे खेत में जो अनाज उगा है उसे कौन काटेगा? तभी बहू उसे उत्तर देती है कि अब भगवान ही काटने वाला है क्योंकि बऊ तथा मंदा तो श्यामली में पंचमसिंह दादा के घर में रहती हैं। मंदा को बऊ की बात समझ में नहीं आती क्योंकि मंदा एक छोटी बच्ची है। इस तरह इन दोनों के वार्तालाप से धर्म के प्रति निष्ठा का चित्रण देखने को मिलता है। यह सब भगवान आदि की बातें मंदा की समझ से परे

होती हैं। इस उपन्यास में पात्रों के माध्यम से दिखाया है कि जब इंसान सब जगह से स्वयं को हारा हुआ अनुभव करता है तो भगवान का द्वार ही एक ऐसा है, जहां पर व्यक्ति का धैर्य दृढ़ होता है। मंदा, बऊ को रामचरितमानस सुनाती है। वह बऊ को गिरने नहीं देना चाहती इसीलिए गांव के अन्य लोग तथा गनपत काका भी सुनने के लिए आते हैं।

"बांधा सेतु नील नल नागर। राम कृपा जसु भयऊ उजागर।
बांधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा। देखी कृपानिधि के मन भावा।।"[10]

मंदा, बऊ को रामचरितमानस में आए राम भगवान की विपत्ति का दोहा सुनाती है कि वह तो भगवान थे, उन पर भी मुश्किलें आई थीं। हम तो एक साधारण मानव जाति के प्राणी हैं, विपत्तियों से घबराना नहीं चाहिए बल्कि उनका दृढ़ता से सामना करना चाहिए। भगवान राम ने सीता को लाने के लिए भी बांध बनाया था, उन्हें भी उस समय शक्ति की पूजा करनी पड़ी थी। उन्होंने भी भगवान पर विश्वास रखा था तथा सीता को वापिस लाने का संकल्प मन में लिया था। सभी लोगों की सहायता से पुल बांध लिया जाता है तथा जिसे देखकर भगवान राम बहुत प्रसन्न होते हैं। इस तरह मंदा के कहने का भाव है कि विपत्तियां तो सबके ऊपर आती हैं, विपत्तियों से घबराना नहीं चाहिए बल्कि भगवान पर विश्वास करके कार्य को सफल बनाने पर अडिग रहना चाहिए। इस दोहे को सुनकर बऊ रोने लगती है। मंदा, बऊ को कहती है कि मेरा इस दोहे को सुनाने का यही उद्देश्य था कि तुम भी भगवान राम की तरह दृढ़ बनो। इस तरह उपन्यास में लेखिका ने इश्वरीय आस्था को प्रकट किया है। भगवान पर विश्वास होना चाहिए, भगवान पर विश्वास करने वाला व्यक्ति कभी हारता नहीं बल्कि उसके हिम्मत को भगवान दृढ़ करता है। उपन्यास में विकसित धार्मिक मूल्यों का वर्णन किया गया है। व्यक्ति की धार्मिक आस्था तथा विश्वास धार्मिक मूल्य विकास को बढ़ावा देते हैं। उपन्यास में मुस्लिम धर्म के नियमों की चर्चा हुई है। उपन्यास के एक पात्र चीफ़ काका गांव में आए हैं, चीफ़ काका बऊ की सहायता के लिए उसे सलाह देते हैं। बऊ को कोर्ट जाना है लेकिन उसे खतरे में कैसे ले जाया जाए इसीलिए चीफ़ काका के लिए खाना भी कुसुमा के घर से ही ले जाया जाता है। कुसमा खाना ले गई तथा फिर याद आया कि चीफ़ काका ने तो अभी तक नमाज़ भी नहीं पढ़ी है। "और लो, हमारी बुद्धि को

देखो, इत्तेक ख्याल नहीं किया कि चीफ़ साब बिना नियाज पढें खाना नहीं खाएंगे ?"[11] चीफ़ काका पहले नमाज पढ़ते हैं, उसके बाद खाना ग्रहण करते हैं। इस तरह उपन्यास में मुस्लिम व्यक्ति की धर्म पर आस्था की चर्चा की गई है। भारत में चाहे किसी भी धर्म का कोई भी व्यक्ति हो वह अपने धर्म के प्रति एक आस्था रखता है। चीफ़ काका ने कुल्ला किया फिर उसके बाद नमाज़ पढ़ीं तथा उसके उपरांत खाना खाया। लेखिका ने चीफ़ काका की धार्मिक निष्ठा बताई है। मंदा तथा मकरंद का रिश्ता तय होता है, जिसमें सभी गांव तथा परिवार के लोग शामिल होते हैं। बऊ, मंदा के अच्छे भविष्य के लिए भगवान से प्रार्थना करती है। बऊ आटे चौमुख दीया बनाकर लाती है, दीया में घी तथा बाती जलाती है, दोनों आंखें मूंद लेती है। "हे मेरे पिरभू, मेरे ठाकुर जू, मोरे देहरे बच्चा और कुल के इतर पितर मंदा और मकरंद की जिंदगानी में हमेस चारों दिशाएं ऐसे ही उजयाली रहें।"[12] दोनों के लिए भगवान से प्रार्थना करती है। अपने पितरों से भी विनती करती है। बऊ ने जो घी का दीपक जलाया है, उसी की तरह इन दोनों के जीवन में उजाला रहे। मंदा के लिए बहुत चिंतित है। वह चाहती है जैसा अंधेरा मंदा के जीवन में अभी छाया हुआ है, वैसा अंधेरा इसके जीवन से आगे दूर हो जाए। इसके ऊपर के सभी दुख दर्द नष्ट हो जाये। इस उपन्यास में लेखिका ने ईश्वर पर विश्वास को दिखाया है इसीलिए तो ईश्वर से प्रार्थना करती है। वर्तमान समय में भी लोगों में अपने धर्म के प्रति गहरी आस्था देखने को मिलती है। व्यक्ति कोई भी कार्य भगवान के नाम से करना शुभ मानता है। भारतीय तथा पश्चिमी सभ्यता में यही एक गहरा अंतर देखने को मिलता है। भारतीय लोग भगवान को खाते-पीते तक भी याद करते हैं। यहां पहले भगवान का भजन सिमरन किया जाता है तथा इसके उपरांत काम किए जाते हैं। उपन्यास में लोगों की आस्तिकता का वर्णन किया गया है। लेखिका के उपन्यास में कहीं भी नास्तिक पात्र नज़र नहीं आता है। सभी पात्र ईश्वर की कृपा दृष्टि बनाए रखने के लिए पूजा पाठ करते हैं। इसी तरह कहीं भी कोई पात्र एक-दूसरे के धर्म को हीन भावना से देखता नहीं दिखाया गया है। प्रत्येक व्यक्ति की अपने जीवन में धर्म की विशेष प्रधानता है जैसे बऊ तथा चीफ़ काका दोनों विभिन्न धर्मों से संबंध रखते हैं लेकिन दोनों में एक-दूसरे के प्रति कोई कटाक्ष नहीं देखा जा सकता है। इन दोनों में एक-दूसरे के प्रति प्रेम, सहानुभूति तथा मेल की भावना देखने को

मिलती है। मंदा तथा मकरंद की सगाई में पूजा के लिए पंडित को भी बुलाया जाता है। पंडित मंत्रों का उच्चारण करता है। गणपति की वंदना की जाती है। पुजारी को पूजा करवाने के लिए एक सफेद चादर पर गद्दी बिछाकर बिठाया जाता है।

"मंगलम् भगवान विष्णु मंगलम् गरुड़ ध्वजा:।
मंगलम् पुंडरीकाक्ष, मंगलाय तनो हरि:।।[13]

पुजारी गणपति भगवान पर रोली अक्षत चढाते हुए मंत्रों का उच्चारण करते है। इस तरह उपन्यास में गणपति का पूजन किया जाता है कि कार्य में कोई विघ्न-बाधा न आए। हिंदू समाज मैं यह एक धार्मिक मान्यता है कि सबसे पहले भगवान गणपति की पूजा की जाती है। सभी भगवान अर्थात देवी देवताओं को छोड़कर गणेश की वंदना सर्वप्रथम की जाती है। भगवान विष्णु की पूजा के लिए मंत्रों का उच्चारण किया जाता है ताकि भगवान विष्णु को प्रसन्न किया जा सके। भगवान विष्णु से प्रार्थना की जाती है कि वह हमारे साथ सदा मंगल करें। कोई भी अनहोनी घटित न हो। इस तरह मंदा तथा मकरंद की सगाई भगवान का सिमरन करते हुए संपन्न होती है। आज के युग में भी किसी भी शुभ कार्य करने से पहले इस मंत्र का उच्चारण अवश्य किया जाता है। आज भी पंडितों द्वारा यह मंत्र उच्चरित किया जाता है। यह धार्मिक मान्यता आज भी प्रचलित समाज में देखी जा सकती है। लेखिका ने भी इस उपन्यास के माध्यम से धार्मिक मंत्रों के महत्व पर प्रकाश डाला है। उपन्यास में भी धार्मिक मूल्य विकास को प्रसारित किया गया है।

बऊ जब अपने गांव वापिस आती है तो देखती है कि उसकी खेती पर किसी अन्य लोगों ने कब्जा कर लिया है। यह देखकर बऊ अत्यंत ही दुखी होती है। मंदा, बऊ को भगवान की कथाएं सुनाकर हिम्मत बांधने को कहती है। वह भगवान के नाम का सिमरन करके सब कुछ भूल कर नई शुरूआत करना चाहती है। बऊ नहा धोकर आ जाती है तथा जल और पैसे चढ़ा कर बैठ जाती है और मंदा को बोलती है कि कोई ऐसी चौपाई सुनाना जिससे मुझे भगवान हिम्मत तथा संतोष का वरदान दें।

"जामवंत कहं सुनि हनुमंता। का चुप साधि रहे बलवता।।
कौन सा काम कठिन जग माहि। जो नहीं होय तात तुम पाही।।"[14]

मंदाकिनी सुनाती है कि जब राम पर विपत्ति आई थी तो उनका वानरों ने साथ दिया था तथा राम को धैर्य बंधाया था। जामवंत हनुमान से कहते हैं कि चुप रहने से कष्ट दूर नहीं होंगे। कोई भी काम संसार में कठिन नहीं है जो काम हनुमान आप नहीं कर सकते हैं। इस तरह मंदा, बऊ को कहती हैं कि हमारे खेतों को छीन लिया तो हमें चुप नहीं रहना चाहिए बल्कि न्याय के लिए लड़ना चाहिए। चुप रहना किसी भी समस्या का समाधान नहीं होता है। इस तरह लेखिका ने उपन्यास में धर्म के उस रूप को दिखाया है कि जो व्यक्ति को अन्याय के लिए लड़ना सिखाता है। इस तरह धर्म का जीवन में महत्व व्यक्ति को अत्याचारों से बचाता हुआ दिखाया है। इसलिए वर्तमान में भी व्यक्ति अपने धर्म को मान्यता देता है ताकि उसके साथ कोई अन्याय न कर सके। धर्म में ऐसी कई कथाएं हैं जो व्यक्ति को हिम्मत देती हैं जैसे चौपाई को सुनकर बऊ को हिम्मत आती है। इसी उपन्यास में रतन यादव नाम का पुरुष पात्र है जिसने धोखे से मंदा की मां प्रेम को भगा लिया है तथा जो ज़मीन प्रैम के नाम थी, उसे भी हड़प लिया। बाद में प्रैम को ज्ञात होता है कि यह सब रत्न यादव ने ज़मीन हड़पने के लिए ही किया था। उसे प्रैम से कोई हमदर्दी व प्यार नहीं था। "हम तो कहते हैं कि हे मेरे महादेव, मोरी महामाई, तुम सबसे बड़े देउता हो। सबके ऊपर। सबको एक आंख से हेरने वाले। जैसा फल उसको दिया है, वैसा हर राच्छत को देना।"[15] प्रैम को जब रतन यादव के धोखे का पता चलता है तो वह भगवान को धन्यवाद ज्ञापित करती है। इस उपन्यास में बताया है कि भगवान से बड़ा कोई नहीं है, भगवान सब देखते हैं कि कौन अच्छा करता है तथा कौन बुरा? रतन यादव ने ज़मीन के लिए अपने भाई-भतीजे से भी ऐसा ही छल किया है। जब उन्हें समझ आती है तो वह रतन यादव से अपने हिस्से की ज़मीन अलग करने को कहते हैं। जिसमें रतन यादव ने हिस्सा देने के लिए इंकार किया। जिसके कारण उनमें लड़ाई-झगड़ा हो जाता है तथा रतन यादव की टांगों में गोली मार दी जाती है, तत्पश्चात अस्पताल ले जाने पर डॉक्टरों ने उसकी दोनों टांगे काट दी। इस तरह उपन्यास में लेखिका ने बुरे कर्मों का बुरा ही नतीजा बताया है। भगवान के घर देर हो सकती है लेकिन अंधेर नहीं। व्यक्ति

को अपने कर्मों के अनुसार फल अवश्य मिलता है। रतन यादव सिंह को भगवान ने एक भयंकर सजा दी है इसीलिए प्रैम की भगवान पर आस्था, विश्वास उसे हिम्मत देते रहे हैं। जिसके कारण यह रत्न यादव के अत्याचारों को झेलते हुए भी एक दिन अपनी बेटी मंदा के पास पहुंच जाती है। इस तरह लेखिका ने बताया है कि भगवान पर विश्वास रखने वाला व्यक्ति कभी मार्ग नहीं भटक सकता। हमेशा ईश्वर पर आस्था रखनी चाहिए। एक दिन दुखों का विनाश अवश्य हो जाता है तथा सुख आपके दरवाजे पर दस्तक देते हैं। भगवान पर विश्वास रखने वाले एक दिन सत्य को स्थापित करके ही रहते हैं। उपन्यास में प्रैम, रतन यादव के बनाए जाल से निकल कर एक दिन अपने घर पहुंच जाती है। रतन यादव को उसके किए की सजा भी मिल जाती है। वर्तमान युग में भी व्यक्ति की ईश्वरीय आस्था में कोई विशेष अंतर नहीं आया है। आज व्यक्ति कितने भी तकनीकी युग में रहता है लेकिन उसका ईश्वर पर विश्वास बना हुआ है। व्यक्ति की धार्मिक मान्यता उपन्यास के पात्रों से ही मिलती-जुलती हैं। व्यक्ति की ऐसी धार्मिक मान्यताएं ही धार्मिक मूल्य विकास के लिए सहायक सिद्ध हुई हैं। कोई भी व्यक्ति धार्मिक अनास्था में विश्वास नहीं रखता है। धर्म की प्रधानता को अपने जीवन में जोडे रखना ही मूल्य विकास के लिए सहायक होता है। कहने का भाव है कि व्यक्ति को अपने धर्म के अनुसार कार्य करने चाहिए ताकि उसे आगे जाकर बुरे कर्मों का फल न भुगतना पड़े। धर्म ही हमें बताता है कि यह कार्य उचित है या अनुचित। अनुचित कार्य ही व्यक्ति को धर्म तथा पापी बनाते हैं।

'चाक' शीर्षक उपन्यास में रंजीत एक पढ़ा-लिखा पात्र है। उसे एक गुणवती पत्नी के रूप में सारंग जैसी जीवन साथी मिली है। पूरे गांव में सारंग की प्रशंसा होती है। सभी गांव वाले रंजीत के भाग्य पर चर्चा करते हैं। “रंजीत का माथा चौड़ा है, उसका मुकद्दर बली हैं। तभी तो गांव के देवता दयालु है और कुलदेवी की मेहर है।"[16] सभी गांव वाले कहते हैं कि रंजीत पर देवता मेहरबान है तथा कुलदेवी की भी कृपा है, जिसके कारण उसे सारंग जैसी तेज की धनी स्त्री मिली है। ऐसी पत्नी सबकी किस्मत में नहीं होती है। रंजीत भी मन ही मन इस बात की बहुत कदर करता है। उपन्यास में लेखिका ने भगवान की असीम कृपा की बात की चर्चा की है। हिंदू धर्म में भगवान की आस्था पर लोगों का विश्वास है। उपन्यास में

लोगों का मानना है कि ईश्वर की असीम कृपा से ही रंजीत को इतने गुणों वाली पत्नी मिली है। रंजीत का वैवाहिक जीवन तो सुख में चल रहा होता है लेकिन उसे इतने पढ़ने-लिखने के बावजूद नौकरी नहीं मिली। वह बहुत कोशिश करता है लेकिन कहीं कोई बात नहीं बन रही थी। इसीलिए अब रंजीत ने मन बनाया कि वह मछलीखाना खोलेगा, उसने सारंग से बातचीत की लेकिन सारंग ने उसे ऐसा करने से इंकार कर दिया। "पितर भी पानी नहीं पिएंगे, ऐसी औलाद के हाथ का।"[17] सारंग ने रंजीत को समझाया कि हमारे गांव में लोग प्याज तथा अंडे छिपकर खाते हैं तथा तुम मछली खाना खोलने की बात करते हो? ऐसा करने से गांव वाले लोग हमसे नाता तोड़ देंगे। गांव वाले तो रहे एक तरफ लेकिन भगवान भी हमें माफ नहीं करेंगा। हमारे पीतर भी हमारे हाथ का प्रसाद, पानी तक ग्रहण नहीं करेंगे। इस तरह उपन्यास में रोज़गार कमाने के लिए रंजीत मछली पालन का काम शुरू करना चाहता है जोकि धर्म के अनुसार गलत है। सारंग अपने धर्म को प्रमुखता देते हुए दिखाई गई है। सारंग ने यहां पर अपनी चर्चा द्वारा धर्म की महत्ता पर प्रकाश डाला है। व्यक्ति अपने जीवन में धर्म के अनुसार ही जीना चाहता है। भारतीय समाज अगर अपने धर्म से अलग होकर कार्य करता है तो उसको समाज अपने से अलग कर देता है क्योंकि उसने धर्म के विरुद्ध कार्य किया है। इसीलिए धर्म के अनुसार समाज में रहना तथा काम करना धार्मिक मूल्य विकास के अंतर्गत आता है। वर्तमान समय में भी मनुष्य जिस समाज, समुदाय में रहता है उसी के अनुसार जीवन निर्वाह करता है। यह धर्म प्रचार का सूचक होता है। आज के समाज में कई लोगों में तो धर्म प्रमुखता इतनी है कि धर्म के लिए बलिदान भी दे देते हैं। भारतीय समाज में ऐसे कई प्राचीन समय के उदाहरण भी विद्यमान हैं जैसे शहीद भगत सिंह। जिन्होंने अपने देश को आज़ाद करवाने के लिए अनेक कष्ट सहें हैं लेकिन अपने सिख धर्म को आंच नहीं लगने दी। ऐसे ही पंजाब के गुरु गोविंद सिंह ने अपने पांच बेटों को शहीद करवा दिया था। यह सब धर्म की प्रमुखता के लिए किया था लेकिन धर्म को परिवर्तित नहीं किया। इस तरह उपन्यास के उदाहरण भी भारतीय धार्मिक मूल्य विकास के लिए सहयोगी सिद्ध हुए हैं। उपन्यास में सारंग अपने बेटे चंदन के लिए परेशान है। रंजीत, चंदन को पढ़ने के लिए अपने बड़े भाई के पास भेजना चाहता है क्योंकि गांव में दुश्मनी होने के कारण सारा खतरा चंदन पर मंडरा रहा है।

जिसके डर से चंदन को गांव से बाहर भेजना चाहिए, घर में ऐसा विचार विमर्श किया जाता है। "ओ देवी मइया ! इस गांव के देव पितरो। तुम्हारे पास चंदन की रक्षा की कोई असीम हो तो आज बरसा दो। जीवन भर कुछ ना मांगुगी। ओ मेरे मियामसानी...जीहरपीर...।[18] सारंग अपने बेटे चंदन को शहर नहीं भेजना चाहती है लेकिन उनके दुश्मनों ने सारंग के बछड़े को मार दिया है। यह कार्य करके उन्होंने चंदन के लिए चेतावनी दी है। इस कारनामे को देखकर परिवार के सदस्य घबरा जाते हैं। सारंग ऐसी मुश्किल की घड़ी में ईश्वर को याद करती है तथा माता, देव पितरों से चंदन की रक्षा के लिए प्रार्थना करती है। इसी तरह उपन्यास में भगवान की असीम कृपा पर भी चर्चा हुई है। जब व्यक्ति अत्यंत दुखी होता है तो उसे भगवान के सिवाय कोई अपना नहीं लगता उपन्यास में इसी तरह सारंग अपने बेटे की रक्षा के लिए अपने पितरों को याद करती है। उपन्यास में हिंदू धर्म के अनुसार एक भगत के व्यथित हृदय की बात की गई है। हिंदू धर्म में ईश्वर व्यक्ति की प्रत्येक समय मदद करने के लिए तैयार रहता है। इसी धारणा को लेकर व्यक्ति आज भी आस्तिक है। व्यक्ति की यही आस्तिकता, ईश्वरीय प्रेम धार्मिक मूल्य हैं। उपन्यास में सारंग ने चंदन को न भेजने के लिए सब रास्ते अपनाए लेकिन कहीं भी उसे सफलता नहीं मिली। इसीलिए सारंग ने अपने देवी-देवताओं से मन ही मन प्रार्थना की ताकि उसकी मुश्किलें दूर हो जायें। इस प्रकार लेखिका ने पात्रों के माध्यम से पारिवारिक जीवन में धर्म की प्रधानता को स्पष्ट किया है। उपन्यास में धार्मिक विश्वास को वर्णित किया है। वर्तमान समय में विज्ञान का युग है लेकिन लोगों का आज भी धर्म पर अटूट विश्वास बना हुआ है। ईश्वर तथा धर्म से संबंधित सभी विश्वास व मान्यताओं को मिथ्याडंबर नहीं माना जाता है। भारतीय समाज में धर्म से संबंधित जीवनयापन करने वाले व्यक्ति को ही सदाचारी माना जाता है। इस प्रकार धर्म तथा नैतिकता का घनिष्ठ संबंध स्वीकार किया गया है। धर्म में जिस प्रकार विधि निषेध रहते हैं वैसे ही नैतिकता भी विधि निषेध के सहारे ही चलती है। नैतिकता सामाजिक उपज है और उसके सिद्धांतों की सार्थकता समाज में ही है। इस तरह आज भी व्यक्ति जब अनेक जगहों से हार जाता है तो वह भगवान से प्रार्थना करता है जैसे कि उपन्यास में सारंग के चरित्र से चित्रित होती हैं। माननीय समाज में ईश्वरीय अवधारणा का विशेष महत्व है तथा इससे जुड़े

विश्वासों का। लेखिका ने भारतीय संस्कृति के धार्मिक मूल्यों को उद्घाटित करने का प्रयास किया है। उपन्यास में एक अनन्या स्त्री पात्र रेशम की मृत्यु हो जाती है जो कि एक चाल के द्वारा मारी गई है। उसके परिवार में इस मृत्यु को भी ईश्वर द्वारा बनाए गए तथ्य में शामिल कर दिया है। किसी भी परिवार के सदस्य में इतनी हिम्मत नहीं है कि मृत्यु की छानबीन की जाए। इस तरह के धार्मिक विश्वास भी समाज में देखने को मिलते हैं। वर्तमान समाज में भी ऐसी कई अवधारणा विद्यमान हैं, इसी तरह के धार्मिक विश्वास अनैतिकता की ओर ले जाते हैं।

'झूलानट' शीर्षक उपन्यास में शीलो नाम की एक स्त्री पात्र परित्यक्ता नारी है। जिसे उसके पति ने शादी के तुरंत बाद त्याग दिया है। सुमेर पुलिस कर्मचारी है तथा घर से दूर शहर में नौकरी करता है। शीलो सुमेर की परित्यक्ता के रूप में ससुराल में ही रहती है। शीलो अपनी सास तथा देवर के साथ रहती है। शीलो को अपने पति से मिलने के लिए प्रत्येक धार्मिक क्रिया पर पूर्ण विश्वास है। सास और बहू दोनों तरह-तरह की धार्मिक क्रियाएं करती हैं। भगवान से प्रार्थना करती है। बालकिशन जोकि शीलो का देवर है, वह भी अपनी भाभी तथा मां के दुख को सहन नहीं कर पाता। वह भी भगवान का नाम सिमरन करने लगता है। बालकिशन माता तथा भाभी के दुख को दूर करने के लिए सुबह नहा-धोकर मढिया में जल डालता है तथा हनुमान चालीसा का पाठ करता है। वह यह सब धर्म के उपाय करके घर में पहली जैसी रौनक लाना चाहता है। चंपादास वेद शीलो को अनेक ऐसे उपाय बताता है जिन्हें शीलो सब कामों को छोड़कर नित्य सुबह करती है। "तुलसी का चोरा और पीपल का पेड़ ढारे ।घर में सुंदरकांड का पाठ करो।"[19] गांव के एक व्यक्ति ने शीलो को धर्म से संबंधित कुछ विश्वास बताए हैं जिसको करने से सुमेर घर वापस आ जाएगा। शीलो हर रोज़ पीपल तथा तुलसी मां को पानी चढ़ाती है। घर में सुंदरकांड का पाठ करती है। गाय तथा कुत्तों को रोटी डालती है। इस तरह उपन्यास में ईश्वर की पूजा द्वारा मनोरथ को साधने का वर्णन किया गया है। दोनों सास-बहू चंपादास के कहने पर यह सब धार्मिक विश्वास मानते हुए उपाय करती हैं ताकि सुमेर गांव आ जाए तथा शीलो को अपना ले। हिंदू धर्म में भक्ति से देवी-देवताओं के सिंहासन को हिला देने की बात की है। अपने आस-पास में भी इसी तथ्य को आधार बनाया

गया है। चंपादास कहते हैं कि अगर आप इस उपाय को करो तो सुमेर घर को दौड़ा चला आएगा। शीलो पूरे विश्वास के साथ जप-तप करती हैं ताकि उसकी मनोकामना भगवान जल्दी पूरी करें। इस तरह हिंदू धर्म की आस्था आज भी प्रचलित है, किसी भी कार्य सिद्धि के लिए भगवान हनुमान जी की स्तुति करते हैं। भारतीय संस्कृति में हनुमान जी को संकटों को दूर करने वाले ईष्ट के रूप में पूजा जाता है। माना जाता है कि जो व्यक्ति सुंदरकांड के पाठ को नित्य करता है, उसका मनोरथ हनुमान जी अवश्य पूरा करते हैं। यह अध्ययन करने के बाद ज्ञात होता है कि वर्तमान समय तथा प्राचीन समय में कोई विशेष अंतर नहीं आया है, यही धार्मिक विश्वास और श्रद्धा उपन्यास के पात्रों में देखने को मिलती है। इस तरह अगर कोई भी कार्य पूरी लग्न तथा विश्वास से किया जाए तो उसमें भगवान अवश्य भक्तों की सुनता है। उपन्यास में शीलो अपने जप-तप में इतनी लीन हो जाती है कि बाकी सब काम करना भूल जाती है। यहां तक कि शीलो समय पर खाना भी नहीं खाती है। वे दोनों भक्ति में इतने लीन हो गई थी कि उन्हें अब दुख तथा शोक मनाने का समय नहीं था। दोनों तपस्या पूर्ण होने के सपने ले रही थी। शीलो बालकिशन को खेत का काम करते आते ही रामायण का गुटका पढ़ने को दे देती। बालकिशन न चाहते हुए भी भाभी को मना नहीं कर पाता। उसका मानना है कि उसके मना करने पर भगवान उससे रूठ जाएंगे। बालकिशन का मानना है कि भगवान का सिमरन तथा पूजा-पाठ न करने से पाप लगता है। अगर भगवान रूठ जाए तो भगवान को मनाना बहुत ही मुश्किल कार्य है। इस तरह उपन्यास में पात्रों के माध्यम से उनकी धार्मिक आस्था को दिखाया गया है। उपन्यास में शीलो को बालकिशन के साथ बछिया करने को कहा जाता है लेकिन शीलो इस रस्म को करने से मना कर देती है। शीलो का मानना है कि उसका यह जन्म तो निरर्थक है, वह बालू के साथ बछिया करके अपने अगले जन्म को सारहीन नहीं बनाना चाहती है। सास को ऐसे नियमों वाली बहू को देखकर बहुत भरोसा होता है। शीलो की ऐसी बातें सुनकर बालू तथा सास को हैरानी भी होती है। उसकी बातों को सुनकर ऐसा लगता है कि उनके घर में कोई साक्षात देवी विराजी हो। वीरों को अपने धार्मिक मतों पर पूरी आस्था है कि एक दिन सुमेर अवश्य आएगा और उसे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लेगा। "इसके बाद व्रत-उपवासों का सिलसिला। सोलह सोमवार।

संतोषी माता के शुक्रवार। केला पूजन के बृहस्पति। शनि ग्रह शांति के शनिवार।"[20] शीलो सुमेर की घर वापसी के लिए व्रत आदि करती है। वह सोमवार का व्रत रखती है ताकि भगवान शिव प्रसन्न होकर उस पर कृपा करें। जिस प्रकार पार्वती ने शिव को प्राप्त करने के लिए सोलह सोमवार के व्रत किए थे तथा पार्वती जी को शिव भगवान पति के रूप में प्राप्त हो गए थे। उसी तरह शीलो भी चाहती है कि उसके द्वारा किए गए धार्मिक उपायों से उसकी मनोकामना पूरी हो जाए तथा सुमेर का मन बदल जाए और वह घर वापस आ जाए। इसी तरह शीलो संतोषी माता व्रत भी करती है। वीरवार के दिन वृहस्पति भगवान को केले चढ़ाकर पूजा करती है। शनि ग्रह की दशा ठीक करने के लिए उसकी शांति के पाठ करती है तथा व्रत भी रखती है। इस प्रकार शीलो के व्रतों का सिलसिििला चल रहा था। वह सूख कर कांटा होती जा रही है। शीलो इतनी सूख गई है कि उसके दांत बाहर निकल गए हैं। शीलो के ऐसे रूप को देखकर बालू को अपनी भाभी को देखकर डर लगता है, कहीं कोई अनहोनी न हो जाए। बालू ने इसीलिए मंगलवार के व्रत की जिम्मेदारी स्वयं पर ले ली। इस तरह उपन्यास में लेखिका ने पात्रों के द्वारा धार्मिक विश्वासों की चर्चा की है। शीलो की ईश्वर पर इतनी आस्था है कि वह लगातार व्रत उपवास करती है। इतने विश्वास से पूजा पाठ करती है कि सुमेर एक दिन घर जरूर वापिस आएगा तथा उसे पत्नी का हक दे देगा। यही धार्मिक आस्था व्यक्ति को आध्यात्मिक बनाती है। आध्यात्मिकता का यही परिचय व्यक्ति में धार्मिक मूल्य विकास को विकसित करता है। बालू के हृदय में शीलो के लिए हमदर्दी, परस्पर स्नेह तथा प्रेम को व्यक्त करती है। स्नेह तथा प्रेम भी व्यक्ति के अंदर धार्मिकता द्वारा ही उत्पन्न होते हैं। धर्म ही व्यक्ति को एक-दूसरे के प्रति अच्छा व्यवहार करने को प्रेरित करता है। आचरण में ऐसा बदलाव व्यक्ति को मानवीयता प्रदान करता है। मनुष्य प्राणी ही एक ऐसा जीव है जिसके अंदर किसी दूसरे के प्रति प्रेम, सहानुभूति जैसे गुण विद्यमान होते हैं। मनुष्य एक-दूसरे के दुख तकलीफ को समझ सकता है। इसी तरह उपन्यास में बालू भी एक ऐसा पुरुष पात्र है जो कि भाभी तथा मां के दुख को समझता है। उसे ज्ञात है कि यह दोनों भाई के घर आने के लिए इस तरह के विधि विधानों को करने में व्यस्त हैं। इन्होंने जीवन के अन्य सभी कामों को छोड़ दिया है, सिर्फ धर्म को ही सर्वप्रमुख मान

लिया है। धर्म के कारण ही जीवन में इतने ज्यादा पूजा पाठ करने में लगी हुई हैं। हिंदू धर्म में ऐसे व्रतों तथा उपवासों का जीवन में विशेष महत्व बताया गया है। व्रत, उपवास व्यक्ति के जीवन का आधार हैं। इनके बिना हिंदू धर्म का व्यक्ति अपने जीवन को निरर्थक समझता है। उपन्यास में शीलो का एक परित्यक्ता नारी के रूप में चित्रण किया गया है। शीलो, सुमेर के लिए न जाने कितने धार्मिक उपाय करती है ताकि सुमेर घर आ जाए। शीलो पूरे तन-मन-धन से व्रत तथा अन्य विधि विधानों को संपन्न करती है। "बेटा ! जा पहले महामाई ढार आ। संकर महादेव पर पान-फूल और दूध चढ़ा आ। सुभ घड़ी कि डेढ़ साल बाद लौटा है मेरा सुमेर ! भूले-बिसरे देव पितर, तुम्हारी जै रहे ।"[21] इतनी पूजा पाठ करने के बाद वह दिन आखिर में आ ही जाता है, जब सुमेर घर वापस आया है। मां ने पूजा करके मन्नत मांगी थी तथा पैसे भी रखे थे। सुमेर के घर आ जाने पर मन्नत मांगे पैसे बालू को दिए और इन्हें शिवजी के मंदिर चढ़ाने को कहा। साथ ही पान और फूल भी चढ़ाती है। महामाई के नाम पर भी पैसे रखे होते हैं, जिन्हें वह माता के मंदिर चढ़ाने को कहती है। सुमेर पूरे डेढ़ साल बाद गांव में आया है। मां, देवताओं तथा पितरों को भी नमस्कार करती है। उनकी जय-जयकार बुलाती है। इस तरह उन दोनों की इच्छा पूर्ण होने पर उनका धर्म पर विश्वास और अधिक बढ़ जाता है। इसी तरह की मान्यता व्यक्ति को धर्म पर और अधिक आस्था करने पर मज़बूर कर देतें हैं। व्यक्ति का यही विश्वास उसे भगवान के अधिक निकट ले आता है। उनकी आस्था दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है। यही आस्था तथा विश्वास धार्मिक मूल्य के अंतर्गत आता है। सुमेर जब घर आता है तो शीलो अपने मायके गई होती है। मां, सुमेर को आते देख कर परेशान हो जाती है। उसकी परेशानी का कारण यह होता है कि शीलो घर पर नहीं होती है। शीलो अपने मायके गई होती है, जिसके मिलने के लिए इतना पूजा-पाठ किया, आज वही घर पर नहीं है। मां, इसको भी भगवान का बनाया हुआ खेल ही समझती है। उसका भगवान पर इतना अटूट विश्वास हो गया था कि किसी दूसरे पर विश्वास ही नहीं रहा था। इस तरह वह सुमेर के आने पर छटपटा जाती है। उसे विश्वास नहीं होता है कि आज भगवान ने इतनी बड़ी मेहरबानी कर दी जिसका वह बड़े दिनों से इंतजार कर रही थी। वह घड़ी आ गई है। इस तरह वर्तमान समय में भी व्यक्ति की यही आस्था है। आज भी भगवान

पर बहुत भरोसा करते हुए लोगों को देखा जा सकता है। आज के वैज्ञानिक युग में बीमारियों के इलाज के लिए भी भगवान पर भरोसा किया जाता है। डॉक्टर भी आध्यात्मिकता पर विशेष श्रद्धा करते देखे गए हैं। डॉक्टरों ने भी महामृत्युंजय मंत्र को विशेष लाभकारी सिद्ध हुआ माना है। इस तरह कहने का भाव है कि भगवान आज भी विद्यमान है चाहे वह किसी भी रूप में हो। इस तरह अपने-अपने धर्मों की प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में विशेष रूप से मान्यता है। हिंदू धर्म में व्रत और उपवासों का विशेष महत्व माना गया है। व्यक्ति व्रत रखकर भी अपने मनोरथों की प्राप्ति करता है। इस तरह उपन्यास में यही तथ्य सामने आया है। युग किसी भी अन्य तथ्य में बदल गया है लेकिन धर्म के रूप में अभी भी लोगों की वही पुरानी मान्यताएं प्रचलित हैं। लोग पहनावे, खाने-पीने में भले ही बदल गए हों लेकिन धार्मिक आस्था वही है। धर्म लोगों के संस्कार के रूप में सा ामने आया है। व्यक्ति जिस परिवेश में पैदा हुआ है तथा जहां उसकी परवरिश हुई हो, उसके अन्दर वह गुण अवश्य झलकतें हैं। जिस तरह बालकिशन मां तथा शीलो को व्रत करते देखता हुआ स्वयं को भी बदल लेता है। इस तरह धर्म एक धारणा के रुप में व्यक्ति को परिवेश से मिला एक तथ्य के रुप में सामने आया है।

'अल्माकबूतरी' उपन्यास में राणा ने मां से पढ़ने जाने के लिए जिद्द की है तथा मांस खाने को वह मना करता है। राणा एक कबूतरा कबीले से संबंध रखता है। जिसमें सभ्य जीवन जीने पर मनाही है। उनका ऐसा कबीला है, जिसमें वह सब डेरों में रहते हैं। इनके पास कोई ज़मीन नहीं है, इन्होंने अपना डेरा जंगल में बनाया हुआ है। राणा एक सभ्य व्यक्ति की तरह जीवन व्यतीत करने पर अड़ा हुआ है। जिससे डेरे के मुखिया ने कदमबाई अर्थात राणा की मां को राणा के लिए धमकी दी है। राणा ऐसा निकला कि वह कबूतरा समाज के अनुसार नहीं चलना चाहता है। "कदमबाई ने मन ही मन वीर देव मनाए-अरे देवता, आज हमारी बांह पकड़। फैसला होना है हो जाए। राणा अपने गैल चले। वह बीच में नहीं आएगी।"[22] कदमबाई तथा राणा को डेरे में रहने के लिए मुखिया के द्वारा बनाए गए नियमों के अनुसार रहना पड़ेगा लेकिन राणा तो इसके विपरीत था। यह कबूतरा कबीले के लोगों के अनुसार जीवन व्यतीत नहीं करना चाहता है। इस प्रकार मुखिया के फैसला सुनाने से पहले कबूतरी कदमबाई घबरा जाती है तथा

भगवान से प्रार्थना करने लगती है। कदमबाई ईश्वर को कहती है कि आज के दिन उसकी बाहों को पकड़ ले अर्थात उसकी आज रक्षा करें। वह राणा तथा मुखिया के फैसले के बीच स्वयं को असहाय अनुभव करती है। एक तरफ उसके बेटे की इच्छा है तथा दूसरी तरफ डेरे के बनाए गए नियम। इन दोनों में से निकलने के लिए वह अपने देवता की पूजा करती है तथा मन ही मन उसका ध्यान भी करती है। इस तरह व्यक्ति स्वयं को किसी भी समस्या से बाहर निकालने के लिए एकमात्र ईश्वर पर आस्था रखता है तथा उसी का नाम जपता है। यही तो धर्म को मानने वाले की श्रद्धा रहती है। किसी भी वक्त विपत्ति में होंगे तो उन्हें भगवान अवश्य दुविधा से दूर करेंगे। आज भी व्यक्ति की यही मान्यता है कि धर्म से बड़ी कोई चीज नहीं है। इसीलिए धर्म को जीवन में अधिक प्रधानता देते दिखाए गए हैं। उपन्यास का एक अन्य पात्र मंसाराम, जिसका कबूतरी कदमबाई के साथ अवैध संबंध होता है। उसकी पत्नी आनंदी अत्यंत दुखी थी, वह थककर पुजारी महाराज के पास जाती है। इस समस्या के समाधान के बारे में बात करती है। "सुखसागर पढ़कर देखो। कुछ बनेगा नहीं तो बिगड़ेगा नहीं।"[23] आनंदी अपनी व्यथा पुजारी को बताती है। पुजारी उसे भगवान पर विश्वास करने को कहता है। पुजारी, आनंदी को सुखसागर पढ़ने की सलाह देता है। पुजारी कहता है कि इस बात को करने से किसी भी समस्या का हल हो जाता है, अगर इस बात करने से तुम्हें कोई लाभ नहीं मिलेगा तो इससे कोई नुकसान भी नहीं होगा। इस पाठ को करने से धुंधकाली नाम के राक्षस ने सात दिन बांस में प्रवेश करके भागवत सुनी थी, जिसके कारण वह राक्षस की योनि से मुक्त हो गया था। इस प्रकार उपन्यास के पात्रों के माध्यम से लेखिका ने जीवन में धर्म की महत्ता पर चर्चा की है। भगवान की पूजा करना कभी भी व्यर्थ नहीं जाती। अगर आपको उसका भजन करने से कोई लाभ नहीं होता तो हानि भी नहीं हो सकती। भगवान के नाम में पात्रों की विशेष रूचि बताई गई है। कोई भी पात्र ईश्वर के नाम के बिना किसी भी कार्य को करते नहीं देखा गया है। इस तरह लेखिका ने मंसाराम तथा आनंदी के चरित्र द्वारा धर्म की मान्यता पर विचार किया है। आनंदी इस पाठ को करवाकर मंसाराम तथा कदमबाई के अवैध रिश्ते को दूर करना चाहती थी ताकि कदमबाई मसांराम की ज़िन्दगी से चली जाए। उपन्यास का एक अन्य पुरुष पात्र जोधा, मंसाराम तथा आनंदी का

पुत्र है। जोधा बड़ा ही समझदार बेटा साबित हुआ है। आनंदी अपने बेटे के लिए पूरे गांव में तारीफ की पात्र बन गई है। सब लोगों का मानना है कि ऐसा बेटा भगवान सबके घर में दे। मंसाराम बिजनेस करने के लिए अपने खेतों को बेचने लगता है लेकिन जोधा जैसा संस्कारी बेटा उसे खेत बेचने के लिए मना कर देता है। जोधा का मानना है कि पुरखों की निशानी बेचनी नहीं चाहिए। वह कहता है कि ज़मीन नहीं बेचनी है चाहे मेरी जान चली जाए। जोधा अपने पिता से बोलता है कि आपका जो मन करता है करो, पैसा मैं स्वयं आपको लाकर दूंगा। जोधा अपनी शादी को अगले साल के लिए बढ़ा देता है परंतु पिता की इच्छा को पूरा करने की मन में ठान लेता है। "हे मेरे शंकर महादेव, मैंने तो गंगा में जौ बोए थे, पिछले जन्म में, सो जोधा जैसा बेटा मिला। नहीं तो बाप को कौन पार लगाता ?"[24] जोधा के ऐसे व्यवहार को देखकर आनंदी बहुत ही प्रसन्न होती है तथा भगवान शंकर को प्रणाम करती है कि आपने मुझे इतना गुणों वाला बेटा दिया है। उसको लगता है कि मानो उसने गंगा नहा ली है तथा गंगा में पिछले जन्म जौ बोए होंगे। आनंदी यह सब अपने पिछले जन्मों का फल मानती है। पिछले जन्म में कोई पुण्य कमाया था, जिसके कारण उन्हें जोधा जैसा पुत्र मिला है। इस समय में जोधा जैसा पुत्र मिलना बहुत ही मुश्किल बात है जो कि अपने मां-बाप पर इतना पैसा लगाए। बेटे ने बाप को संभाल लिया, नहीं तो बाप ज़मीन बेचने पर उतारू हो गया था। इस तरह उपन्यास में एक संस्कारी बेटा मिलना भी भगवान की कृपा मानी गई है। आनंदी को भगवान पर इतनी आस्था हो गई है कि वह बार-बार भगवान को धन्यवाद ज्ञापित करती हुई दिखाई गई है। बेटे में ऐसा हुनर भगवान की कृपा ही माना जाता है। भगवान ने जोधा को ऐसी बुद्धि दी तभी वह इतना नेक काम करने के लायक बना।

उपन्यास का एक अन्य पुरुष पात्र रामसिहं पेशे से अध्यापक है परंतु उसे समाज में वह सम्मान प्राप्त नहीं है क्योंकि वह एक कबूतरा समाज से संबंध रखता था। दूलन नामक पुरुष पात्र भालू को एक बात बताता है लेकिन कसम देता है। "वीर देव का कौल। गंगा मइया का कौल।''[25] दुलन बताता है कि रामसिंह के घर पर कोई बेटा सिंह नाम का डाकू आने लगा है। इस बात को किसी अन्य से न बताने के लिए भगवान वीरदेव की कसम देता है। इसके साथ गंगा माता की भी उसे सौगंध देता है। विवेच्य उपन्यास में भगवान का वास्ता दिया जाता है ताकि

कोई किसी की बात को अन्य लोगों में न बताएं। हिंदू धर्म में यह कसम विशेष रूप से धार्मिक विश्वास है कि अगर हम किसी को भगवान की सौगंध देते हैं तो वह उसे पूरी निष्ठा से निभाता है। अपनी कौल को कभी तोड़ता नहीं है। कौल को एक धार्मिक निष्ठा से पूरा करना धार्मिक मूल्य है, जिसे पूरा करने से व्यक्ति स्वयं को एक आध्यात्मिक प्रवृत्ति का मानने लगता है। उपन्यास में भी ऐसी ही निष्ठा का वर्णन किया है। व्यक्ति के जीवन में धर्म की इतनी प्रधानता है कि अपनी रहस्यात्मक बातें भी एक-दूसरे को बता देते हैं। इस प्रकार वर्तमान समाज में ईश्वरीय अवधारणा का विशेष महत्व है जैसा कि प्राचीन समय में था। धर्म से जुड़ी कई परंपरागत बातें जैसे कौल भरना आदि आज भी व्यक्ति परंपरा के रूप में निभाते हैं। यही धर्म परंपरागत नियम ही मूल्य कहलाए हैं।

उपन्यास में धीरज नाम का एक अन्य पुरुष पात्र नौकरी न मिलने के कारण परेशान है। उसके दद्दा ने उसे समझाया कि जरूरी नहीं कि पढ़-लिख लेने से सब लोगों को नौकरी ही मिलती है। नौकरी मिलने के लिए हज़ार प्रयत्न किए थे। एक दिन वह समय आ जाता है, जब धीरज को सूरजभान के यहां नौकरी मिल जाती है। "दद्दा ने सत्यनारायण की कथा कराने का ऐलान कर दिया। कथा हुई। हवन हुआ। आरती गाई गई।"[26] नौकरी मिलने के लिए दद्दा ने प्रण लिया था कि भगवान सत्यनारायण की कथा करवाएंगे। घर में कथा हुई तथा हवन हुआ। सब तरह की पूजा संपन्न करने के बाद आरती गायी गई। सब का मानना था कि ठाकुर भगवान ने बेटे धीरज पर कृपा की है। जिसके तेज से धीरज का माथा जगमगाता है। धीरज के हाथ में कलावा बांधा गया। इस तरह उपन्यास में नौकरी मिलने के बाद भगवान का भजन-पूजन किया जाता है। सब परिवार के लोग भगवान का दिल से धन्यवाद ज्ञापित करते हैं। लोगों का मानना है कि नौकरी पढ़े-लिखे होने से नहीं बल्कि भगवान की कृपा से लगती है। इसीलिए तो बाबा ने काबिलियत को पढ़े-लिखे होने का श्रेय नहीं दिया है। उनका मानना है कि अगर सब ऐसा होता तो सब लोग पढ़-लिखकर मालामाल हो जाते तथा सेठ बने होते। जब तक भगवान नहीं चाहेगा, तब तक व्यक्ति काबिल नहीं बन सकता। इसीलिए दद्दा ने नौकरी लगते ही सत्यनारायण कथा करवाई।

इस तरह कहा जा सकता है कि उपन्यास में व्यक्ति ने अपने जीवन में धर्म को प्रधानता दी है। धर्म के अनुसार ही वह कार्य करता है तथा धर्म को ही सर्वोच्च मानता है। इसी तरह जब धीरज को नौकरी नहीं लगी थी तो उसकी मां ने भी बहुत सारी मन्नतें भगवान से मांगी थी ताकि धीरज को नौकरी लग जाए। धीरज बहुत परेशान रहता था, वह भी मन ही मन बहुत सी प्रार्थनाएं करता था कि कहीं कोई जंग छिड़ जाए तो उसे फौज की नौकरी मिल जाए। वह अपनी मां से इस बारे में बात करता तो मां कहती "शंकर महादेव पर सवा महीना दूध जल चढ़ाऊंगी, नौकरी मिले तो।"[27] मां ने धीरज को बोला कि तुझे जब फौज में नौकरी मिल जाएगी तो मैं शंकर भगवान का पूरे सवा महीने तक दूध-जल से स्नान करवाऊंगी। इस प्रकार पात्रों में ईश्वर पर इतनी आशा है कि वह अपने भविष्य की मंगल कामना के लिए भक्ति पर ही निर्भर है। उन्हें ऐसा लगता है कि कोई भी काम भगवान के बिना पूरा नहीं हो सकता है। उनकी श्रद्धा इतनी है कि स्वयं को ईश्वर के भरोसे छोड़ दिया है। वर्तमान समय में भी व्यक्ति इतना ही आस्तिक है। सब लोगों की अपने-अपने जीवन में धर्म की विशेष प्रमुखता है चाहे वह किसी भी धर्म से संबंध रखते थे। यही धार्मिक विश्वास व्यक्ति को धार्मिक मूल्य विकास में सहायता देते हैं। धर्म के बिना व्यक्ति को अपना जीवन सारहीन प्रतीत होता है। धर्म ही व्यक्ति को नैतिकता के मार्ग पर चलाता है। धर्म पाप-पुण्य, अच्छे-बुरे में अंतर बताता है। इस प्रकार उपन्यास के सभी पात्र धर्म को विकसित करते देखे गए हैं। धर्म के अनुसार ही कार्य करते हैं तथा सफलता की राह देखते हैं।

'अगनपाखी' उपन्यास में चंदर की सरकारी विभाग में नौकरी लगी है। सब लोग हैरान हैं कि यह नौकरी लगी तो कैसे लगी? यह सब तो चंदन का पिता ही जानता है। चंदर के पिता ने ही अपनी चालबाजी से यह नौकरी लगवाई है। चंदन को असिस्टेंट डेवलपमेंट ऑफिसर की पोस्ट मिली है। चंदर को पिता ने बताया कि अभी अपनी मां को मत बताना, जब तक कोई सरकारी चिट्ठी न आ जाए? तब तक इस बात को अपने पास ही रखना। "तुम्हारी मां को प्रसाद बांटने की बुरी आदत है।"[28] चंदर की मां देवी-देवता की उपासना पर विशेष आस्था रखती है इसीलिए उसे पता चलते ही वह भगवान को प्रसाद चढ़ाती है तथा लोगों में बांटती है। वह धार्मिक प्रवृत्ति की नारी है। इस प्रकार लेखिका ने उपन्यास में

बताया है कि चंदर की मां में ईश्वरीय आस्था है, तभी तो वह सबसे पहले भगवान को ही धन्यवाद ज्ञापित करने के लिए प्रसाद चढ़ाती है। किसी भी व्यक्ति के संस्कार, प्रवृत्ति, अनुभव, अभिरुचि और मान्यताओं के अनुसार आस्थाएं निर्धारित होती हैं। चंदर की मां में धार्मिक विश्वास है जो उसे अपनी नीति तथा कर्तव्य को भूलने नहीं देता। इस प्रकार यह व्यक्तिगत शक्ति और सामाजिक हित करने वाला मूल्य है। भक्ति आंदोलन के संतों में भी ऐसी ही धार्मिक आस्था थी। चंदर की नानी ने भी भगवती मां के नाम पर कन्या बिठाई थीं। नानी तथा चंदर की मां भी मंदिर में गई। साथ में भुवन भी थी। "महामाई के मंदिर पर धोक दी थी- मइया सबका भला करना, मेरी पत राखना।"[29] वह अपने साथ मंदिर में चढ़ाने के लिए गोरस तथा भात बना कर ले गई थी, साथ में अन्य पूजा का सामान भी लेकर गई थी। इन्होंने माता पर नारियल और रोली चढ़ाया। माता के नाम पर कन्याओं को बिठाया। सब कुछ सम्पन्न करके वे तीनों घर चलने लगी तथा भुवन ने फिर से माथा टेकने के लिए बोला। भुवन मंदिर में गई तथा ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। वह अपने सिर को पटक-पटक कर रो रही थी, उसने मां से माफी मांगी। अपनी खता के लिए सिर को बार-बार रगड़ा। इस प्रकार उपन्यास में धार्मिक आस्था दुख को दूर करने के लिए फरियाद करती हुई भुवन का चरित्र चित्रण किया गया है। उसका पागल लड़के के साथ विवाह कर दिया जाता है, जिसे वह भगवान का क्रोप मानती हैं, भगवान की कोई गलती हो गई है जिसके कारण उसे ऐसा जीवन साथी मिला है। वह अपनी पिछली किसी भी हुई भूल के लिए माता से माफी मांगती है ताकि उसकी ज़िन्दगी के दुख दूर हो जाएं। इस तरह उपन्यास के पात्रों पर देवी-देवताओं की मेहर तथा क्रोध के नतीज़े देखने को मिलते हैं। जिसके कारण कुछ लोगों का जीवन खुशहाल है तथा कुछ लोगों के जीवन में दुख भरे हुए हैं। इस तरह अपने दुखों को दूर करने के लिए ईश्वर को सहायक मानते हैं। उनका मानना है कि भगवान के आगे कोई कुछ नहीं कर सकता। अपने जीवन में धर्म के कारण ही उतार-चढ़ाव आते हैं। इस दृश्य को देखने के बाद नानी भुवन को समझाती है कि अब जैसा भी घर है, तुझे वहीं रहना है। यह सब भगवान की इच्छा है, उसकी इच्छा के बिना एक पत्ता तक नहीं हिलता है।

उपन्यास में भुवन सिसक-सिसक कर भगवान से माफी मांगती है। नानी अर्थात भुवन की मां उसे उठाना चाहती है लेकिन सोचती है कि भगवान के दर से ऐसे उठाना पाप होता है इसीलिए भुवन को नहीं उठाया। नानी अपनी दूसरी बेटी से भुवन द्वारा बचपन में की गई भूलों के बारे में बताती है। आज इस भवन को क्या हो गया? यह उसी भगवान के आगे रो रही है जिसके आगे वह बचपन में जानबूझकर हज़ारों गलतियां करती थी। यह सब भुवन की बचपन में की गई गलतियों की सज़ा है जिसे वह आज भुगत रही है। "देवी पर चढ़ा प्रसाद पुजारी से छिपकर चुरा लो और बरेदियों को दे दो, वे भूखे रहते हैं। पथरा प्रसाद खा सकते हैं ?"[30] भुवन तथा चंदर दोनों में मासी-भांजे का संबंध था। चंदर भी गर्मियों की छुट्टियों में नानी के घर आता था। दोनों मिलकर बहुत शरारतें करते थे। बचपन में सभी ऐसी बातें करते हैं जैसे भुवन करती थी लेकिन नानी का मानना है कि माता का ही श्राप भुवन को भुगतना पड़ रहा है। उसने चाहे मज़ाक में ही यह सब बातें की थी लेकिन भगवान को यह सब बातें बुरी लगी होंगी। जिसके कारण आज उसके ऐसे बुरे दिन आ गए हैं। इस प्रकार उपन्यास में लेखिका ने पात्रों के माध्यम से बताया है कि धर्म में जिस ईश्वर की आपके जीवन में महत्व होता है, उसका उपहास नहीं उडाना चाहिए, किसी न किसी रूप में व्यक्ति को ईश्वर के क्रोप का भागीदार बनना पड़ता है। आज वही भुवन परेशान होकर उसी पत्थर की मूर्ति के आगे रो रही है, जिससे कि वह बचपन में पत्थर कहकर उसका उपहास उड़ाती थी। उपन्यास में भगवान की सत्यता पर चर्चा हुई है तथा व्यक्ति को एक न एक दिन अपनी गलती का एहसास होता है तथा वह पश्चाताप करता है। ऐसा ही चित्रण उपन्यास में भुवन का हुआ है। चंदर और बिरजू कुछ दिनों बाद नानी के घर आते हैं तथा नानी बताती है कि भुवन के ससुराल में यज्ञ का आयोजन किया है, जिसमें महात्मा लोग आ रहे हैं। इस यज्ञ का आयोजन कुंवर अजय ने किया है। नानी ने चंदर और बिरजू को भी भुवन के ससुराल भेजा ताकि यज्ञ में वे दोनों भी शामिल हो जाएं। चंदर ने बिरजू को विराटा की ओर चलने को कहा क्योंकि यहां पर चंदर का उस यज्ञ में मन नहीं लग रहा था। इसके उत्तर में बिरजू ने कहा कि ऐसा करने से "यज्ञ का अपमान होगा, पाप पड़ेगा।"[31] बिरजू का मानना था कि यज्ञ को होते छोड़कर जाना पाप होता है। हिंदू धर्म में यज्ञ का विशेष महत्व माना गया है, यज्ञ कराने के लिए

बड़े ही तेजपाल महात्मा लोग आए होते हैं जोकि विशेष रूप से महाज्ञानी होते हैं। इस तरह कथा में धार्मिक अनुष्ठानों का वर्णन किया है। इन धार्मिक अनुष्ठानों का तो वर्तमान युग में भी प्रचलन है। आज भी लोग कार्य सिद्धि के लिए यज्ञ का आयोजन करते हैं। अपनी मानसिक तथा शारीरिक रोगों को दूर करने के लिए यज्ञ करते हैं जैसे उपन्यास में अजय सिंह ने अपने भाई कुंवर के मानसिक रोग को दूर करने के लिए यज्ञ का आयोजन किया था। प्राचीन समय में भी अश्वमेध यज्ञ का वर्णन मिलता है, यही तो धार्मिक मूल्य विकास है जो कि आज के समय में भी प्रचलित है। इस उपन्यास में विकसित धार्मिक मूल्यों को दिखाया है। लेखिका के उपन्यास के पात्र धार्मिक होते हुए भी परंपरा का निर्वाह करते देखे जा सकते हैं। विराटा के मंदिर में पुजारी ने श्रोताओं को ईश्वर की महत्ता तथा महिमा समझाई। मां दुर्गा का बखान किया। सभी लोग ध्यानपूर्वक पंडित की बातें सुन रहे हैं। पंडित ने भगवान को मानने वाले भक्त की भी आस्था का वर्णन किया तथा जो व्यक्ति भगवान को सच्चे मन से मानता है, उसके ऊपर से सभी संकट टल जाते हैं आदि तथ्यों का वर्णन किया। पुजारी मां दुर्गा के अपरंपार शक्ति के बारे में बताते हैं। मां ने जैसा चाहा वैसा हुआ। लोगों पर मुसीबतें आई लेकिन साथ में टल भी गई। गांव में अकाल पड़ गया, वर्षा अधिक होने से अनाज की उपज नहीं हुई। लोगों ने दुर्गा के व्रत रखे जिसके कारण वर्षा रुकी। कई ऐसी महिलाएं थी जिनके पास कोई संतान नहीं थी, उनको मां ने अपनी कृपा से पुत्र दिए। कई ऐसे लोग थे जो कि अंधे थे, उनको आंखों की ज्योति प्राप्त हुई। दुर्गा मां प्रसन्न हो गई। लोगों ने हाथ फैलाए तथा मन इच्छित फल की प्राप्ति कर गए। यह सब ज्ञान पुजारी देते हैं। बेतवा नदी लोगों के लिए तीर्थ स्थल बन गई, मंदिर एक धार्मिक तीर्थ स्थल हो गया है। इस प्रकार उपन्यास में भगवान की शक्ति का वर्णन किया गया है। यहां पर लेखिका ने बताया है कि अगर भगवान की कृपा हो तो सब असंभव से संभव हो जाता है जैसे मां दुर्गा ने विराटावासियों पर कृपा करके लोगों की मनोकामनाएं पूर्ण की हैं। लोगों का मां पर विश्वास दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाता है जो कि एक परंपरागत धारणा बन जाती है। इस तरह प्रत्येक व्यक्ति में धार्मिक आस्था तथा निष्ठा परंपरा के रूप में भी समा जाती है, जिसके कारण व्यक्ति अपने धार्मिक विश्वास को छोड़ना नहीं चाहता। इन सभी गुणों के कारण व्यक्ति धार्मिक मूल्यों

को विकसित करने में एक योग्य भूमिका निििभाता है। उपन्यास का प्रत्येक व्यक्ति धार्मिक पृवृत्ति का ही नज़र आया है। प्रत्येक पात्र की अपनी देवी में श्रद्धा रखते देखे गए हैं। वे किसी भी अशुभ कार्य को करने से डरते हैं, उन्हें पता है कि ऐसा करने से अनहोनी हो सकती है। पात्र अपनी मर्यादा में रहते हुए पूजा करते हैं ।

अपनी मर्यादाओं को बनाकर रखना ही सबसे बड़ा धार्मिक मूल्य है। इस प्रकार उपन्यास में धार्मिक मूल्यों की अभिव्यक्ति हुई है। धर्म के अनुसार जीवन व्यतीत करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। वर्तमान समय में भी लोगों का धर्म के प्रति यही विश्वास है। लोगों का मानना है कि मंदिर में जाकर व्यक्ति को घमंड का त्याग करना चाहिए। हिमाचल प्रदेश का एक मंदिर है जिसमें वहां का राजा अकबर मां ज्वालामुखी की ज्योतियों को बुझाने के लिए पाने की नहर लाया था ताकि यह ज्योतियों को बुझा कर मां को नीचा दिखा सके लेकिन ज्योतियां प्राकृतिक थी जो कि आज भी बिना घी के जलती रहती हैं। नहर को चीर कर यह दीपक रूपी ज्योतियां बाहर आ गई थी। इस प्रकार कहने का भाव है कि धर्म का अपने जीवन में एक अलग महत्व है जो व्यक्ति धर्म को पूरी निष्ठा से निभाता है, उसका विश्वास भगवान बनाए रखता है। इसी तरह हिंदू धर्म की आज भी वही पुरानी मान्यता है कि ईश्वर की भक्ति जो पूरे विश्वास के साथ करता है, उसे पूर्ण फल की प्राप्ति होती है। इस तरह गांव के लोगों का भी मंदिर की दुर्गा मां तथा पुजारी पर पूरा भरोसा होता है तथा उसकी बातें सुनते हैं। इसी कारण पात्रों का यही विश्वास ही धार्मिक मूल्यों को बढ़ावा देता हुआ दिखाया गया है।

'विज़न' उपन्यास में स्त्री पात्र नेहा पेशे से डॉक्टर है। उसकी एक अमीर घर में शादी हो जाती है। नेहा एक क्लर्क की बेटी होती है। नेहा अभी शादी नहीं करना चाहती लेकिन घरवाले अच्छा रिश्ता देखकर उसकी डॉ. अजय से शादी कर देते हैं। नेहा को ससुराल जाकर घर को संभालना मुश्किल प्रतीत होता है। नेहा को ससुराल में सारी जिम्मेदारियों को उठाना बहुत ही कठिन लगता है। नेहा अपने बहू होने के कर्तव्य को समझते हुए सास के मंदिर में जाती है तथा भगवान से प्रार्थना करती है "भगवान वर दो, शक्ति दो, सहिष्णुता दो और साथ ही विस्मृति दो...मैं अपना डॉक्टर होना भूल जाऊं।"[32] नेहा मंदिर में बैठकर सिर

ढककर भगवान से वर मांगती है कि मुझे इतनी शक्ति दो कि मैं ससुराल में सब लोगों के साथ अच्छे से रह सकूं। इतनी सहनशीलता दो कि इनकी बातों के अनुसार स्वयं को ढाल लूं। नेहा अपने आपको मां जैसा तो नहीं बना सकती लेकिन ऐसी बन जाए कि घर को संभाल सकें। इस तरह लेखिका ने बताया है कि चाहे व्यक्ति किसी भी पद पर पहुंच जाए लेकिन भगवान तो उसे हमेशा याद आता है। उसे हर कदम पर प्रत्येक काम में सफलता मिलने के लिए भगवान के आगे प्रार्थना करते दिखाया है। धर्म में विश्वास रखने वाले के लिए भगवान से बड़ा कोई हमसफ़र नहीं होता। जिस तरह डॉ. नेहा ने अपने वैवाहिक जीवन को अच्छा तथा सुखमय बनाने के लिए भगवान से प्रार्थना करती है। नेहा का धार्मिक विश्वास उसकी मां के द्वारा ही उसमें समाहित हुआ है क्योंकि उसकी मां भी पूजा पाठ करती थी। इसी तरह व्यक्ति में धार्मिकता का आना एक परंपरागत मूल्य के रूप में है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में समा जाता है।

इसी तरह एक अन्य स्त्री पात्र डॉ. आभा आई सर्जन है। वह अपने वैवाहिक जीवन में सामंजस्य न बिठाने के कारण पति से अलग रहती है। डॉ. आभा ने अपने अस्पताल के काम को ही पूजा माना है। आभा तथा नेहा ने मिलकर एक फौजी की आंख की सर्जरी की। इस फौजी की आंख घायल हो गई थी, उसकी उम्र 30 साल की थी। आंख काफी संघर्ष कर रही थी, उसने कई डॉक्टरों को दिखाई लेकिन सब ने मना कर दिया क्योंकि आंख के बैठने का डर था। नेहा तथा आभा ने मिलकर ऑपरेशन कर दिया। "सभी देवी-देवताओं मेरी सहायता करें। मम्मी के सत्यनारायण स्वामी और वैष्णो देवी कोई चमत्कार दिखाएं।"[33] ऑपरेशन के बाद जब नर्स पट्टी खोलने लगी तो नेहा ने अपने सभी देवी- देवताओं को स्मरण किया। अपनी मदद के लिए उनसे प्रार्थना की ताकि आंख बिल्कुल सही सलामत हो। नेहा ने अपनी मां के सत्यनारायण भगवान तथा वैष्णो माता को रक्षा के लिए पुकारा है। उसने कहा कि अगर मैंने आपकी भक्ति की होगी तो बस इस सर्जरी को कामयाब कर देना। पट्टी खुलने के बाद नेहा ने सुख की सांस ली। सब कुछ सलामत था। इस प्रकार डॉ. नेहा को अपने से ज्यादा ईश्वर पर भरोसा था। उसने अपने काम को पीछे छोड़ कर भगवान से प्रार्थना करनी शुरू की थी। सब कुछ ठीक हो गया तो उसने भगवान को धन्यवाद ज्ञापित किया। उपन्यास में एक डॉक्टर का ईश्वर पर विश्वास दिखाया गया है। उसने अपने जीवन में काम

से अधिक धर्म को प्रमुखता दी है। इस प्रकार उपन्यास में डॉक्टर की यही धार्मिक विश्वास तथा निष्ठा धार्मिक मूल्य कहलाते हैं, जिसका विकासगत रूप में प्रसार होता देखा जा सकता है। उपन्यास में आभा की डॉ. मुकुल से शादी होती है। भारतीय लोगों की धार्मिक आस्था के अनुसार विवाह के बाद नव दांपत्य से देवी-देवताओं की पूजा करवाई जाती है। यही तथ्य उपन्यास में भी देखने को मिलता है "देवता पूजने थे अभी। भैरों जी का मंदिर रह गया। गांव के पितर बिना पूजे...?"[34] विवाह के बाद जितनी भी पूजा होती है, उसके लिए आभा की सास ने उसे नौकरी जाने से इंकार किया। अभी देवता की पूजा करनी थी, उन्हें भैरों जी के मंदिर में भी जाना था। गांव के पितरों की पूजा किए बिना आभा को घर से बाहर न जाने को बोलती हैं। विवाह के बाद हर समाज तथा समुदाय की अपनी धार्मिक निष्ठा रहती है, उसी निष्ठा के अनुसार आभा की सास ने उसे देवी-देवताओं की पूजा करने के लिए रोका है। उपन्यास के पात्र अपनी रीतियों को धर्म के अनुसार निभाते हैं। आज के युग में भी शादी के बाद वर तथा वधू को कहीं भी बाहर जाने से पहले देवी-देवताओं की पूजा करने के लिए बोला जाता है। अपने देवी-देवताओं को विधि-विधान से मना कर किसी अन्य काम को करते हैं। यह सब इसलिए किया जाता है कि वर-वधू का वैवाहिक जीवन अच्छे से बीते तथा किसी प्रकार का कोई संकट उन दोनों पर न आए। लोगों की मान्यता होती है कि धर्म के अनुसार देवी-देवता की पूजा नहीं होती है तो किसी अनहोनी के होने का भय रहता है। इस तरह आभा की सास देवी-देवता को प्रमुखता देती हुई दिखाई गई है। आभा की सास धार्मिक प्रवृत्ति की स्त्री हैं। उसने नौकरी से अधिक महत्व अपने धार्मिक क्रियाकलापों को दिया है। इसके लिए पहले देवी-देवताओं की पूजा ज़रूरी है। इसके विपरीत आभा के ससुर ने इस बात का खंडन किया है। ससुर का मानना है कि अगर हम ऐसे रीति-रिवाज़ो को मानने लगे तब तो पूरे दस दिन चाहिए। लोगों ने भी अपने अपने घर बुलाया है तथा देवी-देवता को भी मनाना है। आभा मन ही मन सोचती है कि सर तो दस मिनट की छुट्टी नहीं देते। इस प्रकार आभा के विचार से वह अपने धर्म को प्रमुख नहीं मानती है। उसके लिए पहले अपना मरीज है तथा अन्य काम बाद में। आभा का धर्म में कोई विश्वास नहीं होता है। यही बातें आभा को एक-दिन

अपने पति से अलग कर देती हैं। आभा अस्पताल के साथ-साथ घर को नहीं देख पाती हैं जो कि उसके पति की विशेष मांग थी।

अतः कहा जा सकता है कि आभा ने धार्मिक मूल्यों की अवहेलना की है। उसकी धर्म में कोई रुचि नहीं है। जहां पर कोई पात्र धार्मिक मूल्यों का पालन तथा रक्षा नहीं करता वहां पर धार्मिक मूल्य विघटन का दृश्य सामने आता है। उपन्यास में मूल्य परिवर्तन दिखाई दिया है क्योंकि आभा एक युवा पढ़ी-लिखी, आत्मनिर्भर नारी है। उसकी सोच में परिवर्तन है, जिसके कारण वे धर्म को महत्व नहीं दे पाती है। एक कारण साथ में यह भी देखा गया कि उसे नौकरी से अवकाश नहीं होता है, जिसके कारण भी उसे धर्म की अवहेलना करते हुए देखा गया है। यहां पर पात्र की मज़बूरी को भी व्यक्त किया गया। डॉ. आभा अपने पति डॉ. मुकुल से अलग किसी अन्य स्थान पर रहती है। दोनों में एक तरफी मारपीट होती है, जिसे देखकर आभा का पिता अत्यंत दुखी होता है। ऐसी स्थिति से डॉ. मुकुल को अपना अपमान महसूस होता है "अब मेरा तेरा सहारा बस भगवान है, भाग्य है।"[35] आभा का पिता इस स्थिति को देखकर बेटी को धर्म के माध्यम से समझाता है। उसका मानना है कि अब बेटा एक भगवान ही है जो इस समस्या को हल कर सकता है। तुम दोनों ने आग को साक्षी मानकर यह बंधन स्वीकार किया है तो इस बंधन को निभाओ भी। विवाह के बाद बाप बेटी का रिश्ता बदल जाता है। तुम दोनों के भविष्य के लिए जो सही है, वह तुम दोनों करो, इसमें मेरी जगह भगवान ही तुम्हारी मदद कर सकते हैं। इस तरह उपन्यास में लाचार पिता का चित्रण किया गया है। आभा के घर को बसाने के लिए यहां धार्मिक पक्ष को लिया गया है, जहां पर व्यक्ति स्वयं को लाचार अनुभव करता है वहीं पर वह ईश्वरीय राह को अपनाता है ताकि स्थिति पर काबू पाया जा सके तथा संकट को दूर किया जा सके। वर्तमान समय में भी ऐसी समस्याएं सामने आई हैं जिसमें धर्म का वास्ता देकर रिश्ते निभाने की कोशिश की जाती है।

उपन्यास में डॉ. शरण द्‌वारा अपना आई सेंटर खोला गया था, जिसमें बिना टांके की सर्जरी के लिए 'फेको' नामक मशीन लाई जाती है। जिसका आरंभ करने के लिए पूजा-पाठ करवाया जाता है। "गणेश जी की मूर्ति चंदन की चौकी सहित रिसेप्शन के बीचो बीच रख दी गई-विघनकारी विनाशक गणेशाय: नमः।"[36]

उपन्यास में ‘फेको’ मशीन का उद्घाटन करने के लिए राधा-कृष्ण मंदिर के पुजारी को बुलाया जाता है। जिसमें बड़े पुजारी महाराज आए थे, जिनको इन्होंने दोहरी दक्षिणा देकर बुलाया था। उनके द्वारा मंत्रों का उच्चारण किया गया, उसके बाद मशीन को खोला जाता है। मशीन पर फूल,चावल, बताशो की वर्षा की जाती है। उसकी मां ने उपवास रखा था जिसमें उन्होंने पानी तक भी नहीं पिया। ग्यारह ब्राह्मणों को भोजन करवाया, उन्हें वस्त्र तथा दक्षिणा दी। इस तरह उपन्यास में किसी भी नई चीज़ का प्रारंभ, गणेश की पूजा करके किया जाता दिखाया गया है। गणेश को विघ्न हरण माना जाता है ताकि मशीन से अच्छे परिणाम मिलें। भगवान का नाम स्मरण करना धार्मिक मूल्य के अंतर्गत आता हैं। पात्रों का ईश्वर पर विश्वास है इसीलिए पूरी पूजा विधि के साथ मशीन को खोला गया है। दान भी धर्म की एक विशेषता है इसीलिए उपन्यास में गरीबों अर्थात ब्राह्मणों को वस्त्र दान दिए जाते हैं। लेखिका ने यहां बताया है कि आज के पढ़े-लिखे समाज में भी धर्म की विशेष प्रधानता दिखाई देती है। पूरे विधि-विधान तथा धार्मिक मंत्रों द्वारा मशीनी उपकरण का आरंभ किया गया। वर्तमान समय में भी ऐसी ही परिस्थितियां देखने को मिलती हैं। समाज के लोग चाहे पढ़-लिख गए हैं लेकिन अपनी मर्यादा को नहीं भूलना चाहते हैं। अपनी मर्यादा में रहकर धर्म का पालन करते हैं। इस तरह उपन्यास के पात्र अपने धर्म को प्रधानता देते हुए देवी-देवताओं की पूजा करते देखे जा सकते हैं।

'त्रियाहठ' शीर्षक उपन्यास में मीरा अपने मामा के घर आई है। मीरा की मामी प्रधान उम्मीदवार के लिए चुनाव लड़ रही थी, मीरा भी चुनाव प्रचार के सहायता के लिए गांव आई होती है। चुनाव हो जाते हैं, चुनाव में मामी इतनी व्यस्त थी कि नहाने का भी समय नहीं मिला जिसके कारण मामी पूजा भी नहीं कर पाई। मामी, मीरा को अपना हाल बताते हुए कहती है "मीरा तुम नहा ली हो, तो तुलसी के चौरा पर जल डाल दो। मोरी तुलसी मइया, असीस दो, नइया पार लगे।"[37] मामी ने मीरा को तुलसी माता को जल चढ़ाने को बोला, तुलसी माता की पूजा करके आशीर्वाद ले लो। वोट मांगने में यह लोग इतने व्यस्त थे कि नहा भी नहीं सकी। तुलसी माता को जल चढ़ाकर क्षमा मांगती हैं। वोटो में विजय प्राप्ति की भी कामना करती है। इस उपन्यास में मामी द्वारा कहे गए शब्द धार्मिक विश्वास को व्यक्त करते हैं। मामी को तुलसी माता पर इतना विश्वास

है कि इनकी पूजा करने से कार्य में सफलता अवश्य मिलती है इसीलिए अपनी धार्मिक मान्यता के आधार पर ही उसने मीरा को भी जल चढ़ाने तथा आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए कहा। धर्म की जीवन में प्रधानता ही धर्म प्रचार का प्रमुख हेतु है। व्यक्ति अपने धार्मिक विश्वास को एक जगह से दूसरी जगह सांझा करता है, जिसके कारण धार्मिक मूल्य विकास में वृद्धि होती है। इसी उपन्यास की नायिका उर्वशी की शादी नहीं हो रही है, उसे कोई योग्य वर नहीं मिल रहा है। सभी घरवाले तथा उसके पड़ोस के बहुत ही नजदीकी रिश्ते में दादा बहुत परेशान हैं। उन्होंने काफी प्रयास किए लेकिन फिर भी कहीं बात नहीं बनी। एक दिन घर में साधु आता है, सब गांव के लोग अपने अपने भविष्य के बारे में पूछने लगते हैं, यह एक प्राचीन काल से चली आ रही प्रथा है। विशेषता हिंदू धर्म में साधु-संतों का एक अलग महत्व रखा रहता है। "उसके हाथ से दान कराओ, ग्रह शांत हो जाएंगे।"[38] उर्वशी के भाग्य के बारे में बताते हुए कहा कि इसके हाथ से दान कराओ, ग्रह शांत हो जाने पर रिश्ता आवश्य हो जाएगा। इस तरह उपन्यास में ग्रह शांति की चर्चा की गई है। हिंदू धर्म में यह तथ्य अत्यंत प्रचलित है कि अगर ग्रह ठीक नहीं है तो व्यक्ति की प्रगति रुक जाती है इसीलिए ग्रहों की शांति के लिए पूजा-पाठ करवाया जाता है। ग्रहों की शांति के लिए पूजा-पाठ तथा व्रत आदि के उपाय बताए जाते हैं, यही तो हिंदू धर्म की विभिन्नता है। हिंदू धर्म अन्य धर्मों से अलग है क्योंकि हिंदू धर्म के अपने-अपने नियम हैं। वर्तमान युग में भी व्यक्ति अपने रुके कार्यों को सफल करने के लिए दान-पुण्य करता है, ग्रहण की शांति के लिए व्रत-उपवास आदि रखता है। लोगों का मानना है कि व्रत करने से देवता प्रसन्न होते हैं तथा देवताओं के प्रसन्न होने से कृपा दृष्टि बनी रहती है। कृपा दृष्टि ही जीवन में सफलता की प्रक्रिया है। इस तरह उपन्यास में भी उर्वशी की शादी के लिए विविध धार्मिक उपाय बताए जाते हैं तथा मामी द्वारा तुलसी की पूजा करके माता से चुनाव में विजय प्राप्ति की कामना की जाती है। इस तरह ही धार्मिक विश्वास व्यक्ति के अंदर आध्यात्मिक प्रवृत्ति उत्पन्न करता है।

उपन्यास में उर्वशी के घर एक बैरागी आता है। घरवाले उर्वशी की शादी के बारे में वैरागी से पूछते हैं। भारतीय हिंदू धर्म के अनुसार विवाह संस्कार कुंडली और संजोग को देखकर संपन्न किया जाता है। इसी संजोग की बात उपन्यास में देखने

को मिलती है। "महाराज हमारी मोडी है उर्वशी उसके ब्याह की चिंता खाई जाती है। देखकर बताना कि शादी ब्याह का संजोग कब बैठता है।"[39] दादा ने वैरागी से उर्वशी के शादी के संजोग के बारे में पूछा। विवाह एक ऐसा संस्कार है जिससे कोई भी अछूता नहीं रह सकता। भारतीय समाज में विवाह को जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष माना गया है। इसी तरह जब एक बेटी को अच्छा घर-वर नहीं मिलता तो मां-बाप को चिंता सताने लगती है। उपन्यास में भी ऐसी ही स्थिति का चित्रण किया गया है। हिंदू समाज में यह धारणा प्रचलित है कि शादी तथा अन्य किसी भी भविष्य की बातों को जानने के लिए पंडितों का सहारा लिया जाता है। पंडितों से विवाह का संजोग तथा शुभ मुहूर्त के बारे में जाना जाता है जैसे हमने पहले चर्चा की है। उर्वशी को दान देने और करने के लिए बोला जाता है ताकि उसकी शादी हो जाए। आज के समय में भी यही उपाय बताए जाते हैं। इस तरह व्यक्ति ने अपने जीवन में धर्म को प्रमुखता दी है। धर्म के द्वारा ही वह अपने जीवन के सभी क्रियाओं को करना चाहता है। वर्तमान समय में भी युवा पीढ़ी भी धर्म की मान्यताओं पर चलने वाली है। इसका कारण यह है कि व्यक्ति को जीवन में विविध संस्कारों से गुजरना पड़ता है जो कि व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत चलते हैं इसीलिए धर्म से जुड़ना व्यक्ति का स्वभाविक कर्म है।

इसी तरह एक कहानी संग्रह में भी शादी की चर्चा हुई है। शैलेंद्र सागर के कहानी संग्रह में संकलित 'सहभागिता' कहानी में अंकिता नाम की एक लड़की है। उसकी उम्र तीस वर्ष तक हो गई है। मुंबई जैसे महानगर में नौकरी करती है लेकिन मां-बाप को उसकी शादी की विशेष चिंता सताती रहती है। "सब ईश्वर का विधान है। जब संजोग होगा। तभी शुभ घड़ी आएगी।"[40] कहानी में अंकिता के पिता उसकी माता को समझाते हैं कि सब ईश्वर द्वारा रचा गया है। ईश्वर को सब पता है कि कब, क्या होगा? जब शादी का संजोग भगवान ने बनाया होता है, तभी सब होता है। चिंता की कोई बात नहीं है। इस तरह कहानी में भी एक मां, अपनी बेटी की शादी की चिंता में डूबी हुई है। अंकिता एक आत्मनिर्भर लड़की है लेकिन फिर भी उसकी शादी जल्दी-जल्दी करवानी होती है। यहां पर रचनाकार ने धर्म के परंपरागत मूल्यों की स्थिति का वर्णन किया है। यह धर्म से जुड़ी एक मान्यता है। धर्म को परंपरागत मूल्यों से संबंधित किया जा सकता है कि धर्म

प्राचीन समय से चला आ रहा एक पहलू है। इस तरह उपन्यास में भी धार्मिक आस्था का चित्रण किया गया है। जिसके घर में धर्म की विशेष निष्ठा होती है वही हिंदू समाज के विविध संस्कारों की चर्चा करता है तथा इस विवाह के बंधन में बंधना चाहता है। इस तरह ईश्वर में विश्वास, आस्था, रीति-रिवाज़ एवं संस्कृति को रेखांकित किया गया है। पात्रों का यही धार्मिक विश्वास मूल्य विकास को बढ़ावा देता है। पात्र जीवन के इस दौर से गुजरते हैं, वहां की आस्था उनके जीवन की अनिवार्यता बनकर उभरती है। धर्म को मानना तथा उसके अनुसार कार्य करना उनकी ज़रूरत बन गई है। उपन्यास में एक पुरुष पात्र अजीत नौकरी के लिए फार्म भरने के लिए घर से बाहर जाता है। घर में अजीत इकलौता ही बेटा है। अजीत को उसके पिता ने अपनी दिन-रात मेहनत करने की कमाई से पढ़ाया है। उर्वशी भी अजीत की बहन है। उर्वशी को नहीं पढ़ाया क्योंकि वह एक लड़की है, गांव में बेटियों को पढ़ाने का प्रचलन नहीं है। इसी कारण उर्वशी को स्कूल नहीं भेजा गया है। उसने घर में ही थोड़ा बहुत पढ़कर पत्र पढ़ने तथा लिखने का ज्ञान अर्जित कर लिया है। अजीत की नौकरी के लिए मां को बड़ी उम्मीद है। "रामायण जू कों सीस झूका और और भइया की नौकरी वरदान में मांग, फिर घर चल।"[41] उर्वशी ने अपने भाई को रास्ते में खाने के लिए परांठे बनाए। माँ ने बाद में उसे रामायण को माथा टेकने के लिए कहा तथा उसके बाद घर चलने को बोला। उसने रामायण की पूजा की तथा अपने भाई की नौकरी के लिए प्रार्थना भी की। उसने रामायण से वरदान मांगा कि मेरे भाई अजीत की नौकरी लग जाए। इस प्रकार रचनाकार ने एक धार्मिक ग्रंथ की चर्चा की है जिसे हिंदू धर्म का उपदेश ग्रंथ कहा जाता है। जिसमें लोगों को एक-दूसरे के साथ परस्पर प्रेम के साथ रहने का उपदेश दिया जाता है। धर्म की वह सब बातें बताई हैं जो कि व्यक्ति को एक समाज में रहने के लिए आवश्यक होती हैं। पात्रों का रामायण पर विश्वास धर्म पर आस्था को व्यक्त करता है। आज भी समाज में कोई व्यक्ति अपने किसी प्रगति कार्य के लिए जाता है तो घर में कोई न कोई धार्मिक क्रियाकलाप किया जाता है। धार्मिक क्रिया को करने से ऐसा माना जाता है कि व्यक्ति जिस काम के लिए जा रहा है, उसे पूर्ण करके वापस आएगा और उसमें किसी प्रकार की बाधा नहीं आएगी।

‘कही ईसुरी फाग' उपन्यास में रज्जो अपनी सास के साथ ससुराल में रहती है क्योंकि इसका पति कहीं प्रदेश में नौकरी करता है। प्रताप अर्थात रज्जो का पति घर आने वाला है। फाग का मौसम है जिसमें तरह-तरह के पकवान बनाए जाने की तैयारी चल रही है। रज्जो की सास ने फाग के दिन पकवान बनाए हैं तो वह रज्जो से किसी अन्य को भी खाना खिलाने का जिक्र करती है। यहां पर सास का मंतव्य कुछ धार्मिक क्रिया से संबंधित होता है "कछु पुन्नधर्म ही कर लै।"[42] प्रताप नहीं आता तो सास ने फगवारे को खाने के लिए बुला लिया। सास ने पुण्य कमाने के लिए फगवारे को खाने पर बुलाया है। उपन्यास में रचनाकार ने धर्म से संबंधित दान की व्याख्या की है। व्यक्ति ने आज भी दान को अपनी जीवन रेखा से जोड़ा हुआ है। दान तो हिंदू धर्म में प्राचीन काल से पढ़ने को मिलता है। इसे आज भी लोगों ने अपनी परंपरा की तरह संजो कर रखा हुआ है। दान देने से भी व्यक्ति में मानवता का प्रचार होता है। उपन्यास में रज्जो की सास दान पुण्य करके धार्मिक मूल्यों को बढ़ावा देती देखी गई है। व्यक्ति धर्म से जुड़े जितने भी कार्य करता है, उसका संबंध धार्मिक विश्वास, आस्था से होता है। एक आस्तिक व्यक्ति ही धर्म का प्रचार-प्रसार करता है, उसका जीवन में प्रत्येक कार्य धर्म को बल देता हुआ ही होता है। वह कार्य करते समय धर्म-अधर्म की परख रखता है। कहीं उससे अनजाने में कोई अनैतिक कार्य न हो जाए जिससे धर्म का हनन होगा। धर्म का हनन होने से धार्मिक मूल्य विघटन होता है। अपने धर्म का पालन करते हुए ही दृश्यों का चित्रण हुआ है।

इसी उपन्यास में रज्जो तथा फगवारे के प्रेम का वर्णन किया गया है। गांव में ईसुरी नाम का फगवारा आया है। ईसुरी जो फागें गाता है उसमें रज्जो का नाम आता है। रज्जो को फागें सुनकर ईसुरी से प्रेम हो जाता है। ईसुरी ने ऐसी फागें गाना शुरू कर दी थी जिसमें ईसुरी भगवान से अपने तथा रज्जो के मिलन के लिए प्रार्थना करता हुआ दिखाया गया है:-

"उनकी होय न हमसो, उनसो होय हमारी
मन आनंद गई मंदिर में, शिव की मूरत ढारी
परसत चरन मनक मुंदरी में, मुख की दिशा निहारी
गिरजापति वरदान दीजिए, जौ मैं मनें बिचारी

ईसुरी सोचें श्री कृष्ण खोंस, श्री बृखमान दुलारी।"[43]

ईसुरी कहता है कि मैंने भगवान से कह दिया जो मुझे कहना था। वह हमसे प्रेम करती है या नहीं लेकिन मैं तो रज्जो से प्रेम करता हूं। वह मंदिर में गई, शिवजी भगवान पर जल चढ़ाया परन्तु अपनी मुंदरी के नग में जो मुख दशा देखी थी, वह उदास निराश ईसुरी की थी। रज्जो ने मंदिर में जाकर गिरजापति से वरदान मांगा कि उसकी मनोकामना पूर्ण हो जाए। इस प्रकार उपर्युक्त पंक्तियां ईसुरी द्वारा गायी जाती हैं, जिसमें उन्होंने रज्जो द्वारा की गई प्रार्थना को व्यक्त किया है। उन्होंने अपने प्रेम के लिए भगवान से प्रार्थना की है। इस तरह ईसुरी एक फगवारा है लेकिन उसमें भी धार्मिक आस्था देखने को मिलती है। भारतीय संस्कृति में ईश्वर से वर मांगना एक प्राचीन काल की परंपरा है, जिसे आज आस्तिकता के उदाहरण में धर्म से जोड़ा गया है। पति के घर से चले जाने पर रज्जो को ईसुरी से प्रेम हो जाता है। उसे प्रताप की बिल्कुल याद नहीं आती क्योंकि उसके पास यादें संजोने के लिए ईसुरी होता है। उपन्यास में एक मां को अपने पुत्र के लिए विरह की अवस्था में देखा गया है। वह बार-बार महसूस करती है कि प्रताप आने वाला है। सास को बहू के अकेलेपन को देखकर अत्यंत दुख होता है। यहां पर प्रताप की मां भगवान से प्रार्थना करती है। "हे महामाई, मोरे प्रताप की दुल्हन खों पिरताप से मिलइओ, तोरा जस रहे।"[44] सास ने बहू की बाहों में माता की फोटो बांधी तथा मां से प्रार्थना की कि मेरी रज्जो को उसके पति से मिला देना। इन दोनों को मिला देने से मैं तुम्हारा उपकार कभी नहीं भूलूंगी। मां बार-बार माता से रज्जो तथा प्रताप के मिलन के लिए विनती करती है। इस तरह रचनाकार ने एक मां की ईश्वरीय आस्था को व्यक्त किया है। मां को पूरा विश्वास है कि बहू की बाजू पर माता की फोटो बांधने से उसकी इच्छा अवश्य पूरी होगी। वर्तमान समय में भी माताओं द्वारा अपने प्रदेश गए बच्चों को इसी तरह चिंतित होते देखा जा सकता है। माताएं अपने बच्चों की सलामती के लिए भगवान से प्रार्थना करती हैं। आज के समय में भी धार्मिक मूल्य विकसित हो रहे हैं। जिनके विकसित होने का प्रमुख कारण लोगों का धर्म में वही विश्वास है जो कि आज से कई वर्षों पहले था। इस उपन्यास में धार्मिक मूल्य विकास को दिखाया गया है। कोई भी पात्र चाहे किसी भी रूप में हो लेकिन ईश्वर को याद करता है। चाहे वे फागों के रूप में हो या प्रत्यक्ष रूप में ईश्वरीय प्रार्थना हो। ईश्वर

चाहे किसी भी रूप में याद किया जाए, वहां पर धार्मिक मूल्य विकास ही देखने को मिलेगा। उपन्यास में धार्मिक आस्था के अनुसार लोगों की ईश्वर पर निष्ठा होती है कि हम भगवान से जो कुछ मांगें वह हमें मिलेगा। ऐसा ही एक दृश्य उपन्यास में अंकित हुआ है। रामदास दाऊ को तीन बेटियां हैं, चौथी बार फिर से उनकी पत्नी गर्भवती होती है। चौथी बार फिर से उन्हें बेटी पैदा होती है "रामदास दाऊ जू विचारे सब तरह से समरथ हैं, पर भगवान की गैल में मात खा गए।"[45] गांव में सब लोग यही चर्चा करते हैं कि रामदास के पास किसी भी चीज़ की कमी नहीं है लेकिन बेटे की कमी भगवान ने पूरी नहीं की। उन्हें कोई भी किसी बात के लिए पीछे नहीं हटा सकता था परंतु भगवान के आगे हार गए। इस तरह उपन्यास में भगवान पर जो व्यक्ति का विश्वास होता है कि उसने भगवान से जो मांगा उसे मिल जाएगा। एक बेटा होना तथा न होने पर दुख व्यक्त किया जा रहा है। लोगों ने अपनी धारणा ऐसी बना ली है कि अच्छा तथा बुरा ईश्वर की मर्जी से होता है। यहां पर यह नहीं अध्ययन हुआ कि यह सब व्यक्ति के कर्मों का फल होता है। व्यक्ति ने जैसा बोया, वैसा ही काटा। इसमें ईश्वर ने कुछ नहीं किया। इस तरह उपन्यास में लोगों की धार्मिक आस्था का वर्णन किया है। यह सब विचार लोगों की धार्मिक आस्था के कारण उत्पन्न होते हैं।

'फ़रिश्ते निकले' उपन्यास में उजाला नाम की एक लड़की है, जिसकी मां नहीं है। बाप तथा बेटी साथ में रहते हैं। उनके पास एक गाड़ी है उजाला का पिता इतना ईमानदार व्यक्ति है कि किसी के एहसान को लेकर नहीं जीना चाहता है। उजाला को पता है कि उसका पिता कर्ज को चुकाने के लिए अपनी गाड़ी को न बेच दे इसीलिए उजाला भगवान से प्रार्थना करती है कि उनकी गाड़ी उनके पास रहे तथा इसके पीछे कोई दलाल न लगे। यह उसकी धार्मिक आस्था है कि भगवान के पास प्रार्थना करने से वैसा ही होता है जैसा उसने चाहा होता है। इस तरह गांव में एक पूजा होती है। रतन दादी की बड़ी बहू मेले में पूजा के लिए नहीं जाना चाहती क्योंकि वह मायके जाना चाहती है। "सूअरिया ! पूजा में नहीं जाएगी तो अगले जन्म में सुअरिया की जौन मिलेगी।"[46] रतन दादी ने कहा कि पूजा में न जाने पर अगले जन्म में सूअर के रूप में पैदा होगी। पूजा में न जाने से भगवान का अपमान होगा। जिसके कारण उसे अगले

जन्म में मनुष्य योनि नहीं मिलेगी। रतन दादी का यह धार्मिक विश्वास है कि व्यक्ति को पूजा का निरादर करने से ऐसा जन्म मिलता है। यह धार्मिक विश्वास व्यक्ति को परंपरा से ही मिले होते हैं। उन्हें अपने से पहले रहने वाले व्यक्तियों से पता चलता है कि ऐसा करने से ऐसा होता है। इस प्रकार धार्मिक आस्था परंपरागत मूल्य से भी संबंधित है। उपन्यास में पात्रों की धार्मिक आस्था, विश्वास और निष्ठा को विविध पहलुओं द्वारा स्पष्ट किया है। प्रत्येक उपन्यास के पात्रों की अपनी-अपनी आस्थाएं हैं। सभी उपन्यास के पात्र अपनी धार्मिक आस्था को लेकर ही जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। धार्मिक विश्वास तथा आस्था ही मूल्य के अंतर्गत आए हैं। इस प्रकार मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में धार्मिक आस्था का एक सटीक रूप देखने को मिलता है तथा वर्तमान समय में भी लोगों की यही धार्मिक आस्था है।

6.1.2 सेवाभाव को धर्म समझना

भारतीय संस्कृति में बड़ों की सेवा को मूल्यों की श्रेणी में रखा गया है। दूसरों की सेवा करना धार्मिक मूल्य के अंतर्गत आता है। इसी तरह 'झूलानट' उपन्यास में बड़ों की सेवा को धर्म माना गया है। शीलो, सुमेर की पत्नी होती है। वह सुमेर द्वारा त्याग दी जाती है क्योंकि उसका रंग-रूप अच्छा नहीं। सुमेर को उसके साथ रहना अच्छा नहीं लगता इसीलिए वह उसे छोड़कर शहर में रहता है। शीलो अपने ससुराल को छोड़कर मायके नहीं जाना चाहती। "अपने चरणों से अलग न करना, अम्मा। इस घर में पड़ी रहने दो, मैं खेत की घास...बुरी घड़ी में जनमी, तुम्हारी चाकरनी बनकर रहूंगी।...रूखी सूखी खाकर घड़ी काट लूंगी।"[47] शीलो की सास उसे कहती है कि तू मायके चली जा लेकिन शीलो ससुराल में रहकर अपनी सास तथा देवर की सेवा करना चाहती है। बहू को ऐसे देखकर सास को बहुत दुख होता है। सास, बालू को उसे मायके छोड़ने को कहती है। शीलो ससुराल में रहकर अपने सास की सेवा करना ही अपना धर्म मानती है। अम्मा से यहीं रहने की आज्ञा मांगती है। वह खेतों के काम को कर लेगी लेकिन अपने मायके नहीं जाएगी। शीलो का मानना है कि मायके में रहकर उसे वहां भी चार बातें सुनने को मिलेंगी, इससे अच्छा है कि जहां शादी करके आई है वहीं पर वह अपना जीवन व्यतीत कर ले। शीलो स्वयं को कोसती है कि उसका ऐसी बुरी घड़ी

में जन्म हुआ जिसके कारण उसे पति ने त्याग दिया। वह सास की नौकरानी बनकर भी रहने को तैयार है। शीलो पूरी जिंदगी अपने देवर बालू के बच्चों को पाल-पोस देगी तथा उसकी दुल्हन की नौकरी करेगी। उसे जैसा खाने को देंगे रूखी-सूखी खाकर घड़ी काट लेगी। मायके जाने से अच्छा है अपनी सास की सेवा कर ले। मायके में भी सवाल जवाब होंगे, वहां भी भाई-भाभियों की सुननी पडेगी। दिन-रात की सूली चढना पड़ेगा, इस तरह शीलो सास की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझती है। वह स्वयं को भरा बुरा कहती है लेकिन इसके लिए किसी अन्य को बूरा नहीं कहती। शीलो ने अपने दिल को पत्थर बना लिया है। उसने अपने दिल में पति के प्रेम के लिए कोई जगह नहीं रखी परंतु वह सास की सेवा करनी चाहती है। भारतीय समाज में ऐसे कई उदाहरण दिखाई देते हैं जिसमें बहू ने अपनी सास की सेवा को धर्म माना हो। भारत में बहुत ही प्रसिद्ध कथा रामायण में भी देखने को मिलता है कि राम वन-गमन के समय लक्ष्मण अपने भाई के साथ चला जाता है तथा उर्मिला चौदह वर्षों तक अपने सास की सेवा अपने पति के बिना ससुराल में रहकर करती है। उर्मिला भी एक नई नवेली दुल्हन होती है लेकिन वह बिना पति के इतने सालों तक अपनी तीन सासो के साथ महल में रहती है। यह सबसे बड़ा बलिदान माना गया है, जिसने अपने पति को छोड़कर सेवा धर्म का चयन किया। इस तरह यह एक परंपरागत धार्मिक मूल्य है। उपन्यास में शीलो द्वारा अपनी परंपरा का निर्वाह किया गया है। यहां पर शीलो का परस्पर प्रेम, सहानुभूति नज़र आई है। उसका अपने ससुराल से लगाव है तभी तो वह मायके में नहीं जाना चाहती है। उसे त्याग दिया गया है फिर भी वह सुमेर की मां तथा परिवार की आजीवन सेवा करना चाहती है। उसमें सेवाभाव सर्वप्रमुख है उसी के लिए शीलो ने अपने माँ-बाप के पास जाना आवश्यक नहीं समझा। आज के समय में व्यक्ति में सेवाभाव है लेकिन ऐसा नहीं कह सकते कि प्रत्येक व्यक्ति के अंदर सेवाभावना है। आज की दुनिया अपने-अपने में इतना व्यस्त है कि कोई किसी की सेवा करना आपका धर्म नहीं मानना चाहता। इस प्रकार शीलो का चरित्र परंपरागत धार्मिक मूल्य विकास को बढ़ावा देता है।

'इदन्नमम' उपन्यास में बऊ तथा मंदा की जीवन गाथा का वर्णन किया है। दोनों दादी-पोती अपने घर को छोड़कर दूसरे गांव में शरण लेती हैं। यह श्यामली में

दादा पंचम सिंह के यहां रहती हैं। पंचम सिंह दादा गांव के सरपंच है तथा प्रत्येक व्यक्ति की भलाई करना भी अपना धार्मिक कर्तव्य मानते हैं। वह बऊ तथा मंदा को भी अपने संरक्षण में रखकर परोपकार समझते हैं "एक बेर सुनो की हजार बेर, सरणागत को ठुकराना हमारा धर्म नहीं है भाई। बऊ विपता की मारी आई, बच्ची को सुरक्षित रखना तो हर हाल में है।"[48] दादा ने अपने पूरे परिवार को समझा दिया कि इनको पूरी तरह सुरक्षित रखना हमारी जिम्मेदारी है। उन्होंने अतिथियों को भगवान के रूप में स्वीकार किया है। वे घर में आए शरणागत को ठुकराना नहीं चाहते। वे उनकी सेवा करना अपना नैतिक धर्म मानते हैं। इस तरह दादा के चरित्र में अतिथि देवो भव: तथ्य देखने को मिलता है। एक मददगार की सहायता करना दादा का धार्मिक मूल्य कहा जा सकता है। वर्तमान समय में भी एक-दूसरे की सहायता करते हुए लोगों को देखा जाता है। इस तरह आज भी मानवता लोगों में व्याप्त है। लोग एक-दूसरे के दुख-दर्द को जानते तथा समझते हैं। बऊ ने भी दादा के साथ अपनी सारी व्यथा कथा बताई जिसके कारण दादा ने उन दोनों की रक्षा करना अपना धर्म माना है। इस तरह दादा के हृदय में सेवा का भाव देखने को मिलता है। उनके घर में उनकी इस अतिथि सत्कार की नीति का विरोध भी किया जाता है। उन्हें यहां तक सुनने को मिलता है कि सभी लोगों की सेवा करने का ठेका क्या आप ने उठा रखा है? दादा ने उन सब की बातों को न मानकर बऊ तथा मंदा की हृदय से सेवा तथा सुरक्षा की है। उपन्यास में एक डाकू प्रवृत्ति का व्यक्ति है लेकिन उसमें भी सेवाभाव की नीति देखने को मिलती है। "गोविंद सिंह, इस घर में पानी भी नहीं पीना चाहते हम। मानसो की ऐसी बेकदरी, इतनी बेज्जती अपने डकैत जीवन में भी कभी नहीं देखी।"[49] उपन्यास में दादा का छोटा भाई गोविंद सिंह को बऊ तथा मंदा का घर पर ऐसा रहना अच्छा नहीं लगता। गोविंद लालची प्रवृत्ति का व्यक्ति है वे धर्म की बातों को समझना नहीं चाहता है। उपन्यास में एक डाकू डबल नाम का पात्र है जोकि गोविंद सिंह की इस प्रवृत्ति को देखकर उसे भला बुरा कहता है कि इसमें मानवता नाम का गुण नहीं है। वे गोविंद सिंह को फटकारते हैं तथा इनके घर का पानी तक पीने को इन्कार करते हैं। उनका मानना है कि वे एक डकैत है लेकिन फिर भी कभी उन्होंने किसी मनुष्य प्राणी की बेकद्री नहीं की। उनका कोई घर परिवार नहीं है फिर भी उनकी बऊ तथा मंदा

के प्रति सहानुभूति है। इस उपन्यास में व्यक्ति के सेवाभाव को दिखाया है। दादा अपने भाई के विरुद्ध होकर भी बहुत बऊ और मंदा की सहायता करते हैं। यहां पर उन्होंने धार्मिक कर्तव्य को निभाया है। एक-दूसरे के प्रति प्रेम ही व्यक्ति के आतरिंक रूप में सेवा के भाव को दर्शाता है। आज के समय में भी ऐसे कई संस्थान बनाए जा रहे हैं या बनाए गए हैं जहां पर ज़रूरतमंदों की सहायता की जाती है। ऐसी युवा पीढ़ी अभी इसमें शामिल होती हैं। युवाओं में आज के समय में सेवा भाव का आना एक परंपरा के रूप में भी ग्रहण किया जाता है क्योंकि युवा अपनी पुरानी पीढ़ियों के ऐसे संस्कार ग्रहण करती हैं तथा उन्हें अपने जीवन में लागू करते हैं। दादा पंचमसिंह तो गांव के सरपंच हैं उनका तो धर्म है सेवा करना है लेकिन साथ में एक डाकू का चरित्र सामने आया है जिसके अंदर सेवा भाव की प्रवृत्ति को देखा गया है जोकि गोविंद सिंह की नीति का विरोध करते हैं।

'अल्माकबूतरी' शीर्षक उपन्यास में सेवाभाव का चित्रण किया गया है। कदमबाई कबूतरी तथा उसका बेटा राणा कबीले में रहते हैं। इनका कबीला जंगलों में निवास करता है। इनके पास कोई ज़मीन नहीं है। यह लोग चोरी, डकैती करके ही अपनी जीविका कमाते हैं। मंसाराम कज्जा समाज से है जिसके पास खेती है, घर है। मंसाराम राणा तथा कदमबाई को आश्रय के लिए ज़मीन देकर उन दोनों की सेवा करने का भाव रखता है "कहते हैं थोड़ी सी धरती कबूतरी को दे दें तो क्या घट जाएगा? इतना अन्न दान होता है, मन दो मन निकाल दूं तो क्या तुम सब भूखे मर जाओगे? किसान सदा बांट कर खाता है आया है।"[50] मंसाराम अपनी ज़मीन में से कुछ हिस्सा कदमबाई को देना चाहता है। उसका मानना है कि हमारे पास तो इतनी ज़मीन है और इतना अनाज हो जाता है, अगर उसमें से मैं थोड़ा सा हिस्सा कदमबाई को दे दें तो उन्हें कोई कमी नहीं आएगी। किसान होने के नाते वे मिल बांट कर खाने की धारणा को अपनाते हुए दिखाए गए हैं। भारतीय संस्कृति में किसान को अन्न का देवता माना जाता है। किसान अगर खेतों में मेहनत न करें तो जनता अपने पेट को कैसे भर सकती है? इसीलिए हमेशा स्वयं के बारे में ही नहीं सोचना चाहिए बल्कि सेवाभाव को हृदय में लाकर सब की भलाई करनी चाहिए। राणा डेरे में नहीं रहना चाहता है क्योंकि उसका मन करता है कि वह पक्की ईंटों के घर में रहे। कदमबाई राणा

को बताती हैं कि हमें इसी घर में ही रहना होगा, यहां के अतिरिक्त कहां जाएंगे? राणा बोलता है कि कर्ण के पिता उन्हें घर बनाने की बोल रहे थे। इस तरह उपन्यास में मंसाराम दूसरों की मदद करना अपना धार्मिक कर्तव्य मानता है। ऐसी भावना ही मानवता को दर्शाती है। एक अन्य पात्र राजा काका मंसाराम के पास आता है तथा मंसाराम की प्रशंसा करते हैं। मंसाराम को कदमबाई की देखभाल के लिए बुलाते हैं। राजा काका मंसाराम को सेवा करने का मौका देते हैं क्योंकि कदमबाई लाचार स्त्री है, डेरे में भी राणा की वजह से सम्मान नहीं रहा। इसीलिए राजा काका चाहते हैं कि कदमबाई को मंसाराम अपने घर में रख लें। इस तरह उपन्यास में सेवाभाव का परिपूर्ण चित्र देखने को मिलता है। इसी तरह सेवा भाव से परिपूर्ण होकर हम दूसरों के सामने मिसाल कायम कर सकते हैं जिससे पूरे समाज को उत्थान व तरक्की के मार्ग पर सामूहिक रूप से आगे बढ़ाया जा सके। यही सेवाभाव का व्यवहार व्यक्ति की समाज में पहचान बनाता है। व्यक्ति की निस्वार्थ भावना को सभी लोगों के सामने लाता है। सेवाभाव एक ऐसी सर्वोत्तम भावना है जो कि व्यक्ति को सच्चा मानव बनाती है। निस्वार्थ भाव से की गई सेवा से किसी का भी हृदय परिवर्तन किया जा सकता है। पीछे वर्णित किए गए 'झूलानट' उपन्यास में निस्वार्थ सेवा का भाव भी देखने को मिला है। शीलो का पति उसे छोड़कर चला गया है लेकिन फिर भी उसके हृदय में सास तथा परिवार की सेवा करने का भाव होता है। सेवा अवसाद की सबसे बड़ी दवा है। दादा पंचम सिंह भी बऊ तथा मंदाकिनी की भी निस्वार्थ भाव से सेवा करते हैं। इस प्रकार उपन्यास में लेखिका ने सेवाभाव को पात्रों द्वारा चित्रित किया है। उपन्यास में आए ऐसे उदाहरण व्यक्ति के आदर्शों को प्रस्तुत करता है। परोपकार भी सेवाभाव का ही भाग है। दूसरों का उपकार करना उपन्यास में कई जगह प्रस्तुत किया गया है। इस तरह उपन्यास में सेवाभाव को धार्मिक मूल्य के अंतर्गत रखा गया है। जिसका निरंतर रूप से विकास हुआ है। कोई भी पात्र ऐसा नहीं है जो कि धार्मिक मूल्यों में सेवाभाव का उल्लंघन करता है चाहे यह सेवा भाव किसी भी कारण व्यक्ति के अंदर उपजा है लेकिन सामान्य रूप में पात्रों के चरित्र में दिखाई देता है।

6.1.3 धर्म में अंधविश्वास

धर्म एक सर्व व्यापक धारणा है जिसमें विभिन्न देवताओं की पूजा विधि शामिल रहती है तथा साथ में अन्य कर्मकांड भी होते हैं। हिंदू धर्म में यह अंधविश्वास अन्य धर्मों की अपेक्षा अधिक पाए जाते हैं। जिसमें भूत-प्रेत तथा तांत्रिक साधना शामिल रहती है। उपन्यास 'इदन्नमम' में ऐसी भूत-प्रेत संबंधी बातों का जिक्र मिलता है। बऊ, मंदा को समझाती है "खसबोइया तेल जिन लगाया करो। ऊपर की हवा हो लेगी संग। भूत पिरेत का इस उम्र में बड़ा डर रहता है बेटा। चढ़ती उम्र को ही ले दाबता है पिरेत।"[51] मंदा ने तेल लगाया है बऊ जिसे लगाने से इंकार करती है। बऊ का मानना है कि ऐसी सुगंधित तेल लगाने से इस उम्र में भूत-प्रेत का साया लग जाता है। इस उम्र में भूत-प्रेत लग जाए तो सारी उम्र नहीं छूटता। इस प्रकार उपन्यास में ऐसे अंधविश्वासों की चर्चा हुई है जिसके कारण व्यक्ति साधु-जोगियों के चंगुल में फंस जाते हैं। लेखिका ने लोगों के अपने विश्वासों की चर्चा की है जो कि लोगों द्वारा स्वयं बनाए गए हैं। भूत-प्रेतों को किसी ने आज तक नहीं देखा लेकिन मन में भूतों की आकृति बनाता हुआ समाज आज भी देखने को मिलता है। आज भी सुगंधित चीजें लगाने जैसे पाउडर, क्रीम, तेल, इत्र से संबंधित अंधविश्वास समाज में प्रचलित है। लोग ऐसे कई स्थानों पर जाने से डरते हैं क्योंकि उनकी मान्यता है कि वहां पर जाने से भूत-प्रेत लग जाते हैं। इस तरह समय के साथ-साथ लोगों के अपने अन्य अंधविश्वास बन गए हैं। ऐसे ही तथ्य बऊ तथा मंदा की वार्तालाप से स्पष्ट होते दिखाई दिए हैं।

उपन्यास 'त्रियाहठ' में भुवन की शादी एक पागल लड़के विजय सिंह के साथ कर दी जाती है। जहां पर विजय को ठीक करने के लिए अस्पताल का नहीं बल्कि तंत्रों-मंत्रों का सहारा लिया जाता है। घर में साधुओं को बुलाकर उसे ठीक करने के लिए अनेक तंत्र-मंत्र किए जाते हैं। "वही भूतविद्या। जूता, कड़ुवा धुआ, मारपीट और मंत्र तंत्र।"[52] उसे साधुओं के पास बिठाया जाता तथा भूत को दूर करने के लिए मंत्र बोले जाते हैं। विजय को मारपीट द्वारा ठीक करने की कोशिश की जाती है। जूतों द्वारा भी पीटा जाता था। कड़वा धुंआ दिया जाता था तथा ज़ोर-ज़ोर से मंत्रों का उच्चारण किया जाता था। इस तरह उपन्यास में ऐसे अंधविश्वासों की चर्चा की है जिनके द्वारा व्यक्ति के मानसिक रोग को ठीक करने की कोशिश की जाती है। ऐसे-ऐसे उपाय किए जाते हैं जिससे तो व्यक्ति

की जान भी जा सकती है, मारपीट की जाती है। डॉक्टरों द्वारा किए जाने वाले इलाज को तांत्रिक विद्या से ठीक करने की कोशिश की गई है। यह अंधविश्वास मनुष्य को परंपरा के रूप में ही मिलते हैं। जिस पर उनके पूर्वजों का विश्वास होता है, तभी यह पीढ़ी दर पीढ़ी अपना लिए जाते हैं। लोगों की इन विश्वासों के ऊपर निष्ठा हो जाती है जिन्हें यह किसी भी रूप में छोड़ना नहीं चाहते। अगर वह छोड़ दिए जाए तो धार्मिक अंधविश्वासों का लुप्त होना धीरे-धीरे स्वभाविक हो जाएगा। आज के समय में भी समाज चाहे पढ़-लिख गया है लेकिन वह भी परंपरा में मिले अंधविश्वासों को छोड़ना नहीं चाहते। अंधविश्वास को ऐसे संभाल के रखा जा रहा है जैसे कि विरासत में मिले आभूषणों को। इस तरह उपन्यास में अंधविश्वासों का वर्णन मिलता है।

'निलय उपाध्याय' के 'पहाड़' उपन्यास में भी धर्म से संबंधित अनेक अंधविश्वास देखने को मिलते हैं। यहां शहर की अपेक्षा गांव में रहने वाले कई प्रकार की रूढियों से घिरे हुए देखें हैं उदाहरण के लिए गांव वाले भूत-प्रेत आदि बातों को मानने के कारण उनसे बचने के लिए नज़र बट्टू, ताबीज, काला टीका आदि का प्रयोग करते हैं। इसी तरह उपन्यास में विदाई के समय दशरथ मांझी को रास्ते की डायनों से बचाने के लिए उसकी सास उसे काला टीका लगाती है "सास कजरौटे से काजल निकालकर दशरथ को लगाने आई थी...राह में दामाद को किसी की नज़र न लग जाए।...सास के साथ खड़ी दो-तीन औरतों ने इस टोले और रास्ते की डायनों के बारे में बताया तो उसने चुपचाप काजल लगवा लिया।"[53] इस तरह उपन्यास में भी भूत-प्रेतों अर्थात डायनों से बचने के लिए अनेक लोक विश्वासों का प्रयोग किया जाता देखा गया है।

'चाक' उपन्यास में चंदन गांव को छोड़ कर अपने ताया के पास शहर में पढ़ने के लिए जा रहा है। सारंग, चंदन के लिए बहुत चिंतित होती है, उसका मन बिल्कुल नहीं होता कि चंदन गांव को छोड़ कर शहर जाए। सारंग को गांव की एक मांगो दादी ने उसकी सलामती के लिए ताबीज दिया था। सारंग ने रंजीत को ताबीज दिया "लो यह, मांगो दादी ने सलामती का ताबीज दिया था। धागा न ही मिल रहा है। वही डोरा लेकर इसके गले में बांध आना।"[54] उसका मानना है कि यही ताबीज चंदन की तलवार बनकर रक्षा करेगा। यही अब उसकी ढाल है।

इस तरह उपन्यास में धार्मिक अंधविश्वास देखने को मिले हैं। गांव के लोगों का यही विश्वास होता है कि गले या बाजू में ताबीज बांधने से उस पर किसी बुरी शक्ति का साया नहीं पड़ता। भूत-प्रेत व्यक्ति से दूर रहें इसीलिए ऐसे विश्वास लोगों ने बना रखे हैं। आज के युग में भी चाहे युवा पीढ़ी ही है लेकिन उनका विश्वास भी भूत-प्रेतों में है। आज भी ऐसे ताबीज तथा भभूतों का प्रयोग किया जाता है। लोगों का मानना है कि ताबीज पहनने से बुरी शक्तियां व्यक्ति के नज़दीक नहीं आती हैं। भारतीय संस्कृति अनेक जातियों के अपने धार्मिक विश्वासों व अंधविश्वासों का मिश्रण है। जिसमें तंत्र-मंत्र, जादू-टोना तथा धार्मिक अंधविश्वास प्राचीन इतिहास के काल से चले आ रहे हैं। हमारे देश में आर्यों के आने से पहले ही यहां के मूल निवासी अनेक धार्मिक अंधविश्वासों में उलझे हुए थे। शिवप्रसाद सिंह का उपन्यास 'वैश्वानर' में ऐसे ही धार्मिक अंधविश्वासों का जिक्र मिलता है "वैश्वानर में लेखक ने उल्लेख किया है कि लक्मा रोग की महामारी फैलने पर मुंडा आदिवासी नींबू की फांके और लाल मिर्च पिरोकर लटकाते हैं तथा मिट्टी से बने छोटे कटोरो में दही-मासं को रखकर बलि के रूप में डंडों पर लटकाते हैं।"[55] इस तरह लेखक ने उपन्यास में आए अंधविश्वासों को दिखाया है। लोगों का ऐसा विश्वास बन गया है कि महामारी का इलाज भी ऐसे टोने-टोटके के द्वारा किया जा सकता है। व्यक्ति ऐसे कार्यों को करके अपनी परंपरा का निर्वाह करते दिखाए गए हैं। लोग अपनी परंपराओं को छोड़कर उनका अपमान नहीं करना चाहते हैं। ऐसी परंपराओं का निर्वाह करके अपनी भारतीय संस्कृति का परिचय देते हैं। जिस समाज या समुदाय में रहते हैं लोग उसी का परिचय अपने विश्वासों द्वारा अन्य लोगों को करवाते हैं। वर्तमान समय में भी कोरोना वायरस में किए गए अंधविश्वासों को देखा गया है। लोगों ने बीमारी से बचने के लिए टोने-टोटके का सहारा लिया। लोगों को इतना पता था कि बीमारी से कैसे बचा जाए? इसके लिए उन्होंने अपने समाज में प्रचलित तंत्र-मंत्रों की सहायता भी ली। लोगों ने साधु योगियों को दान करके कोरोना से बचने का उपाय किया। इस प्रकार लोगों की मान्यता है कि महामारी को दूर करने के लिए तंत्र-मंत्रों को लिया जा सकता है। लोगों ने दवा से ज्यादा अपने बनाए गए अंधविश्वासों पर विश्वास किया। इस प्रकार लेखक और लेखिका ने उपर्युक्त अंधविश्वासों का जिक्र किया है। वैसा ही वर्तमान युग में भी देखने को मिलता

है। आज के वैज्ञानिक युग में भी लोगों की ऐसी सोच विद्यमान है। कहने का भाव है कि जहां का जैसा वातावरण होगा लोगों की मानसिकता भी उसी तरह की होगी।

'चाक' उपन्यास में सारंग, चंदन को घर से बाहर भेजने के लिए उसकी नज़र भी उतारती देखी गई है। "अपनी मुट्ठी में दबा कर राई, नौन और मिर्च ले आई चलती बेला, लपककर बेटे की बराबरी में पहुंची, सात बार उतारा और पिछवाड़े को मुट्ठी उछाल दी।"[56] सारंग ने चंदन की नज़र उतारी ताकि उस पर बुरी शक्तियों का असर न हो। एक मां की बच्चे के लिए चिंता व्यक्त होती दिखाई गई है। इस तरह सारंग का विश्वास है कि ऐसा टोटका करने से चंदन का स्वास्थ्य ठीक रहेगा। उस पर कोई भूत-प्रेत निवास नहीं करेगा। ऐसा करने से बुरी शक्तियों को राई, नमक तथा मिर्ची से सात बार उछाल कर बाहर कर दिया जाता है। ऐसा अंधविश्वास आज के समय में भी प्रचलित है, चाहे बड़ा हो या बच्चा। सब की नज़र उतारने के लिए इसी टोटके का सहारा लिया जाता है। कई बार बच्चा अधिक रोता है या बीमार हो जाता है तो माना जाता है कि उसे किसी बुरी शक्ति या व्यक्ति की बुरी नज़र लग गई है। जिसे दूर करने के लिए बच्चे के ऊपर से ऐसे टोने-टोटके किए जाते हैं। ऐसा उपाय करने से असर भी होता देखा गया है। तभी तो लोगों की मान्यता बनी है। इसी कारण लोगों का जिस बात पर फायदा हुआ उन्होने उसे संजोकर रख लिया। यही विश्वास पीढ़ी दर पीढ़ी आज तक चलते आए हैं। इस तरह कुछ ऐसे अंधविश्वास हैं जिसे बहुत ही कीमती मानकर प्रयोग में लाया जाता है।

'अल्माकबूतरी' उपन्यास में भी कबूतरी कबीले में भूत-प्रेतों का वर्णन देखने को मिलता है। कदमबाई का बेटा राणा बीमार हो गया है, उसके पेट में दर्द हो गया है। यह कबूतरा कबीला जंगलों में रहता है तथा भोजन में मांस को ग्रहण करते हैं "हाय देवी माता, जमुनी चुड़ैल ने धर दबाया"[57] कदमबाई ने डेरे में एक महिला को राणा के पेट दर्द के बारे में बताया तो उसने राणा पर भूत-प्रेतों के साया को बताया। उसने बताया कि राणा पर किसी चुड़ैल की बुरी शक्ति आ गई है। भजनी कबूतरा समाज में रहती है लेकिन इन लोगों के रहन-सहन तथा खान-पान पर कज्जा समाज का प्रभाव पड़ गया है। कज्जा लोगों के धार्मिक

विश्वासों पर इनका भी विश्वास बनने लगा है, जिसके कारण खानपान की बातों से होने वाले असर को भूत-प्रेतों से जोड़ा है। इस तरह राणा के ऊपर भी चुड़ैल का वास हो गया, तभी तो उसके पेट में दर्द हो रही है। यहां पर समाज के प्रभाव का वर्णन किया है। कज्जा लोगों के संपर्क में आने से यह कबूतरा लोग भी धार्मिक अंधविश्वासों में विश्वास करते दिखाए गए हैं। इस प्रकार उपन्यास साहित्य में धार्मिक अंधविश्वासों का लेखिका ने खंडन नहीं किया है और न ही इनके प्रति पात्रों की नकारात्मक सोच को व्यक्त किया है। लेखिका ने व्यक्ति के स्वास्थ्य संबंधी भी इन तंत्र- मंत्र और टोटके का सहारा लिया है, जिनका आज के युग में भी प्रचलन है। व्यक्ति इन टोने-टोटके से स्वयं को अछूता नहीं कर पाया है। यहां तक कि एक बात अन्य नज़र आई है कि पात्र इन टोने-टोटके को आगामी खुशी के लिए करते नज़र आए हैं ताकि व्यक्ति पर किसी अन्य बुरी चीजों का असर न पड़ जाए। कहने का भाव है कि लेखिका ने इन कुरीतियों को समाप्त करते हुए पात्रों का चित्रण नहीं किया है। पात्र परंपरा के रूप में धार्मिक अंधविश्वासों का पालन करते नज़र आए हैं।

6.2 सांस्कृतिक मूल्य

समाज और संस्कृति का गहरा संबंध है। किसी भी समाज की पहचान उसकी संस्कृति से होती है। संस्कृति का विकास समाज के मनुष्य की गतिविधियों द्वारा होता है। संस्कृति समाज में प्रचलित रीति-रिवाजों, आचरण व रहन-सहन आदि का बोध कराती है। इसीलिए संस्कृति की आदर्श स्थिति का विवेचन मूल्यों के आधार पर किया जाता है। "मानव के जीवन मूल्यों का सीधा संबंध संस्कृति से होता है और सभ्यता के साथ जीवन मूल्यों का संबंध संस्कृति द्वारा ही संभव है।"[58] संस्कृति स्वयं को साहित्य, सामाजिक संस्थाओं और व्यवहारों आदि द्वारा सजाती है। सांस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति हमारे विचारों और व्यवहारों से होती है। ये विचार-व्यवहार और संस्कार हमें हमारे परिवार द्वारा प्राप्त होते हैं। इन संस्कारों को लेकर ही हम समाज में प्रवेश करते हैं। इस प्रकार हमारी भारतीय संस्कृति मनुष्य को सुसंस्कृत बनाती है। संस्कृति में परंपरा से चले आ रहे व्रतों तथा त्योहारों का भी वर्णन होता है। भारतीय जन-जीवन में नगर संस्कृति तथा ग्राम संस्कृति के बीच अधिक निकटता नहीं

थी। गांवों में परंपरागत और नगर आधुनिक सभ्यता के वैज्ञानिक साधनों की व्यवस्था में विचारों से आधुनिकता थी। यातायात के साधनों, सड़कों, बिजली, तार, शिक्षा, रेडियो, रेलगाड़ी आदि के द्वारा नगरों तथा ग्रामों के अंतर को कम करने का प्रयास किया गया है। नगरों की तरह ग्रामों में भी विभिन्न तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम शुरू किए गए। इन लोकोत्सवों में भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं जन-जीवन की विविधता में एकता भावना प्रकट की जाती रही थी। इस प्रकार भारतीय समाज में सांस्कृतिक परिवेश में नवीन धारणाएं दृष्टिगोचर होती रही हैं। हिंदी साहित्य कोश में संस्कृति का अर्थ साक्षात् चिंतन और कलात्मक सृजन कि वे क्रियाएं समझनी चाहिए जो मानव व्यक्तित्व और जीवन के लिए साक्षात् उपयोगी न होते हुए उसे समृद्ध बनाने वाली हैं। इस दृष्टि से हम विभिन्न शास्त्रों, दर्शन आदि में होने वाले चिंतन, साहित्य, चित्रांकन आदि कलाओं एवं परहित साधन आदि नैतिक आदर्शों तथा व्यापारों को संस्कृति की संज्ञा देंगे।"[59] इस प्रकार संस्कृति का सामान्य अर्थ है मनुष्य को सामाजिक बनाने में जिन तत्वों की आवश्यकता होती है वे तत्व संस्कृति ही प्रदान करती है। अतः संस्कृति ऐसी क्रिया है जो व्यक्ति में निर्मलता का संचार करती है। संस्कृति मानव जीवन का प्रमुख आधार है। संस्कृति वह पर्यावरण है जिसमें मनुष्य एक सामाजिक प्राणी बनता है। वह एक-दूसरे के रीति-रिवाज़ो को देखता है तथा समझ कर उनसे प्रेम की भावना भी मन में रखता है। संस्कृति में विभिन्न समुदाय या प्रांत के लोकाचार, लोकगीत भी शामिल रहते हैं। लेखिका ने अपने उपन्यास साहित्य में सांस्कृतिक मूल्यों की अवधारणा को स्वीकारा है। किसी समाज के लोगों का रहन-सहन, आचरण आदि सब संस्कृति के अंतर्गत आते हैं। संस्कृति एक बच्चे के जन्म के साथ ही परिवार द्वारा विरासत के रूप में उसे सौंप दी जाती है जिसे वह मूल्य के रूप में ग्रहण कर समाज में विचरण करता है। इस प्रकार उपन्यास में सांस्कृतिक मूल्य के अंतर्गत लोक गीतों, परंपरागत सांस्कृतिक मूल्य का विवरण मिलता है।

6.2.1 लोक गीत

समाज में शुद्धि बनाए रखने के लिए मनुष्य के समस्त जीवन को संस्कृति के साथ जोड़ा गया है। भारतीय संस्कृति में मनुष्य के जीवन को सोलह संस्कारों में

बांटा गया है। समाज में जन्म संस्कार से लेकर मृत्यु तक सभी सोलह संस्कार और रीति-रिवाज़ प्रचलित हैं। जिन पर व्यक्ति, समाज में रहकर निर्भर रहता है। व्यक्ति के रीति-रिवाजों और त्योहारों का संबंध संस्कृति से जुड़ा है। कोई भी संस्कृति अपनी पहचान सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर ही बनाती है। 'बेतवा बहती रही' शीर्षक उपन्यास में लेखिका ने अनेक परंपराओं और संस्कारगत रीति-रिवाज़ो का उल्लेख किया है। रीति-रिवाज़ जीवन की सांस्कृतिक गरिमा के परिचायक हैं। यहां विवाह संबंधी रीति-रिवाजों को भी रेखांकित किया है। विवाह संस्कार को भारतीय समाज में एक महत्वपूर्ण संस्कार माना गया है। विवाह समाज की अनिवार्य प्रथा है। यह पारिवारिक जीवन का आधार है इसे जीवन का प्रवेश द्वार भी माना गया है। विवाह में इतने रीति-रिवाजों को किया जाता है जोकि लोकगीतों में प्रायः निभाए जाते हैं। उपन्यास में भी नायिका उर्वशी के विवाह में अनेक रस्मो को निभाते हुए लोकगीतों के रूप में सांस्कृतिक मूल्य देखे गए हैं।

"औरन, कौरन गुडिया छोडीं, रोवत छोरी सहेलरी...।"[60]

गांव की सभी औरतें इकट्ठी हुई हैं, गांव की रीति-रस्मों के अनुसार लड़की का भाई दुल्हन को गोद में उठाकर विदा करता है। अजीत, उर्वशी को उठाकर चलने लगा तो गांव की औरतों ने उसे देहरी पूजने तथा धान फैकने को कहा। नाइन ने देहरी पुजवा कर पानी का लोटा उर्वशी की भाभी को दिया और उर्वशी की विदाई की। औरतों ने लोकगीत में उर्वशी के द्वारा अपने गांव तथा सभी सहेलियों को छोड़ने के तथ्यों को व्यक्त किया है। इस तरह उपन्यास में नाइन तथा उर्वशी की भाभी द्वारा भी विविध रस्मों को पूरा किया जाता है। उसके बाद विदाई संपन्न होती है। प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति होती है उसी के अनुसार विवाह के रीति-रिवाज़ पूरे किए जाते हैं। ऐसे रीति-रिवाजों को निभाना ही संस्कृति को निभाना माना जाता है। विवाह के समय स्त्रियों द्वारा रीति-रिवाज़ को लोगों द्वारा दिखाया जाता है। रीति-रिवाजों को निभाना एक प्रथा है जो की पीढ़ी दर पीढ़ी निभाई जाती हैं। इस तरह रीति-रस्मों को निभाते हुए और उर्वशी को विदा किया जाता है और उर्वशी ससुराल में जाकर भी अनेक रीति-रिवाजों को पूरा करती है। उसे ससुराल में भी गीत गाने को कहा जाता है कि यहां की रीति के अनुसार नई बहु को गाना सुनाना पड़ता है:-

"कोई लैलो मटर की दो फलियां
कोई लैलो मटर की दो फलियां
सोने की थाली में भोजन परोसे
जिन्हें जेंवे सनम की दो सखियां
जिनके लंबे-लंबे केश, रसीली अखियां
कोई लैलो मटर की दो फलियां...।"[61]

इस तरह उर्वशी ने शर्म से लज्जाते हुए गीत गाने की रस्म को पूरा किया। सब गांव की स्त्रियों ने बहु की बहुत प्रशंसा की। इस तरह विवाह के सभी रीति-रिवाज़ समाप्त हुए। उर्वशी ने सभी गांव की ओरतों के पांव छुए। घर में शुभ कार्य करने के बाद अर्थात लड़के की शादी होने पर हिजड़ा समाज के लोग नाचने आते हैं। हिजडों ने नाचना तथा गाना शुरू कर दिया:-

"मेरेग ले का हार राज, क्यों लाए सौतनियां रे ।"[62]

घर में हिजड़ों ने नाच कर शादी की बधाई ली। इस तरह उपन्यास में लोकगीतों का वर्णन किया गया है। यह लोकगीत वहां के रहने वाले स्थानीय लोगों द्वारा गाए जाते हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने बुन्देलखंडी बोली का प्रयोग किया है। बुंदेली लोगों द्वारा समय-समय पर लोकगीतों का भी परिचय मिलता है। वर्तमान समय में भी लड़के की शादी के बाद हिजड़ों को नाचने के लिए बुलाया जाता है।

'इदन्नमम' उपन्यास में भी लोकगीत देखने को मिलते हैं। गांव में कीर्तन है, जिसमें मिट्ठू काका नामक पात्र द्वारा भजन गाया जाता है। लोकगीत गाने से व्यक्ति अपनी संस्कृति के बारे में बताता है जिससे सांस्कृतिक मूल्य विकास को बढ़ावा मिलता है।

"मैं सुमिरो सिरी गणराज,
मेरे कीरतन में विघन परै ना।।
कीरतन में विघ्न परै ना,
मेरे कीरतन में विघ्न परै ना।।
मैं सुमिरो...।"[63]

इस तरह मिट्ठू काका ने कीर्तन में गीत गाया जो कि गीत उन्होंने अपने स्थानीय बोली में गाया है। उपन्यास की नायिका मंदा की सगाई है। मंदा की

सगाई मकरंद से होने लगी है जिसमें गांव की औरतों को भी बुलाया गया है। पंडित से पूजा तथा शुभ मुहूर्त निकाला गया था। कुसुमा भाभी ने अपने स्वर में मंगल गीत गाए:-

"सिया बारी बनरी रघुनंदन बनरे ,
को को बरातै जायं मोरे लाल।"[64]

कुसुमा ने मंदा तथा मकरंद के लिए गीत गाया जिसमें इन्होंने मंदा को माता सीता तथा मकरंद को राम के रूप में माना है। कुसुमा ने कहा कि सीता माता दुल्हन है तथा राम भगवान वर हैं जिनकी बारात में गांव के बच्चे जा रहे हैं। इस तरह लोकगीत एक ऐसी विधा है जिसके द्वारा लंबी बात को थोड़े शब्दों में कहा जा सकता है। उपन्यास में लोक गीतों का स्वर पर स्वर गूजंता है। जिसमें वहां की संस्कृति भी दृष्टव्य होती है। लोकगीतों में किसी को उलाहना भी हो सकता है तथा भगवान की वंदना भी। इस तरह उपन्यास में भक्ति के रूप में कीर्तन में गीत गाया जाता है। आज के समय में लोकगीतों की संख्या इतनी अधिक नहीं रही लेकिन ऐसा नहीं कहा जा सकता कि लोकगीत लुप्त हो गए हैं। वर्तमान युग में भी कई लोग अपनी संस्कृति को इतना प्रेम करते हैं कि इसे त्यागना नहीं चाहते हैं। आज के समय में भी विवाह, जन्म के समय लोक गीतों से संस्कार को संपन्न किया जाता है। लोकगीतों के द्वारा संस्कृति को जीवित रखने का प्रयास किया जाता है। मंदा तथा मकरंद की सगाई में लोकगीत गाए गए। भारतीय संस्कृति के विवाह संस्कार में वर तथा वधू पक्ष की तरफ से गीत गाए जाते हैं। वर तथा वधू दोनों पक्षों के गीत अलग-अलग तरह के होते हैं। दोनों पक्षों के गीतों का मंतव्य विभिन्न होता है। ऐसे ही उपन्यास में बऊ ने कन्या पक्ष की तरफ से गीत गाया। जिसे गाते-गाते बऊ का गला भर आया। इसी तरह कुसुमा भाभी और मीरा बुआ घर की औरतों के साथ मिलकर कन्या पक्ष के गीत गाती हैं:-

"छोटी-सी बनरी के लंबे-लंबे केस
सो खेलें बबूल दरबार भले जू।
कै तुम बेटी मेरी सांचे में ढारी
के गढ़ीं सकल सुनार भले जू।"[65]

कुसमा भाभी ने लड़की के जीवन का वर्णन करते हुए लोकगीत गाया है। जिसमें उसके लंबे-लंबे बाल है जो बचपन से अपने बाप के घर आंगन में खेलती है। बेटी अपने मायके में ऐसे ढल गई होती है जैसे एक सुनार सोने को घड़ता है। बेटी अपने मायके में सुख-दुख में भी हंसती-खेलती नज़र आती है। इस तरह इन्होंने एक बेटी के चंचलता का वर्णन किया है। गांव की औरतों ने पूरे स्वर के साथ लोकगीत गाए। बेटी को एक चिड़िया के रूप में भी माना जाता है, जिस तरह एक चिड़िया अभी यहां है तो अगले कल पता नहीं कहां जाकर घोंसला बना लेती है? इसी तरह लड़कियों का भी कोई घर नहीं होता, वह जिस घर में जन्म लेती हैं सारा बचपन बिताती हैं उसी को एक दिन छोड़कर चली जाती हैं। बऊ ने बेटी की विदाई का गीत गाया:-

"चार कहार जब खेपी रे पालकी
बिटिया ने रूदन मचाए मोरे लाल।
झड़प उठाकें बेटी देखन लगी
माय के कौ कोऊ दिखाय मोरे लाल।"[66]

बऊ ने विदाई के समय गाए जाने वाला गीत गाया जिसमें लड़की को विदा करके पालकी में बिठाया जाता है। उस समय लड़की बहुत ज्यादा रोती है, बेटी रोते-रोते पालकी के ऊपर जो कपड़ा डाला होता है उसे उठाकर अपने घरवालों को देखने लगती है लेकिन जब वह देखती है तो कहार पालकी को बहुत दूर ले गए होते हैं। लड़की को कोई भी दिखाई नहीं देता। इस तरह बेटी के विवाह के समय ऐसे ही गीत गाए जाते हैं, जिसमें सभी लोगों का गला भर आता है। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होता जो उस समय भावुक न होता होगा। इस तरह उपन्यास में कन्या पक्ष द्वारा गाए जाने वाले लोकगीतों का वर्णन किया गया है। यह लोकगीत परंपरागत तौर पर ही व्यक्ति को मिले होते हैं। यह लोकगीत रीति-रिवाज़ और संस्कार के रूप में ही हैं। लोकगीत हमारे भावों, विचारों एवं व्यवहारों की ही अभिव्यक्ति करते हैं। जिसे व्यक्ति अपने रीति-रिवाजों के द्वारा प्राप्त करता है। यही तो एक विविधता है जोकि भारतीय संस्कृति में ही लोक गीत सुनने को मिलते हैं अन्य किसी भी देश की संस्कृति में लोक गीतों का समन्वय नहीं होता है। उपन्यास में सुआटा वीर गीत का वर्णन मिलता है। सुआटा बुंदेलखंड का एक लोकपर्व है तथा यह एक लोक क्रीड़ा के रूप में खेला जाता है,

जिसे बुंदेल की स्त्रियों द्वारा बड़े शौक से खेला जाता है। इस खेल को बुन्देल के बड़े-बूढ़े उत्साह से देखते हैं तथा खेलने वाली स्त्रियों का उत्साह भी बढ़ाते हैं। यह पर्व पूरे क्वार मास में खेला जाता है। सुआटा के इस खेल में बुंदेली आंचलिक पर्व में यहां की समृद्ध लोक कला की झलक साफ दिखाई देती है। सुआटा में गोबर से दीवार पर आकृतियां बनाई जाती हैं। मिट्टी का शरीर कौड़ियों की आंखें। टूटी हुई चूड़ियों के होंठ, भौहें, नन्ही लकड़ी की नाक लगाई जाती है। इसी तरह 'इदन्नमम' उपन्यास में भी सुआटा के लोकगीत देखने को मिले हैं:-

"कि नारे जिजी के घर पर फरी तुरइयां
को टोरै को खाय।
कि जिजी के घर पै मेले लिबउआ
लाते महोबिया पान
कि नारे सोफिया रची है, जिभिया रची है
राचे बत्तीसी दांत।"[67]

उपन्यास में मंदा सुबह उठी तो उसके कानों में सुआटा का गीत सुना। वह उठी तथा लड़कियों के साथ गीत गाने लग पड़ी। गांव के बड़े-बूढ़े लड़कियों द्वारा गाए जाने वाले सुआटा गीत को ध्यानपूर्वक सुन रहे थे। गीत में किसी बहन के घर का वर्णन किया है, जिसमें उसके घर पर तुरई सब्जी नहीं है खाने का क्या ढूंढे। जिजी के पति मेले में गए तथा वहां से पान लाए हैं। जिसके कारण पान खाने से सारे होठ, जिभा और सभी दांत लाल हो गए हैं अर्थात पान सभी होठों में रच बस गई है। इस तरह इस पर्व में बालाओं द्वारा एक-दूसरे का हास्य वर्णन किया जाता है।

'अगनपाखी' शीर्षक उपन्यास में भी सुआटा का वर्णन मिलता है। उपन्यास की नायिका भुवन ने सुआटा में स्त्री रूप की आकृति बनाई, आसपास चांद, सूरज तथा नीचे धरती बनाई है। चंदर भी अपनी नानी के घर आया था, फूल, मिठाई, चावल, हल्दी चढ़ाकर पूजा हुई।

"उठो उठो सूरजमल भइया, भोर भए
उठो उठो चंद्रमल भइया भोर भए
ना रे सुआटा, मालिनी खड़ी तेरे द्वार

इंद्रगढ़ की मालिनी ना रे सुआटा, हाट ई हाट विकार...।"[68]

इस उपन्यास में भी सुआटा गीत गाया जाता है। यह भी सुबह-सुबह ही गाया गया है। चंदन अभी सुबह उठा तो उसने सुआटा का गीत सुना। यह वीर कथा को संबोधित करके गाया जाता है। वीर बालाएं अपने भाई का नाम जोड़कर सुआटा गाती हैं। इस तरह उपन्यास में बुंदेलखंडी लोकगीतों का चित्रण मिलता है। लेखिका ने बुंदेलखंड बोली के क्षेत्रों के लोगों को पात्र बनाया तथा वहां की संस्कृति को लोकगीतों के माध्यम से दिखाया है। इस गीत में उपन्यास की स्त्री पात्र अपने भाई को सूरजमल नाम देकर उसे सुबह-सुबह उठने का संकेत देती वर्णित की हैं। उन्होंने बुंदेलखंड के इतिहास को भी त्योहारों के माध्यम से दिखाया है। इस तरह उपन्यासों में लोकगीत आए हैं जो वहां की संस्कृति का बखान करते हैं तथा वीरता को भी दिखाते हैं ताकि उपन्यास में आई ऐसी वीर कथाओं से वर्तमान युग की पीढ़ी भी उत्साहित हो। इसके साथ ही उपन्यास में एक अन्य त्योहार की चर्चा हुई है। उपन्यास में एक बुंदेलखंडी खेल की बात सामने आई है। उपन्यास में मामुलिया क्रीडा जो कि विवाहित लड़कियां नहीं खेल सकती है लेकिन भुवन ने अपने मायके में इस खेल को खेला। उसने अपने कुंवारे तथा विवाहित होने में कोई अंतर नहीं समझा है। भुवन ने अन्य लड़कियों के साथ आंगन में कोने में 'सूखे काटें वाला झकरा' गाढ़ा। झकरा मज़बूती से खड़ा किया तथा भवुन और अन्य लड़कियों ने चौक को आटे से पूरा लीप दिया। झकरे का एक-एक कांटा, फूलों से सजाया। सभी लड़कियों ने मामुलिया का एक गीत गाया:-

"ल्याओ ल्याओ रत्न जड़े फूल सजाओ मेरी मामूलिया
ल्याओ ल्याओ गेंदा हजारी के फूल सजाओ मेरी मामूलिया
कहां लगादऊं मामुलिया?
अंगना लगादऊं मामूलिया?
मामूलिया के आए लिबउआ छिटक चलो मोरी मामुलिया
जा जा बाबूल जी के बाग, उतर गई मोरी मामुलिया
अम्मा रानी देखन आई, बाग बना ल आई मामुलिया...।"[69]

उपन्यास में मामुलिया खेलते समय इस लोकगीत को सभी मिलकर गाती हैं। जिसका अर्थ है कि बाबुल हमारा जीवन आंगन में खड़े इस झकरे जैसा है- नीरस

और कांटेदार। जिस तरह इसमें कांटे हैं वैसे ही हमारा जीवन भी कांटे रूपी दुखों से भरा है लेकिन इन कांटों में ही हम फुल सजा लेंगे। हम ससुराल अर्थात प्रदेश में रहकर तुम्हारे आंगन को गुलजार रहने के गीत गाएंगे। अम्मा तुम बागों में चले जाना, हम भी वहीँ-कहीं होंगे। इस तरह लेखिका ने ऐसे लोक गीतो का वर्णन किया है जिसमें वहां की संस्कृति का रुप देखा जा सकता है। इस त्यौहार की संपन्नता के बाद भुवन को ससुराल जाने का हुक्म मिला। इस तरह उपन्यास में लड़की को ससुराल भेजते समय गाए जाने वाले गीतों का भी जिक्र हुआ है। भगवानदास की बहू और गांव की नाइन ने मिलकर विदा गीत गाया:-

"बिटिया भली जो अपने घर की,
सुख-दुख पेट पचाए भलें जू।
असुअन असुअन विदा करी थी
हंस हंस लौट के आए भले जू।"[70]

भुवन को मायके से विदा किया गया। गीत में बेटी को सुख -दुख सहने की चर्चा होती है कि बेटी ससुराल में अनेक दुखों को अपने पेट में पचा लेती है। रोते-रोते लड़की को विदा किया जाता है लेकिन ससुराल में उसे इतने सुख मिले कि वह हंसती-हंसती मायके आए। उसके सुखों की झलक, उसकी हंसी से बयान हो। इस तरह उपन्यास में समय-समय पर गाए जाने वाले लोकगीतो का वर्णन किया है। चाहे वह दुख के समय के गीत हो या सुख के समय के। आज के समय में भी विभिन्न पर्वों से संबंधित लोकगीत गांव में गाए जाते हैं। इस तरह लोकगीत गाने से वहां की परंपरा को याद किया जाता है तथा उसे जीवित रखने की कोशिश की जा रही है।

आज भी विवाह के समय जब बेटी को विदा किया जाता है तभी भी लोक गीत गाए जाते हैं। इस तरह विवाह के उपरांत जैसे भुवन अपने ससुराल जा रही थी तो उस समय भी विदा गीत गाने का रिवाज़ है। उपन्यास में एक अन्य दृश्य देखने को मिलता है। उपन्यास के प्रमुख पात्र भुवन तथा चंदर होते हैं। चंदर बस में जा रहा होता है बस सभी मजदूरों से भरी होती है। यह सब मज़दूर खेत में खड़ी फसल को काटने के लिए 'खिल्ली' चले होते हैं। सब लोग मैले कपड़े पहने हुए हैं। उनके साथ स्त्रियां तथा बच्चें भी हैं। स्त्रियों के कपड़ों से दुर्गंध आ रही है,

इनके कपड़े पसीने से लथपथ हैं। इन्हीं लोगों से बस पूरी तरह ठसाठस भरी है। चंदन का बस में बैठना मुहाल हो जाता है। इस प्रकार लेखिका ने उपन्यास में मज़दूरी करने वाले लोगों के पहनावे तथा रहन-सहन को व्यक्त किया है। बस में बैठे यह सब लोग मिलकर गाना गाते है:-

"ऊपर बदर घैराय, वरें गोरी पनियां खों निकरी
जाए जो कहियो उन राजा ससुर हों, अंगना में कुंअला खुदाएं
तरें गोरी पनियां खों निकली
जाए जो कहियो उन राजा जेठ सों, मोतियन की कुड़री मंगाएं
बहु धन पनियां खों निकरी
जाए जो कहियो उन राजा देऊर हों सोने की गगरी ढलाए
भौजी धन पनियां क्यों निकरी..."[71]

इस प्रकार ये मज़दूरों के द्वारा गाया गया लोकगीत है जिसमें सभी मज़दूर लोकगीत गाते हुए स्वयं भी लहरा रहे हैं। लोकगीत में उन्होंने अपने साथ चली हुई स्त्रियों की वेशभूषा को चित्रित किया है। उन्होंने गीत में राजा शब्द का प्रयोग ससुर तथा जेठ के लिए किया है। इस प्रकार लेखिका ने लोकगीतों के माध्यम से वहां की जनता के आंतरिक भावों को व्यक्त किया है। यह सब लोग इतने प्रसन्न होते हैं कि फसल काटना उनके लिए एक त्यौहार जैसा प्रतीत होता है। मज़दूरों के मन में एक अलग सी उमंग जगी हुई है जिसे वह अपने लोकगीत के माध्यम से व्यक्त करते हैं। इस तरह उपन्यास में लोकगीतों का विवरण अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किया गया है। यह लोकगीत ही अपनी संस्कृति में चल रहे रीतियों को वर्णित करते हैं। उपन्यास में एक अन्य कुमुद नामक लड़की भेंड़ों को चराती हुई गीत गाती है। संटी गोलाई में घुमाते हुई वह मग्न मन गाने लगती है:-

"मलिनिया फुलबा ल्याओ नंदनवन के
मलिनिया फुलबा ल्याओ नंदंनवन के
बीन-बीन फुलबा लगाई बड़ी आस
उड़ गए फुलबा रह गई बास
मलिनिया फुलबा ल्याओ नंदनवन के ।"[72]

उसके गाने से बेतवा के जल में ऐंठने पड़ने लगी। वह नदी के पास भेड़े चरा रही होती है। गाना बंद करके अचानक से अथाह जल में कूद पड़ती है। इस तरह इन पंक्तियों में कुमुद चली जाती है और उसकी याद रह जाती है। जैसे फूल मुरझा जाते हैं तथा उनमें सुगंध ही रह जाती है तथा भंवरा उसका रस चूस कर उड़ जाता है। इस तरह उपन्यास में कुमुद ने अपने हृदय में छिपे दर्द को लोकगीत के माध्यम से व्यक्त किया है। लोकगीत ने कुमुद के चले जाने के दुःख को व्यक्त किया है तथा वहां की संस्कृति को माली तथा फूलों का नाम देकर व्यक्त किया है।

'चाक' शीर्षक उपन्यास में गांव वाले होली खेलते हैं। सभी एक-दूसरे को मज़ाक करते हैं तथा एक-दूसरे पर रंग डालते हैं। जिससे एक मनमोहक दृश्य उत्पन्न होता है। उपन्यास के पात्र चंपाराम और झज्जू गीतों के खजाने हैं। दोनों ने मिलकर गाना गाया:-

"कान्हा बरसाने में आ जइयो बुला रही राधा प्यारी
बुला रही राधा प्यारी रे, बुला रही राधा प्यारी / कान्हा
सोने को लोटा गंगाजल पानी,
अब तेरी गरज पड़ै तो पी जइयौ / बुला रही राधा प्यारी।"[73]

उपन्यास में श्री कृष्ण तथा राधा को माध्यम बनाकर होली में लोक गीत गाया जाता है। श्री कृष्ण होली खेलने के लिए बरसाने आते हैं अर्थात वे राधा रानी के संग होली खेलने के लिए यहां आए हैं। राधा रानी, श्री कृष्ण को होली खेलने के लिए बुलाती है। वे सोने के लोटे में पानी भर कर लाए हैं। राधा और कृष्ण की होली बहुत ही प्रसिद्ध है जिसके कारण लोगों ने अपनी-अपनी बोली के द्वारा गीत बना लिए हैं। प्रत्येक क्षेत्र के लोग राधा रानी तथा श्री कृष्ण के नाम को लेकर होली खेलते आज भी देखे जा सकते हैं।

इस तरह उपन्यास में बच्चे के जन्म के बाद का उत्सव मनाया जाता है। उपन्यास के पात्र भवानीदास के घर पर पोता हुआ है। पोते हुए को डेढ़ साल हो गया लेकिन आज पोते का 'चरूआ' चढ़ेगा। इस उत्सव में बच्चे की मां आंगन तक चलकर आती है। चौक पर थोड़ी देर खड़ी रहती है, उसमें एक नेग देवर का होता है। जिसमें खेरापति दादी ने गीत गाया:-

"राजा ओ मेरे राजा, अरे तुम महाराजा न हो,
राजा हमें है तिलरिया को सार,
तिलरि गढ़वाओं, चुनरि रंगवाओ न हो...
रानी हो मेरी रानी, अरे तुम महारानी न हो,
रानी तुमरौ है सांवरौ सरीर
तिलरि नांय सोहै, चुनरि नांय सोहै न हो...।"[74]

नेग में देवर की जगह चंदन को खड़ा किया गया। देवर, सीमा की चुनरी का किनारा पकड़कर आंगन में पूरे चौक तक ले आया। इस तरह वहां की संस्कृति को लोकगीत गाकर दिखाया है। प्रत्येक समाज तथा समुदाय के अपने-अपने रीति रिवाज़ होते हैं, उसी के अनुसार लोगों ने गीत भी बना लिये हैं। वर्तमान समाज में भी जन्म से लेकर विभिन्न अन्य संस्कारों के अलग-अलग रीति रिवाज़ बनाए हैं। भारतीय संस्कृति के अंतर्गत विविध क्षेत्रों के विविध रस्में होती हैं जिसके कारण ही वहां की परंपराओं का ज्ञान होता है। परंपरागत रूप से चले आ रहे रिवाजों को मानना ही भारतीय संस्कृति की अलग पहचान है। आज के युग में प्रत्येक क्षेत्र या प्रांत ने अपनी परंपराओं को लोक गीतों द्वारा बचा कर रखा है। इस प्रकार उपन्यास में विवाह तथा जन्म से संबंधित विभिन्न लोकगीतों को वर्णित किया है। लोक गीतों द्वारा उपन्यास साहित्य में सांस्कृतिक मूल्यों के प्रचार-प्रसार को दिखाया गया है। आज के समय में गाए जाने वाले लोक गीतों से संस्कृति का विकसित रूप दिखाई देता है।

इसी उपन्यास में चंदना की कथा खेरापति दादी ने अपने मुंह से सुनाई। चंदना किसी से प्रेम करती थी लेकिन घर की इज़्ज़त आबरू को ध्यान में रखते हुए अपने मां-बाप की पसंद से शादी करती है। खेरापति दादी ने चंदना के गाने का वर्णन किया है। चंदना का गौना सावन महीने में होता है। दादी ने चंदना के गौने की चर्चा गीत में की है। इस तरह दादी ने धीरे-धीरे गले को साफ किया। सावन के समय सभी लड़कियां मायके में आ रही थी तथा इसी समय चंदना को ससुराल भेजा जाता है।

"सेतु पै स्याही पंडित के ने करदई जी,
ए जी कोई दैदई नाऊ के के हाथ-

चिट्ठियां तो पहुंची सजन जी के थान पै जी ८८८..."[75]

लोकगीत में चदंना के गौने के चिट्ठी पंडित ने लिखी थी, जिसे नाई के हाथ भेज दिया। यह चिट्ठी चंदना के ससुराल से आई थी। इस तरह उपन्यास में लड़की के विवाह के बाद होने वाले गौने की चर्चा की है जिसे खेरापति दादी ने अपने लोकगीत के माध्यम से बताया है। अलग-अलग क्षेत्रों के अपने-अपने रीति-रिवाज़ होते हैं। उन्हीं के अनुसार लोगों के द्वारा गीत भी बनाए गए हैं। प्रत्येक रस्मो के गीत आज के समय में भी गाए जाते हैं, यही तो लोगों की संस्कृति को बयान करते हैं। लोकगीतों के माध्यम से ही प्रत्येक क्षेत्र की पहचान की जाती है। लोकगीत प्रायः वहीँ की बोली में होते है। चंदना ने विवाहित होते हुए भी पराए पुरुष के साथ रिश्ता रखा था। सकल सुनार का लड़का होता है जिसके कारण चंदना का गौना सावन मास में होता है। यह सब एक पिता की बेबसी थी। यह सब हर साल गांव की स्त्रियां खेरापतिन दादी के मुंह से सुनती हैं। दादी उन्हें अपने तरीके से गाकर सुनाती है। साथ में गांव की स्त्रियां भी दादी के गाने में साथ देती हैं।

"पहली कटारी कुंवरजी मारियै जी ,
ए जी कोई दूजी लैलई बांहन और-
तीजी कटारी चंदना के हीयरा जी ८८८...
माइल जाने चंदना बेटी सासुरे जी,
ए जी कोई सासुल जाने प्यौसार
चंदना की चिता चिनी वनखंड में जी ८८..."[76]

चंदना वैन करती हुई ससुराल जाती है लेकिन रास्ते में ही एक वनखंड में चंदना उसके पति कुंवर के क्रोध ज्वाला से भस्म हो जाती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उसके पति को सकल सुनार की बात का पता चल जाता है। चंदना की मां तथा सास का भ्रम है कि चंदना अपने ससुराल में सुखी से रह रही है तथा सास को भ्रम है कि चंदना अपने मायके में है। इस तरह खेरापतिन दादी ने उपन्यास में चंदना के गौने तथा उसकी मृत्यु को गाकर सुनाया है। ऐसा रिवाज़ आज भी कई क्षेत्रों में है कि वहां की बूढ़ी बुजुर्ग औरतें या पुरुष अपने प्रांतों की कथा-व्यथा को लोकगीतों के माध्यम से गाकर सुनाते हैं। इस तरह उपन्यास में लोकगीतों के माध्यम से सांस्कृतिक मूल्य विकास को दिखाया है। उपन्यास में

सावन के महीने का वर्णन किया है जिसमें गांव के लोगों का मनोरम दृश्य देखने को मिलता है। गांव में चहल-पहल लगी हुई है। सभी स्त्रियां आपस में बातें करती हैं। खेरापतिन दादी आई और उन्हें गाना गाने के लिए कहा। सभी औरतें मिलकर गाना गाती हैं:-

"हरौ री रंगाय दै अम्मा मेरी डोरिया जी,
ए जी कोई हरी ही है भइया जी की पाग
झूला तो झूलूं हरियल बाग में जी ८८८...[77]

अखाड़े में रिश्तेदारों के चमकदार कपड़ों के कारण रौनक आ गई है। अखाड़े में जगमगाते मेहमानों की मंडली, गांव के बूढ़े, जवान तो बाई तरफ, छतरपुर की स्त्रियों के रंग-बिरंगे झुंड आदि देखने को मिलते हैं। गुलकंदी उपन्यास की नारी पात्र है जो कि गुलाबी रंग की साड़ी पहन कर आई है। उसने गले में ढोलक लटकाया है, कभी हंसती है, कभी मुस्कुराती है तथा कभी अपनी भाभियों के साथ हंसी मज़ाक करती है। इस तरह उपन्यास में मेले का चित्रण किया गया है। मेले में सभी स्त्रियां मिलकर फसल के गीत गाती हैं। हरिप्यारी गले में ढोलक डालें खड़ी है। अब वे लोग किसान/किसानिन के गीत गाते हैं। लोगंसिरी बीबी ने अपने पल्ले का साफा-सा मार लिया और आगे बढ़ी:-

"मैं तो निबुआ, मैं तो निबुआ तुडाऊंगी ऐसे ऐसे
मोय दाऊ की सों ऐसे।"[78]

इस तरह से सब औरतें अपनी बोली में गीत गाती हैं। एक-दूसरे की तारीफ तथा निंदा भी वह अपने लोकगीतों के माध्यम से करती दिखाए गए हैं। अपने आप में लोकगीतों के द्वारा वहां की संस्कृति का वर्णन देखने को मिलता है। लोगों के मन में अलग-सा उत्साह देखा गया है। वर्तमान समय में भी सावन के महीने में अलग-सी ही रौनक देखी जाती है। इस महीने में जिन लड़कियों का नया विवाह होता है, वह सब अपने पीहर में आती हैं। सभी के आने से गांव में खुशी का माहौल पैदा होता है। सभी सखियां आपस में मिलकर गांव के मेलों में जाती हैं। वहां पर आज भी ढोलक आदि बजाया जाता है। इन सभी तथ्यों को उपन्यास में लोकगीतों के माध्यम से वर्णित किया है। इस तरह उपन्यास में विसुनदेवा ने भी रूठी हुई गुलकंदी को मनाने के लिए लोक गीत गाया:-

"पार परौसिन कर रही काम,
तुम रूठी खाड़ी जिजमान हरिगंगा
भीतर से तुम बाहर आऊ
दस्सन की भिक्खा दै जाऊ हरिगंगा।।"[79]

इस प्रकार उपन्यास में प्रेमी अपने रूठी हुई प्रमिका को मनाने के लिए एक गीत गाता है। सारंग ने विसुनदेवा के गीत को सुन लिया। गुलकंदी ने सारगं को देखकर अपने मुंह को पल्ले से छिपा लिया है। इस तरह उपन्यास में लोगों द्वारा वहां की संस्कृति को दर्शाया है जिसमें मेलों, फसलों, प्यार-प्रेमिकाओं आदि की चर्चा की गई है। लोक गीतों द्वारा आसानी से किसी भी बात को सही तरीके से कहा जा सकता है। यह अपनी-अपनी संस्कृति की विशेषता है। 'कही ईसुरी फाग' उपन्यास में रज्जो को ईसुरी से प्रेम हो गया है। वह शुरू से छिप-छिप कर मिलने के लिए जाती है। ऐसा रोज़ रात होने लगा है। इस उपन्यास में रज्जो तथा ईसुरी के प्रेम को ही व्यक्त किया है। कभी रज्जो अपनी दशा को गीत के माध्यम से बयान करती है तो कभी ईसुरी दोनों एक दूसरे के लिए तड़पते हैं। दोनों को गांव वालों से डर भी होता है लेकिन दोनों फिर भी प्रेम करते हैं।

"रातै परदेसी संग सोई
छोड़ गऔ निरमोही
अंसुवा ढरक परै एक गालन पै, जुबन भीज गए दोई
गोरे तन के चोली भींजी दो दो बार निचोई
ईसुरी परी सेज के ऊपर, हिलक-हिलक मैं रोई।"[80]

रज्जो फाग गाती है, रज्जो ने फाग में ईसुरी को परदेसी कहा है। ईसुरी कई बार गांव के डर से रज्जो को सोए हुए छोड़ जाता है। उसको रज्जो की बिल्कुल परवाह नहीं होती। जब रज्जो की आंख खुलती है तो स्वयं को अकेला पाकर रोती है। उसके आंसुओं से गाल तथा चोली भीग जाती है। उसने इतने आंसू बहाए कि उसे अपने शरीर की चोली को दो बार में निचोडना पड़ा। जहां पर ईसुरी सोया था, वहीं पर वह फूट-फूट कर रोई। इस प्रकार लेखिका ने इस फाग में रज्जो का ईसुरी के प्रति प्यार को व्यक्त किया है।

'फ़रिश्ते निकले' उपन्यास में लेखिका ने एक ऐसा गीत रचा है जो कि समाज की कुप्रथा पर प्रहार करता है। उपन्यास की नायिक बेला बहू का अनमेल विवाह होता है। इसी तरह उपन्यास में किसी अन्य पात्र का भी ऐसा ही विवाह होता है। उपन्यास के पात्र रामदेई चाची की बहन शकुंतला का विवाह पचास वर्ष के नथुराम से तय होता है। विवाह के समय गाए जाने वाला गीत लेखिका ने बेला बहू के जीवन के साथ जोड़ा है।

"बिन मेल बिगरि गयौ खेल/बूढ़े के संग जोड़ी ना मिलै
बारह बरस की मैं मेरी बहना/बासठ के भरतार
तो से पिता कहूं कि भरतार/लगै मेरौ बाबा सौ।"[81]

इसमें लेखिका ने कहा है कि एक बूढ़े व्यक्ति से कम उम्र की लड़की की शादी कर दी जाती है जो लड़की अभी बारह वर्ष की नादान बच्ची है और लड़के की उम्र बासठ साल है। लड़की पिता से कहती है जिससे आप मेरी शादी कर रहे हो, वह मेरा दूल्हा नहीं मेरा पिता लग रहा है। इस तरह उपन्यास में कई ऐसी लड़कियां हैं जिसकी अनमेल शादी हुई है। लेखिका ने अपने लोकगीत के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था पर चोट की है। इस लोकगीत के माध्यम से उपन्यास के गांव की रस्मों का ज्ञान होता है कि क्षेत्रों में ऐसा भी रिवाज़ है। जिसे लोग त्याग नहीं सकते तथा उन्हें परंपरा को लेकर चलना पड़ता है। वर्तमान समय में अनमेल विवाह लुप्त हो गया है। आज हर क्षेत्रों में लड़का-लड़की दोनों हमउम्र ही होते हैं। इस तरह उपन्यास में उस समय की प्रथा को लेखिका ने लोकगीत गाकर वर्णित किया है। आज तथा उस युग में काफी विविधता देखी गई है।

'अल्माकबूतरी' उपन्यास में होली के त्यौहार का चित्रण किया गया है। यह होली का विवरण कबूतरा लोगों के डेरे पर मिलता है। सभी लोग डेरे में इकट्ठे होकर होली खेलते हैं। आज के दिन कबूतरा बस्ती में ढोल मजीरा बजते हैं। आज के दिन मर्द और औरतें गोल घेरा बनाकर एक स्वर में गीत गाते हैं। औरतें हंस रही थी, बच्चे नाच रहे थे।

"मोरी चंदा चकोर, काजल लगाकर आ गई भोर ही भोर
मोरी चंदा चकोर, छतिया पर तोता, करीहा पे मोर
मोरी चंदा चकोर, चोली में निबुआ घघरा घूमरे।"[82]

होली खेलते समय एक-दूसरे के साथ मिलकर लोकगीत गाते हैं। यह गीत उपन्यास के पात्रों की अपने स्थानीय बोली में गाया गया है। कबूतरा समाज के बच्चे इस बोली के गीत को पुरानी चाल का मानते हैं। कज्जा लोगों के गीतों में इनको रस आता है। राणा भी गा रहा है जिसे देखकर कदमबाई बहुत प्रसन्न हो रही है। इस तरह उपन्यास में एक भारतीय संस्कृति के प्रभाव का वर्णन किया गया है। यह त्योहार भारत के सभी राज्यों में अधिकतर मनाया ही जाता है। इस दिन विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाए जाते हैं तथा एक-दूसरे पर रंग डाल कर खुशी का इज़हार किया जाता है।

'कही ईसुरी फाग' उपन्यास में भी ईसुरी नामक फगवारे का वर्णन मिलता है जो कि अपने दिल का हाल फाग गाकर ही सुनाता है। वह गांव में जाकर फागें गाता है। उपन्यास में प्रेमानंद सूरे की फागों का भी वर्णन मिला है। विजय सिंह सिपाही था जिसने अपना नाम प्रेमानंद रख लिया था। यह नाम तो उसके अंधे प्यार का निचोड़ था। किसान की बेटी कोकिला चौदह वर्ष की थी, जब वह विजय सिंह को देखती तो गांव में गाए जाने वाले गीत को गाती।

"लीली सी घोड़ी सरग से बंधी, मोरे बांके सिपहिया रे
गोरा की बहना गई थी बजार, मोरे बांके सिपहिया रे
गई थी बजार, उनके संग रियासतदार, मोरे बांके सिपहिया रे
संग रियासतदार, उन्होंने जाए नंदलाल, मोरे बांके सिपहिया रे
जाए नंदलाल, उनकौ नाम पन्नालाल, मोरे बांके सिपहियारे।"[83]

यह लोकगीत लड़की अपने दिल की बात बताने के लिए गाती है। सिपाही का आना- जाना लगा रहता है। कोकिला भी उसे देखती रहती है। लड़की के पिता को लड़के-लड़की की इस बात का पता चल जाता है तथा वह रिश्ते की बात करने जाने ही वाला होता है कि लड़की उठा ले गई। विजय सिंह ने विरह के कारण अपना नाम प्रेमानंद रख लिया। इस तरह उपन्यास में प्रेम की बातें लोकगीत के माध्यम से कही गई हैं। इस तरह बुंदेलखंडी बोली में लोकगीतों में वहाँ की संस्कृति प्रदर्शित होती है। किसी भी क्षेत्र की संस्कृति वहां की बोली, त्योहारों, रीति-रिवाजों द्वारा पहचानी जाती है। लेखिका ने परंपरागत रीति-रिवाजों से जोड़ते हुए उनमें सांस्कृतिक मूल्यों को चित्रित किया है। इस तरह भारत के

समाज में विभिन्न रीति-रिवाजों को निभाना ही सांस्कृतिक मूल्य विकास माना जाता है।

6.2.2 परंपरागत सांस्कृतिक मूल्य

लेखिका ने अपने उपन्यास साहित्य में परंपरा से चले आ रहे सांस्कृतिक मूल्यों का चित्रण किया है। इन सांस्कृतिक मूल्यों में रहन-सहन, पर्व-त्यौहार, खान-पान, पहनावे आदि का वर्णन किया जाता है। 'बेतवा बहती रही' शीर्षक उपन्यास में उस समय के रहन-सहन का वर्णन किया गया है। एक महिला पात्र मीरा जब अपने घर आती है तो उसे देखकर हैरानी होती है। वह सोचती है कि यह वही घर है जहां से वह गई थी "कोठों के आगे अब खपरैल चले छपरे नहीं थे, पिताजी ने पक्के बरामदे बनवा दिए थे। पतले चौकोर खंभों पर सीमेंट की छत।"[84] इस उपन्यास में पुराने कच्ची मिट्टी के घर की जगह पक्के घरों का विवरण हुआ है। दिन-प्रतिदिन लोगों के रहन-सहन में अंतर को दिखाया है। परंपरा से चले आ रहे घर देखने को नहीं मिलते हैं। मीरा को अपना पूरा घर सफेद झक्क-सा लगता है। उसे अनुभव होता है कि पुराने अंधेरे घर में उजाला भर गया है। लेखिका ने उपन्यास में समय के साथ बदल रहे सांस्कृतिक मूल्यों को दिखाया है। लोगों के रहन-सहन के पक्ष में सोच बदल रही है। वर्तमान समय में भी कच्चे घरों की तादात कम होती जा रही है। आज के समय में युवा पीढ़ी का रुझान पक्के घरों की तरफ बढ़ रहा है। उपन्यास में शादी होती है जिसमें रामतुला बजाया जाता है लेकिन शादी में नए फैशन के वाद्य यंत्र भी आते हैं। काका अपना रामतुला बजाते हैं लेकिन नए फैशन के बैंड बजने पर काका दादी से बोलता है- "मातौन नए फैशन में आकें हमारे रामतूला पर लात मार रही तुम।"[85] यहां पर लेखिका ने रामतूला तथा नए फैशन की बैंड की चर्चा की है। विवाह में झांसी से बैंड वालों को बुलाया था, जिन्हें देखकर काका सहम जाते हैं। उन्हें ऐसा महसूस होता है कि उन्होंने नए फैशन के बैंड को बुलाकर रामतूला का तिरस्कार किया है। इस तरह उपन्यास में पीढ़ी में आए अंतराल को दिखाया है। काका का विचार है कि अभी भी रमतूला ही बजाया जाए। विजय तथा उदय दोनों पढ़े-लिखे विचारों के पुरुष पात्र हैं। दोनों ने झांसी में पढ़ाई की है इसीलिए उन्होंने शादी में नए रिवाज़ का प्रचलन किया है। इस तरह परंपरागत सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन दिखाई

दिया है। लोगों की समय के साथ मानसिकता बदलती देखी गई है। समय और स्थितियों के अनुसार मूल्य में परिवर्तन होना स्वभाविक सी बात है क्योंकि व्यक्ति अपने आस-पास की घटनाओं को देखता तथा सुनता है उसी के अनुसार रहन-सहन में परिवर्तन लाता है। आज का प्रत्येक व्यक्ति दुविधा की स्थिति से गुज़र रहा है, जिसके कारण परंपरागत मूल्य परिवर्तित हो रहे हैं। मूल्य परिवर्तन नई सोच का बदला हुआ रूप है। मूल्य परिवर्तन को मूल्य विघटन का नाम नहीं दिया जा सकता, उपन्यास में सांस्कृतिक मूल्य परिवर्तन हुआ है। इस तरह लेखिका के सांस्कृतिक मूल्य आज भी प्रचलित हैं। वर्तमान युग में भी नए फैशन के दौर ने परम्परागत सांस्कृतिक मूल्यों को लुप्त कर दिया है। दिन-प्रतिदिन नई तकनीक के कारण सांस्कृतिक मूल्य परिवर्तित हुए हैं। इन्हें आज के युग में मान्यता तो है लेकिन प्रचलन नहीं है। ऐसे ही उपन्यास में जब काका रामतुला बजाते हैं तो झांसी के बैंड मास्टर उन्हें पुरानी रेंक कहते हैं उन्हें अपनी धुन को बिगाड़ने वाले कहते हैं, काका को यहां से चले जाने को कहते हैं अर्थात वे एक-दूसरे पर हावी होते देखे जा सकते हैं।

'इदन्नमम' उपन्यास में परंपरा से चले आ रहे रीति-रिवाजों को दिखाया है। लोगों का परम्परा से चले आए इन उत्सवों पर गुढ विश्वास बना हुआ है। उपन्यास में कुसमा भाभी तथा मंदा आपस में बातें करती हैं "कुसमा ने कार्तिक नहाया।"[86] कुसमा भाभी को पति द्वारा त्याग दिया गया है। कुसुमा फिर भी अपने ससुराल में रहती है। मंदा ने भाभी को कहा कि आपने पिछले जन्म में पूजापाठ नहीं किया होगा जिसके कारण आपको इस जन्म में इतने ज्यादा दुख मिले हैं। इसीलिए भाभी ने अपने परंपरागत सांस्कृतिक मूल्यों को मानते हुए कार्तिक नहाई। लेखिका ने यहां पर परंपरागत सांस्कृतिक मूल्यों के अंतर्गत पर्वो-त्योहार तथा वाद्य यंत्रों से जुड़ी सांस्कृतिक क्रियाओं का वर्णन किया है। इस तरह उपन्यास में होली के त्यौहार की भी चर्चा हुई है। सब एक-दूसरे पर रंग डालते हैं। इस दिन उपन्यास में स्त्री-पुरुष बिना किसी हिचकिचाहट के होली खेलते हैं "लल्ला सरमाए से काहे ठाड़े हो? हमें भी छू लो कि मंदा से ही अकेले में खेलोगे फाग? अब लाओ फगुआ।"[87] सभी लोग एक-दूसरे पर रंग फेंकने में मस्त है। मंदा तथा मकरंद भी होली खेलते हैं, उन दोनों को होली खेलते देखकर कुसुमा भाभी मज़ाक में मकरंद को कहती है कि क्या तुम मदा के साथ होली

खेलोगे? हम लोगों के साथ भी होली खेलो। त्योहार एक ऐसी कड़ी है जिसमें सभी को एकता के सूत्र में पिरोया जा सकता है। लेखिका के उपन्यास तथा आज के समय में अधिक साम्यता देखने को मिलती है। उपन्यास में पर्वो तथा त्योहारों का विशेष महत्व बताया है तथा त्यौहार जीवन की सांस्कृतिक गरिमा के परिचायक हैं। आज भी लोग अपने जीवन में दुखों को दूर करने के लिए विशेष स्थान पर स्नान करने को महत्वपूर्ण मानते हैं। लोगों की मान्यता है कि उस पर नहाने से हमारे सभी मनोरथ पूर्ण होंगे तथा कष्टों का निवारण होगा। उपन्यास में कुसुमा भाभी भी एक ऐसी ही स्त्री पात्र सामने आई है जिसने कार्तिक के महत्व को समझा था। कुसुमा का उद्देश्य भी जीवन के दुखों का नाश करना था। इस तरह से सांस्कृतिक मूल्यों को छोड़ा नहीं जा सकता। लोगों की परंपरागत मूल्यों में धार्मिक आस्था जुड़ी हुई है। आज भी जनता चाहे शहरों में निवास करती है लेकिन फिर भी अपने परम्परागत मूल्यों के अनुसार ही जीवन व्यतीत करना चाहती है। संस्कृति को बनाए रखना चाहती है। लेखिका के उपन्यास के पात्र पढ़े-लिखे तथा अनपढ़ समाज दोनों से संबंध रखते हैं। विवेच्य उपन्यास में भी दोनों श्रेणियों के पात्र आए हैं। यहां पर लेखिका ने स्पष्ट किया है कि परंपरागत सांस्कृतिक मूल्यों को निभाने के लिए पढ़ना या अनपढ़ता दीवार नहीं बल्कि व्यक्ति के आंतरिक संस्कार उसे परंपरागत सांस्कृतिक मूल्यों के निर्वाहक बनाते हैं।

उपन्यास में पात्रों द्वारा दीवाली त्योहार को मनाए जाने का वर्णन मिलता है। सभी लोगों में एक अलग ही उत्साह देखने को मिला है। सब बच्चे भाग-भागकर मंदा को दिवाली आने की सूचना देते हैं। घुंघट से झांकती हुई बहू और बेटियां, बूढ़े, जवान सब प्रसन्न हैं। उपन्यास में एक अन्य बात सामने आई है कि दिवाली के दिन विद्यांचल में बसी जनजातियों के लोग नाचने के लिए आते हैं। जिन्हें दिबरिया कहा जाता है "गहरा सांवला रंग दिबरियों का। संख्या में लगभग सोलह।"[88] उपन्यास में ये लोग दिवाली के उपलक्ष्य पर नाचने के लिए आए हैं तथा घर-घर जाकर अपने नाच को दिखाते हैं। इनके सिर पर लाल हरी पन्नी का मुकुट है तथा इसके ऊपर मोर पंख लगा रखा है। गले में हरे नीले मनको की कई मालाएं पहनी हुई हैं। कमर में भी कोड़ियों की करधनी डाल रखी है। साथ में सफेद धोती के फेंटे में आम के पत्ते खोंश रखे हैं, नाचने के लिए पांव

में घुंघरू बांधे हुए हैं। इनका रंग सांवला है तथा थिरक-थिरक नाच रहे हैं। सभी गांव वाले बैठकर देख तथा सुन रहे हैं। इस तरह उपन्यास में आए लोगों के पहनावे का वर्णन किया गया है। यहां पर अपनी संस्कृति के अनुसार लोग त्योहारों को मनाते हुए दिखाएं हैं, उनकी वेशभूषा का जिक्र है। उनकी शक्ल-सूरत को भी व्याख्यायित किया है। उन्होंने पूरे तौर पर परंपरागत पहनावे को दिखाया है। अपनी संस्कृति का परिचय अपनी वेशभूषा से करवाया है। प्रत्येक क्षेत्र की वेशभूषा तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम ही सांस्कृतिक मूल्य के अंतर्गत आते हैं। बऊ ने दिबरियों को खील बताशा बांटा ताकि वह अपने घर को विदा ले सके। इस तरह उपन्यास के पात्र दिवाली मैया की भी पूजा करते हुए दिखाएं हैं "जै हो मोरी दिवारी मइया। ऐसे ही आओ, भरी-पूरी फिसे सोनपुरा के गली-कूंचन में गोंती दी डिकौली में, द्वारा झखनवारा में, नरसिंहगढ़ गोपालपुरा में डुड़ीखमा।"[89] बऊ ने ठाकुरद्वारे में माथा टेका, दिवाली मां को अगले साल फिर से खुशी-खुशी आने की प्रार्थना की। उन्होंने अपने लिए नहीं बल्कि पूरे सोनपुरा गांव के लिए खुशियां मांगी। पूजा तथा दिबरियों के नाच के बाद खाने-पीने का भी प्रबंध किया गया है। साग-सब्जियां तथा पूरियां बनी हुई हैं। सुबह से सभी गांव के लोगों ने खाने-पीने का प्रबंध किया है। सब गांव के लोग पंक्ति में बैठकर खाना खाते हैं। भंडारे की दावते बैठ रही हैं, गांव में लोगों ने पत्तलों पर पानी के छींटे मारकर उन्हें शुद्ध किया तथा सभी पात्र पंक्तियों में खाना खाते हुए दिख रहे हैं। इस तरह उपन्यास के लोगों के खानपान को भी दिखाया गया है। उनके रहन-सहन का भी वर्णन होता है। प्रत्येक प्रांत की अलग-अलग संस्कृति होती है। उपन्यास में सभी पात्रों के खानपान से गांव का दृश्य दिखाया है। वर्तमान समय में भी भंडारे का खानपान इसी तरह से दिया जाता है, सब छोटे-बड़े लोग पंक्ति में बैठकर ऐसे ही भोजन ग्रहण करते हैं। ऐसा करने से वहां के सांस्कृतिक भाईचारे का एक उदाहरण देखने को मिलता है। लोगों में आज भी अपने परंपरागत सांस्कृतिक मूल्यों को देखा जा सकता है। आज भी लोगों में सांस्कृतिक मूल्यों से प्रेम है। ऐसे ही उदाहरण वर्तमान समय में भी देखने को मिलते हैं तो वहां पर परंपरागत सांस्कृतिक मूल्य के विकास में वृद्धि होती है। सांस्कृतिक मूल्य में रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा आदि का जिक्र मिला है।

‘गुनाह बेगुनाह’ उपन्यास में स्वीटी नाम की स्त्री पात्र के विवाह की बात सामने आई है। स्वीटी प्रेम विवाह करना चाहती थी लेकिन दोनों की जाति आपस में मेल नहीं खाती हैं। स्वीटी ने भाग कर शादी कर ली तथा गांव में बात फैल जाती है कि दोनों को शादी करने के लिए गोत भी मिलाने चाहिए थे। उपन्यास में परंपरा से चली आ रही रीत के अनुसार शादी होने का जिक्र होता है। शादी करने के लिए लड़का-लड़की को अपनी दादी तक के गोतों को ध्यान में रखना पड़ता है "इतना आसान नहीं है लड़की के लिए शादी तै करने का हक पाना। दादी-नानी को मिलाकर पांच गोतों का ख्याल रखना पड़ता है, बेटा ।"[90] इला अपने गांव आई होती है तभी उसे पता चलता है कि स्वीटी ने भाग कर शादी कर ली है। इला की मां उसे अपने परंपरागत सांस्कृतिक मूल्यों के बारे में बताती है कि जब भी शादी तय होती है तो केवल पति का ही नहीं बल्कि पांच गोतों का भी ध्यान रखना पड़ता है। ऐसे रीति-रिवाजों को निभाना एक संस्कृति का सम्मान करना होता है। उपन्यास की युवा पीढ़ी इस सांस्कृतिक मूल्य को नजरअंदाज करती नज़र आई है। उपन्यास में हरियाणा के किसी क्षेत्र का ही वर्णन किया गया है, जिसमें लड़कियों को प्रेम विवाह करने की अनुमति नहीं है लेकिन ऐसे क्षेत्र में लड़की भाग कर शादी कर लेती है। इस तरह उपन्यास में परंपरा से चले आ रहे सांस्कृतिक मूल्यों का विघटन हुआ दिखाई देता है। उपन्यास की एक अन्य पात्र सुरेंद्र कौर की सिक्ख परंपरा से शादी होती है। सुरेंद्र कौर पेशे से पुलिस अधिकारी थी। सुरेंद्र कौर की अमृत सिंह नामक लड़के से विवाह होता है। विवाह में पूरी तरह रीति-रिवाजों को मनाया गया "फिर क्या था, दावते हुई। भांगड़ा हुआ, टप्पे गाए गए। शुभ मुहूर्त को सलाम किया हम दोनों ने। वाहेगुरु का मात्था टेका।"[91] इस तरह विवाह में खाने-पीने की पूरी व्यवस्था की गई थी, काफी लोगों को विवाह में शामिल किया गया था। विवाह की रौनक बढ़ाने के लिए भांगड़ा हुआ तथा टप्पे गाए गए। यहां पर पंजाब का लोक नृत्य भांगड़ा का जिक्र आया है, जिसे प्रत्येक सांस्कृतिक कार्यक्रम में किया जाता है। इसी का विवरण शादी में होता है। सिक्ख धर्म में शादी गुरु ग्रंथ साहिब के फेरे लेकर पूरी की जाती है जैसे हिंदू धर्म में अग्नि को साक्षी मानकर विवाह किया जाता है, उसी तरह सिक्ख धर्म में में गुरु ग्रंथ साहिब को साक्षी मानकर विवाह संपन्न किया जाता है। सुरेंद्र कौर तथा अमृत सिंह ने गुरु ग्रंथ को माथा टेका जिसे वाहेगुरु कहा जाता

है। इस तरह यहां पर अपने-अपने क्षेत्रों के सांस्कृतिक मूल्यों को दिखाया है, जिसका निर्वाह करना प्रत्येक व्यक्ति अपनी परंपरा मानता है। आज भी सिक्ख धर्म की यही परंपरा निभाई जाती है। इसी तरह विवाह का मुहूर्त संपन्न होता है। आज व्यक्ति चाहे विदेश में रहता है तो भी वह परंपरा को साथ लेकर चलता है। उसी संस्कृति के अनुसार धर्म को मानता है तथा वैवाहिक संस्कार पूरे किए जाते हैं। भारत की संस्कृति में इसी तरह की विविध रिवाज़ो के लोग मिलते हैं। सभी लोगों के अपने क्षेत्रों के अनुसार रहन-सहन, खान-पान तथा विवाह संबंधी मान्यताएं देखने को मिली हैं। इन्हीं सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर ही संस्कृति अपनी पहचान बनाती है। इन्हीं मूल्यों की चर्चा के आधार पर उपन्यास में विविध परंपरागत सांस्कृतिक मूल्य देखने को मिलते हैं।

उपन्यास में रक्षाबंधन त्योहार का वर्णन किया है। उपन्यास की नारी पात्र कम्मो की अपने भाई के साथ कुछ अनबन चल रही थी। राखी आने पर कम्मो के भाई ने उसको मना लिया तथा रक्षाबंधन पर कम्मो को आने के लिए कहा। कम्मो अपने मायके में पिता की संपत्ति में हिस्सा लेने की बात को लेकर उनके दिलों से उतर गई थी। "मगर त्यौहार लोकाचार तो अपने यहां संस्कृति का रूप है। परंपरा का सुंदर रूप इनसे ही दिखता है। राखी टीका करके मन में मैल भी धुलजाते हैं, यह मान्यता है। रूठे बिछड़े इसी बहाने मिल जाते हैं, लोगों का विचार है।"[92] उपन्यास में भी त्यौहारों को संस्कृति का रूप माना गया है। परंपरा के रूप में इस त्योहार को बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। त्योहारों को मनाने से पता चलता है कि हम अपनी संस्कृति के प्रति कितने विश्वास पात्र या कितने निष्ठावान हैं? यह त्योहार एक-दूसरे के प्रति हुए गुस्से को दूर करने के लिए एक अच्छा अवसर देते हैं। इन त्योहारों से मन में आए मैल को दूर किया जा सकता है, रूठे को मनाया जाता है यही भारतीय संस्कृति की मान्यता है। उपन्यास में भी त्यौहार के दिन कम्मो को बुलाया जाता है, उसे तथा भाई को मिलन का अवसर दिया गया। इस तरह त्योहार का वर्णन उपन्यास में देखकर परंपरागत सांस्कृतिक मूल्यों का चित्रण मिलता है। संस्कृति हमें बताती है कि त्योहारों में आपसी भाईचारे का कितना महत्व होता है? भाईचारे के बिना कोई भी त्यौहार उतने अच्छे से नहीं भाता जितना कि सभी संबंधों के साथ। उपन्यासों में त्योहारों के समय आने वाली दूरियों को खत्म करते हुए दिखाया है। वर्तमान

समय में भी राखी के दिन भाई-बहन के अटूट प्रेम को देखा जा सकता है। अगर कोई शिकवा भी होता है तो उसे त्योहार के दिन समाप्त कर दिया जाता है।

'अल्माकबूतरी' उपन्यास में भी होली के त्योहार का वर्णन किया गया है। कबूतरा लोग जो चोरी करके लाते हैं, उसी को पर्व-त्योहारों में खाया तथा बांटा जाता है। पूरा कबूतरा कबीला होली के त्यौहार को मनाता है। सभी कबूतरों ने मन बनाया था कि होली के दिन रोटी खाएंगे। "होली का अवसर कबूतरी, गुड़ महुआ भिगोकर खेतों में छिपा आई। होली तक अच्छा खमीर उठकर दारू ढल जाएगी। कमाई बिक्री की बात।"[93] कदमबाई ने होली के लिए शराब बनाने के लिए गुड़ तथा गेहूं को भिगोकर खेत में छुपा कर रख दिया था, यह सब तैयारी दारू बनाने के लिए की जा रही थी। दारू बनेगी तथा इसी दिन इसकी बिक्री होगी। उपन्यास में कबूतरा समाज की होली का चित्रण किया गया है। इन्होंने चोरी करके शराब के लिए अनाज इकट्ठा किया था, जिससे यह लोग अपनी जीविका कमाना चाहते हैं। प्रत्येक समाज के अपने-अपने रीति-रिवाज़ हैं, उसी के अनुसार यह होली मनाते हैं। आज भी प्रत्येक काबिले तथा समुदाय की अपनी मान्यताओं के अनुसार ही जीवनयापन किया जाता है। उपन्यास में होली के माध्यम से वहां के पात्रों के रहन-सहन तथा खान-पान को चित्रित किया गया है। यह जंगलों में डेरों में रहते हैं। उनका खान-पान भी जंगलों पर ही निर्भर है। वे जंगली जानवरों का शिकार करते हैं तथा उन्हीं से भोजन भी ग्रहण करते हैं। इसके अतिरिक्त उनका पेशा चोरी तथा लूटपाट करना ही है, फिर दूसरे समाज के लोगों के खेतों से अन्न की चोरी करके लाते हैं तथा वहीं से शराब निकाल कर बेचते हैं। इस तरह उपन्यास में एक कबूतरा समाज के पर्व-त्यौहार का वर्णन किया गया है।

'फ़रिश्ते निकले' उपन्यास में वेशभूषा से संबंधित तथ्य सामने आया है। प्रत्येक प्रांतीय क्षेत्रों की अपनी वेशभूषा होती है। वेशभूषा से ही उस संस्कृति के पहनावे का परिचय मिलता है। अपने-अपने राज्यों की पहचान ही उनके पहनावे से होती है। उपन्यास की एक स्त्री पात्र उजाला लोहापीटाओं की लड़की है। उजाला घाघरा ओढनी पहनती है। उजाला का दोस्त वीर उसे एक उपहार देता है जिसमें उजाला देखती है कि एक पोशाक है "मैं। मैं कैसे पहनूंगी सलवार कमीज? घागरा-ओढनी हमारे रिवाज में है।"[94] उजाला उपहार के पैकेट को खोल कर हैरान रह जाती है।

इस पैकेट में एक सलवार कमीज़ की पोशाक होती है। उजाला के रिवाज़ में सलवार कमीज़ नहीं पहनी जाती इसीलिए वह इस पोशाक को पहनने से मना करती है। वह अपने रिवाज़ के विरुद्ध होकर कपड़े नहीं पहनना चाहती। यहां पर लेखिका ने अपनी परंपरा में रहने की बात सामने रखी है। उजाला अपनी परंपरा के बाहर जाना अपने सांस्कृतिक मूल्यों को अनदेखा करना मानती है। उजाला का मानना है कि अगर वह इस तरह के कपड़े पहनेगी तो अपने समाज के एतराज़ की निशानी बन जाएगी।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि सांस्कृतिक मूल्य व्यक्ति को अपने समाज तथा संस्कृति से जोड़ने का कार्य करते हैं। यह व्यक्ति को सभ्य, सुचेत तथा सुसंस्कृत बनाते हैं। लेखिका के उपन्यास साहित्य में पात्र धार्मिक प्रवृत्ति के पाए गए हैं तथा प्रत्येक की ईश्वरीय आस्था देखने को मिलती है। पात्रो ने अपने सास-ससुर की ही सेवा को अपना धर्म माना है। इसके अतिरिक्त उपन्यासों में विविध रीति-रिवाजों से संबंधित लोक गीत गाए गए हैं जो कि वहां की परंपरागत संस्कृति को व्यक्त करते हैं। विविध परंपरागत उत्सवों, पहनावे, रहन-सहन, खान-पान आदि पर भी प्रकाश डाला गया है। लेखिका ने यह भी बताया कि क्षेत्रों में क्या-क्या खान-पान संबंधित बातें रहती हैं? लोगों की भोजन श्रृंखला को भी बताया है। लेखिका के उपन्यासों का मुख्य उद्देश्य ऐसे समाज का निर्माण करना है जहां पर हम अपनी संस्कृति को सर्वोत्तम बनाने का प्रयास करें। तभी भारतीय लोग अपनी संस्कृति से जुड़े रह सकते हैं।

संदर्भ सूची:-

1. बैजनाथ सिंहल, नई कविता मूल्य मीमांसा, पृ.101
2.जगदेव कुमार, मतिराम सतसई में समाज और संस्कृति, पृ.26
3.डॉ. शोभा, अमृतलाल नागर के उपन्यासों में सामाजिक चेतना, पृ.92
4.रामबिहारी सिंह तोमर, समाजशास्त्र की रूपरेखा, पृ.583
5.मैत्रेयी पुष्पा, बेतवा बहती रही, पृ.42
6.शैलेंद्र सागर, ब्रंच तथा अन्य कहानियां, पृ.22
7.मैत्रेयी पुष्पा, बेतवा बहती रही, पृ.48
8.वही, पृ.103
9.मैत्रेयी पुष्पा, इदन्नमम, पृ.12
10.वही, पृ.84
11.वही, पृ.89
12.वही, पृ.121
13.वही, पृ.121
14.वही, पृ.185
15.वही, पृ.313
16.मैत्रेयी पुष्पा, चाक, पृ.45
17.वही, पृ.53
18.वही, पृ.61
19. मैत्रेयी पुष्पा, झुलानट, पृ.42
20.वही, पृ.43
21.वही, पृ.46
22.मैत्रेयी पुष्पा, अल्माकबूतरी, पृ.63
23.वही, पृ.118
24.वही, पृ.174
25.वही, पृ.219
26.वही, पृ.273
27.वही,पृ.291
28.मैत्रेयी पुष्पा, अगनपाखी, पृ.57

29.वही, पृ.69
30.वही, पृ.70
31.वही, पृ.118
32.मैत्रेयी पुष्पा, विज़न, पृ.51
33.वही, पृ.60
34.वही, पृ.111
35.वही, पृ.111
36.वही, पृ.166
37.मैत्रेयी पुष्पा, त्रियाहठ, पृ.22
38.वही, पृ.36
39.वही, पृ.34
40.शैलेंद्र सागर, ब्रंच तथा अन्य कहानियां, पृ. 68
41.मैत्रेयी पुष्पा, त्रियाहठ, पृ.37
42.मैत्रेयी पुष्पा, कही ईसुरी फाग, पृ.43
34.मैत्रेयी पुष्पा, विज़न, पृ.111
35.वही
43.मैत्रेयी पुष्पा, कही ईसुरी फाग, पृ.72
44.वही, पृ.121
45.वही, पृ.200
46.मैत्रेयी पुष्पा, फ़रिश्ते निकले, पृ.209
47.मैत्रेयी पुष्पा, झूलानट, पृ.57
48.मैत्रेयी पुष्पा, इदन्नमम, पृ.23
49.वही, पृ.162
50.मैत्रेयी पुष्पा, अल्माकबूतरी,पृ.53
51.मैत्रेयी पुष्पा, इदन्नमम, पृ.60
52.मैत्रेयी पुष्पा, अगनपाखी, पृ.94
53.निलय उपाध्याय, पहाड़, पृ.13
54.मैत्रेयी पुष्पा, चाक, पृ.63
55.शिवप्रसाद सिंह, वैश्वानर, पृ.73

56.मैत्रेयी पुष्पा, चाक, पृ.63
57.मैत्रेयी पुष्पा, अल्माकबूतरी, पृ.50
58.मल्टिना टोप्पो, हिंदी के आंचलिक उपन्यासों की सांस्कृतिक चेतना, पृ.34
59.डॉ.धीरेंद्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश, पृ.801
60.मैत्रेयी पुष्पा, बेतवा बहती रही, पृ.42
61.वही, पृ.49
62.वही, पृ.50
63.मैत्रेयी पुष्पा, इदन्नमम, पृ.39
64.वही, पृ.120
65.वही, पृ.122
66.वही, पृ.123
67.वही, पृ.132
68.मैत्रेयी पुष्पा, अगनपाखी, पृ.24
69.वही, पृ.78
70.वही, पृ.79
71.वही, पृ.143
72.वही, पृ.125
73.मैत्रेयी पुष्पा, चाक, पृ.356
74.वही, पृ.373
75.वही, पृ.11
76.वही, पृ.13-14
77.वही, पृ.107
78.वही, पृ.108
79.वही, पृ.207
80.मैत्रेयी पुष्पा, कही ईसुरी फाग, पृ.155
81.मैत्रेयी पुष्पा, फ़रिश्ते निकले, पृ.39
82.मैत्रेयी पुष्पा, अल्माकबूतरी, पृ.42
83. मैत्रेयी पुष्पा, कही ईसुरी फाग, पृ.33
84.मैत्रेयी पुष्पा, बेतवा बहती रही, पृ.75

85.वही., पृ.89
86.मैत्रेयी पुष्पा, इदन्नमम, पृ.134
87.वही, पृ.147
88.वही, पृ.358
89.वही, पृ.359
90.मैत्रेयी पुष्पा, गुनाह बेगुनाह, पृ.167
91.वही, पृ.205
92.वही, पृ.218
93.मैत्रेयी पुष्पा, अल्माकबूतरी, पृ.41
94.मैत्रेयी पुष्पा, फ़रिश्ते निकले, पृ.163